



विद्या प्रसारक मंडळ  
स्थापना नौपाडा ठाणे १९३५

विद्या प्रसारक मंडळ, ठाणे

पुस्तकाचे नाव	:	प्राकृतानन्द
संपादक	:	पुरातावाचार्य मुनि जिनविजय
प्रकाशक	:	जोधपुर : संचालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
प्रकाशन वर्ष	:	१९६२
पृष्ठे	:	१०७ पृष्ठे

गणपुस्तक

विद्या प्रसारक मंडळाच्या

“ग्रंथालय” प्रकल्पांतर्गत निर्मिती

गणपुस्तक निर्मिती वर्ष : २०१४

गणपुस्तक क्रमांक : ५०

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

## प्राकृतानन्द



प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

## प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन  
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध  
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

पद्येन सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर  
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी;  
निवृत्त सम्मान्य नियामक ( ऑनरेरि डायरेक्टर ),  
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,  
सिन्धी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

## प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानसार

सञ्चालक. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

# प्राकृतानन्द

सम्पादक,  
पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय

प्रकाशनकर्ता  
राजस्थान राज्याज्ञानुसार  
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान  
जोधपुर ( राजस्थान )

विक्रमाब्द २०१८ { भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ } ख्रिस्ताब्द १९६२  
प्रथमावृत्ति ७५०

---

मुद्रक-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई  
मुख पृष्ठ आदि के मुद्रक-श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

प्रधान सम्पादक  
पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य  
द्वारा सम्पादित ग्रन्थ

- १ त्रिपुराभारती लघुस्तव — कर्ता-सिद्धसारस्वत श्री नघुपण्डित
- २ कर्णामृतप्रपा — कर्ता-महाकवि ठक्कुर सोमेश्वर
- ३ बालशिक्षा व्याकरण — कर्ता-ठक्कुर संग्रामसिंह
- ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा — कर्ता-पं० कृष्णमिश्र
- ५ शकुनप्रदीप — कर्ता-पं० लावण्य शर्मा
- ६ उक्तिरत्नाकर — कर्ता-पं० साधुसुन्दरगणी
- ७ प्राकृतानन्द — कर्ता-रघुनाथ कवि
- ८ हम्मीरमहाकाव्य — कर्ता-नयचन्द्र सूरि
- ९ राठौड़ांरी वंशावली
- १० सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची
- ११ भीरां वृहत् पदावली
- १२ रत्नगरीक्षादि सप्त ग्रन्थ संग्रह — कर्ता-ठक्कुर फेरू



## विषयविवरणम्

—००००००—

१-प्रास्ताविकं वक्तव्यम्	१-३
२-प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका	४-१२
३-प्राकृतानन्द-प्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका	१३-१७
प्रथमे परिच्छेदे	
४-अजन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्	१-१८
५-अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	१९-२३
६-अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	२३-२७
७-हलन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्	२७-३३
८-हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	३४ वां
९-हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	”
१०-निपाताधिकारः	३५-३७
द्वितीये परिच्छेदे	
११-धातुप्रकरणम्	३८-५२
परिशिष्टम्	
क-प्राकृतशब्दानुक्रमणिका	५३-७६

२१७

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' ग्रन्थ प्राकृत भाषा का एक संक्षिप्त व्याकरण है। इसकी रचना पंडित रघुनाथ ने की है जो कवि-कण्ठीरव के विरुद्ध से अपने आपको उल्लिखित करते हैं। ये ज्योतिर्विद् सरस के पुत्र थे। इसके अतिरिक्त इनके समय और स्थान आदि के बारे में कुछ उल्लेख नहीं मिलता। इस ग्रंथ की एक पुरानी हस्तलिखित पोथी विद्वद्द्वय आगमप्रभाकर मुनिराज श्री पुण्य-विजयजी महाराज की शायद बीकानेर में मिली थी। जिस पर से उन्होंने स्वयं इसकी प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जैसा कि इसके अन्त में लिखा मिलता है— संवत् १७२६ में लाभपुर अर्थात् लाहोर में लिखी गई थी। सन् १९५२ में जब मेरा बीकानेर जाना हुआ तो उन्होंने यह ग्रन्थ मुझे दिखलाया। मैंने इसे राज-स्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया तो उक्त सौजन्य-मूर्ति मुनिवर ने अपनी वह प्रतिलिपि बड़े आनन्द के साथ मुझे दे दी। मैंने उसको छपने के लिये बम्बई के निर्णय सागर प्रेस में दी। दीर्घकाल-वधि में यह ग्रन्थ प्रेस ने छाप कर पूरा किया। कुछ अन्यान्य कारणों से भी ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होता रहा। इस तरह प्रतिलिपि के प्राप्त होने के बाद कोई १० वर्ष अनन्तर अब यह ग्रन्थ पाठकों के कर-कमलों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

'प्राकृतानन्द' प्राकृत भाषा का एक छोटा-सा व्याकरण है। ग्रन्थकार का कहना है कि जो पण्डित के कुल में पैदा हुआ है परन्तु अल्पबुद्धि है और कुछ साहित्य का रसास्वाद करना चाहता है उसके ज्ञान के लिये यह प्रयत्न किया गया है। संस्कृत की तरह प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति बहुत ही विशाल है। विविध विषय के हजारों ही ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि ब्राह्मण-सम्प्रदाय में प्राकृत साहित्य का उतना अधिक संघन नहीं मिलता है, परन्तु जैन और बौद्ध संप्रदाय में प्राकृत भाषा ही का प्राधान्य रहा और इसलिये इन दोनों संप्रदायों में इस भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति की विशालता बहुत अधिक है। बौद्ध साहित्य की प्राकृत भाषा जो कि मूल रूप में 'मागधी' भाषा कहलाती है, अब 'पाली' के नाम से प्रसिद्ध हो गई है। परन्तु जैन साहित्य-संपत्ति मुख्य रूप से प्राकृत के व्यापक नाम से ही प्रसिद्धि प्राप्त करती रही है। भाषा-विदों ने जैन साहित्य की प्राकृत भाषा को 'अर्द्धमागधी'



और 'महाराष्ट्री' प्राकृत के नाम से विभक्त किया है। प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी संमिश्रित है और बाकी का सारा साहित्य प्रायः 'महाराष्ट्री' और 'शौरसेनी' संमिश्रित है। जैन सम्प्रदाय का मौलिक वाङ्मय प्रायः सारा इसी प्रकार की प्राकृत भाषा का अपूर्व भंडार है।

द्रविड़ जाति के भारतीय जन-समूहों की द्रविड़कुलीन भाषाओं के अतिरिक्त समग्र आर्य जातीय जन-समूह की जो विद्यमान भाषायें हैं उनकी उत्पत्ति इस मूल पुगaten प्राकृत से है। शाक्य भगवान् बुद्ध और ज्ञात पुत्र तीर्थंकर महावीर के समय से लेकर वर्तमान काल तक की आर्य-भाषाभाषी व भारतीय जनता की मातृ-भाषा प्राकृत के नाम से संबोधित की जाती रही है। वह प्राचीन प्राकृत अब अनेक उपभाषाओं और देश-विशेष की बोलियों में विभक्त हो गई है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है जैन संप्रदाय का सारा ही मौलिक साहित्य प्राकृत में है। कई ब्राह्मण विद्वानों ने भी प्राकृत भाषा में कुछ विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें काव्य और नाटक ग्रंथ मुख्य हैं। गौडवहो, सेतुबन्ध, लीलावई, गाथा सत्तसई आदि उत्कृष्ट प्राकृत काव्यकृतियां हैं जो ब्राह्मण विद्वानों की देन हैं। इसी तरह कर्पूरमंजरी आदि अनेक नाटक कृतियां भी प्राकृत के प्रभाव को प्रकट करती हैं।

जिस तरह संस्कृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनी आदि अनेक प्राचीन-अर्वाचीन विद्वानों ने नाना प्रकार के व्याकरण-ग्रन्थों की रचनायें की हैं उसी तरह प्राकृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से वररुचि आदि अनेक विद्वानों ने प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों की रचनायें की हैं। यों तो प्राकृत भाषा के बीसों छोटे-बड़े व्याकरण-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं पर उनमें वररुचि का 'प्राकृत-प्रकाश' सब से प्राचीन ग्रन्थ समझा जाता है। प्राकृत-भाषा का सर्वोच्च संपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ हेमचन्द्र सूरि का है जो उनके महान् व्याकरण ग्रन्थ 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' का अष्टम अध्याय स्वरूप है। इस महान् व्याकरण ग्रन्थ के सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण ग्रन्थित है और अष्टम अध्याय में प्राकृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण है। इसमें प्राकृतोत्तरकालीन अपभ्रंश भाषा का भी विस्तृत व्याकरण है जो उनका मौलिक देन है। हेमचन्द्र सूरि के बाद अनेक छोटे-बड़े प्राकृत व्याकरण बनते रहे और उनमें से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भी हो गये हैं।

वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' हेमचन्द्रसूरि के 'प्राकृत व्याकरण' की अपेक्षा

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' का ही एक प्रसिद्ध संकलन है। संस्कृत के लघुकौमुदी आदि प्रक्रियात्मक शैली के अनुकरण साथ कवि ने 'प्राकृत-प्रकाश' को इस प्रकार प्रक्रियात्मक रूप देकर इस प्राकृत का संकलन किया है। इसमें कुल ४१६ सूत्र हैं, इससे मालूम देता है 'प्राकृत-प्रकाश' के कुछ सूत्र छोड़ भी दिये हैं। पर, साथ में कुछ ऐसे दिये हैं जो 'प्राकृत-प्रकाश' की प्रसिद्ध पुस्तक में नहीं मिलते। चौखम्भाग्रन्थ भामहकृत मनोरमाव्याख्या सहित जो प्राकृत प्रकाश छपा है उसमें कुल ४१६ सूत्र हैं जिनमें के ८७ सूत्र इस प्राकृतानन्द में नहीं हैं; और साथ में इसमें २१ सूत्र हैं जो प्राकृत-प्रकाश में नहीं मिलते। तुलना की दृष्टि से दोनों ग्रन्थों की सूचि इसके साथ दी जाती है। संशोधक विद्वानों को इसका कुछ उपयोग मुद्रित प्राकृत-प्रकाश के और प्राकृतानन्द के सूत्रों में कुछ पाठ-भेद गोचर होते हैं। लिपिकर्ताओं के कारण ऐसे पाठ-भेदों का होना स्वाभाविक

यह ग्रंथ अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। ऑफ़ट ने इसका सूचन 'कॅटेलागस कॅटलॉगरम्' भा. १; पृ. ३६१ पर किया है। इसका नाम सूचीकार को लाहोर के पण्डित राधाकृष्ण के 'पुस्तकानां' में मिला है, जो काश्मीर-निवासी पं० राजाराम शास्त्री ने लिखा था और टिक सोसाइटी बंगाल के प्रोसीडिंग्स, जून १८८० ई. में इसका उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक की प्रेस-कॉपी जिस प्रति से तैयार की गई है वह भी इस वि में लाहोर में ही लिखी गई थी।

सौजन्यमूर्ति विद्वद्रत्न मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराज के प्रति हार्दिक कृतज्ञभाव प्रकट करते हैं कि जिन्होंने स्वयं अपने हस्ताक्षर रचना की सुन्दर प्रेस कॉपी कर के हमको राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला देने के लिये प्रदान की। प्रेस की कठिनाई के कारण इसके प्रूफ कार्य कार्यालय द्वारा ही किया गया अतः कुछ अशुद्धियाँ भी विद्वज्जन उसे स्वयं शुद्ध कर लेंगे, ऐसी विज्ञप्ति के साथ कवि रघुनाथ ग्रन्थ के प्रारंभ में इस विषय में जो बहुत ही सुन्दर उक्ति प्रकट की है हम भी यहाँ पुनः उद्धृत कर देना चाहते हैं।

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ।  
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ॥

—मुनि

जोधपुर

दि० २५-६-६३

## प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका



श्लो.	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
अइ वले सम्भाषणे	३००	३५
अंकोटे ललः	२००	२५
अः श्मा-श्लाघयोः	१७२	२१
अश्यादिषु छः	११८	१४
अचि मरुच	३	१
अज्ज ग्रामत्तरणे	३०६	३६
अत आ मिपि वा	३२६	३६
अत ए से	३१८	३८
अत ओत् सोः	८	२
अतोऽमः	१५	३
अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु	१६५	२०
अदयो दो गुः	२८१	३३
अदातो यथादिषु वा	४५	६
अद् दुकुले वा लस्य द्वित्वम्	१८६	२४
अधो म-न-गाम्	४०	५
अन्मुकुटादिषु	५८	७
अन्त्यस्य हलः	२६	४
अपी छिवः	३०६	३६
अमि ह्रस्वः	१५८	१६
अम्हे जम्-शरोः	२६७	३२
अम्हेहिनी अम्हेमुत्तोभ्यसि	२७४	३३
अम्हेहि गिरि	२७२	३२
अम्हेसु सुपि	२७८	३३
असुवतस्य रिः	६५	८
अन्नादि निवारणे	२६६	३५
अवाद् भादेर्वादिः	३५३	४३
अवधो अम्पो दुःखा-ऽऽशेष-विस्मापनेषु	३०१	३५
अवधो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु	२६८	३५
असेर्लोपिः	३७१	४५
अस्तेरासिः	३७३	४६

क्रमाङ्कः	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३२ अस्मदो ह्रमहमह्यं सौ	२६५	३२
३३ अहम्मिरमि च	२६६	३२
३४ आङि च ते वे	२५६	३१
३५ आङि मे ममाई	२७०	३२
३६ आङो ज्ञादेशस्य	१७०	२१
३७ आच्य गौरवे	१६७	२५
३८ आच्च सी	१५५	१८
३९ आ णो-णमोरङ्सि	२३२	२८
४० आत्मनो अप्पाणो वा	२३६	२६
४१ आदीतौ बहुलम्	१७४	२१
४२ आदेशतः	२७	४
४३ आदेर्यो जः	३६	५
४४ आपीडे म	५३	७
४५ आमः एसि	२२३	२७
४६ आमन्त्रणे वा विन्दुः	२३३	२८
४७ आसि सि	२४६	३०
४८ आमो णं	३२८	२६
४९ आम्र-ताम्रयोर्वः	२०८	२६
५० आलाने न लोः	२१४	२६
५१ आत्विबल्लोलालवत्तोत्ता मतुपः	३१४	३७
५२ आवे च	४०२	४६
५३ आ समृद्ध्यादिषु वा	४३	६
५४ आहे इआ काले	२५५	२७
५५ इअं भूते	३२६	३६
५६ इच्च बहुषु	३२७	३६
५७ इज्जस्-शसोर्दोर्बश्च	१८५	२३
५८ इट्-मयोर्मिः	३२५	३६
५९ इत् एत् पिण्डसमेपु	१२१	१४
६० इतेस्तः पदादेः	३११	३६
६१ इत् पुण्ये रोः	६४	८
६२ इत् सैन्धवे	१६४	२८
६३ इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे	२४०	२६
६४ इदद्वित्वे	२३७	२६
६५ इदम इमः	२२६	२८
६६ इत्तम इत्तम इत्तम इत्तम वा	२२०	२७

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
६७ इदीपत्-पक्व-स्वप्न-वेतस-व्यञ्जन-मृदङ्गाऽङ्गरेषु २८		४
६८ इदुतोः शसो शो	१४०A	१७
६९ इद् ईतः पानीयादिषु	५१	७
७० इद् ऋष्यादिषु	४८	६
७१ इद्भ्यः स्सा-से	२८५	३४
७२ इर-किर-किला अनिशिचत्ताख्याने	२९३	३५
७३ इवे ववः	३०८	३६
७४ ईग्र भूते	३२८	३९
७५ ईत् सिंह-जिह्वयोश्च	५०	७
७६ ईत् स्त्रियाम्	४१९	५२
७७ ईदुतोर्ह्यः	१७७	२२
७८ ईद् धैर्ये	१९५	२४
७९ उत ओत् तुण्डरूपेषु	५५	७
८० उत्तमे स्सा हा च	३३५	४०
८१ उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा	८६	११
८२ उत्तमोर्लः	३४३	४३
८३ उत् सौन्दर्यादिषु	७६	९
८४ उदुम्बरे दोर्लोपः	२०९	२६
८५ उदुम्बले द्वा वा	१८७	२३
८६ उदुतो मधुके	१८८	२३
८७ उदो विजः	३७९	४६
८८ उद् ऋत्वादिषु	२९	४
८९ उद्धमो धूमा	३६३	४४
९० उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम्	३६	५
९१ उः पद्म-तन्वीसमेषु	१७९	२२
९२ उर्जस्-शस्-टा-ङ्स्-सुप्सु वा	१५३	१८
९३ उलूहले ल्वा वा	१८७A	२३
९४ उ-सु-मु-विध्यादिष्वेकस्मिन्	३३१	३९
९५ ऋत आरः सुपि	१५२	१८
९६ ऋतोऽत्	१२०	१४
९७ ऋतोऽरः	३६५	४४
९८ ऋत्वादिषु तो दः	६२	८
९९ एकाचो हीश्र	३२०	३९
१०० ए च सुप्यङि-ङसोः	१४	२
१०१ एच्च क्त्वा तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु	३३४	४०

कमाङ्कः	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१०२ एत इद् वेदना-देवरयोः	६८	६
१०३ एतदः सात्वोत्वं वा	२४७	३०
१०४ एत् नीडा-SSपीड-कीदृगीदृशेषु	५२	७
१०५ एन्नपुरे	१६०	२४
१०६ ए भ्यसि	१४३	१७
१०७ ए शय्यादिषु	४१	५
१०८ एषामामो णं	१४८	१७
११० ऐत एत्	६६	६
१११ एरावते च	८२	१०
११२ ओ च द्विधा कृजः	३१२	३७
११३ ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः	७२	६
११४ ओदवा-ऽपयोः	३१०	३६
११५ ओ बदरे देन	१८६	२३
११६ ओ सूचना-पश्चाताप-विकल्पेषु	२६२	३५
११७ ओत्, ओत्	७३	६
११८ क-ग-य-ज-त-प-य-वां प्राप्नो लोः	१०	२
११९ कवधे वो मः	८७	११
१२० कार्पाणो	१२४	१४
१२१ कालायमे यस्य वा	२१०	२६
१२२ काशेर्वासः	३५१	४३
१२३ किं-यत्-तद्भ्यो ङस आसः	२२२	२१
१२४ किणो प्रश्ने	२६७	३५
१२५ किमः कः	२१६	२७
१२६ किगते चः	६१	८
१२७ कुब्जे खः	६३	११
१२८ कृजः का भूत-भविष्यतोश्च	३६५	४८
१२९ कृजः कुणो वा	३६४	४८
१३० कृ-दा-धु-वृ-गमि-रुदि-इशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं	३६७	४४
१३१ कृणो वा	१३३	१५
१३२ कैटभे वः	६०	११
१३३ कौशले वः	७५	६
१३४ क्ते	४१२	५१
१३५ क्ते तुरः	४११	५१

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
३७ वते :	१०	५१
३८ वत्त ऊरण :	४१५	५१
३९ वमस्य	१८१	२३
४० क्रीज : किरण :	३९६	४८
४१ ऋधेभूर :	३८५	४७
४२ क्विण्ट-ट्रिलिण्ट-रत्न-क्रिया-शास्त्रेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य	१७१	२
४३ क्वचिद् असि डचोर्लोपः	२३	३
४४ क्वचिद् गुवतस्यापि	५४	७
४५ क्वथेर्द्धः	३५८	४३
४६ क्षमा-वक्ष-क्षरणेषु वा	६७	८
४७ क्षियोभिज्जः	३४०	४१
४८ ख-घ-थ-ध-भा-हः	५६	७
४९ खादि-धाव्योः खा-धी	३३६	४१
५० गङ्गदे २ः	८४	१०
५१ गमादीनां द्वित्वं वा	४०५	५०
५२ गर्तडः	११७	१३
५३ गर्भिते एणः	८०	१०
५४ गृहे घरोऽपती	२१२	२६
५५ ग्रमेविसः	३५२	४३
५६ ग्रहे दीर्घो वा	४०३	५१
५७ ग्रहेर्गोहः	४००	४६
५८ घुणो घोळः	३४८	४२
५९ घे बत्वा-तुमुन् तव्येषु	४१६	५१
६० असश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च	२३६	२६
६१ असो से	२४५	३०
६२ असि तुमो-तुह-तुज्भ-तुम्ह-तुम्भा	२६१	३१
६३ असोः आ-दी-दु-ह्यः	२०	३
६४ असो वा	१४४	१७
६५ अमा वा	१६२	१६
६६ असौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि	२५६	३१
६७ डे ए म्मी	२२	३
६८ डेहि	२२४	२७
६९ डेसि-म्मि-तथाः	१३६	१६

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
१७१ डौ तुमम्मि	२६२	३२
१७२ चतुरश्चत्तारो चत्तारि	२१८	२७
१७३ चतुर्थी-चतुर्दश्यो स्तुता	१७८	२२
१७४ चतुर्थ्याः षष्ठी	१८	३
१७५ चन्द्रिकायां मः	१६७	२०
१७६ चिञ्च चैञ्च अवधारणे	२६१	३५
१७७ चिञ्चिचिञ्चः	३८६	४७
१७८ चिन्हे धः	२०५	२५
१७९ च्चो व्रज-नृत्योः	३४१	४१
१८० चौर्यसमेषु रिञ्चं	२०२	२५
१८१ छायायां हः	१६८	२०
१८२ जल्पेलो मः	३४७	४२
१८३ जस् शस्-ङ्सि-आम्सु दीर्घः	१३	२
१८४ जस्-शस्-ङ्सो णो	२३१	२८
१८५ जस्-शसोर्लोपः	१२	२
१८६ जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०	१६
१८७ जस ओश्च यूत्वम्	१३६	१६
१८८ जसो वा	१५७	१६
१८९ जिघ्रतेः पा-पाञ्चौ	३६२	४४
१९० ज्भो जंभाञ्च	३४६	४२
१९१ ज्ञो जाण-मुणौ	३६८	४६
१९२ ज्ञो णज्ज-णब्बो वा	३०८	५०
१९३ ज्यायामीत्	१७३	२१
१९४ ऋथि तद्धर्गान्तः	७	२
१९५ टाऽऽमोर्णः	१६	३
१९६ टा-ङस्-ङीनामिदेवदातः	१६०	१६
१९७ टा-ङ्योस्तद् तए तुमए तुए	२५५	३१
१९८ टा णा	१४१	१७
१९९ टा णा	२३५	२८
२०० टो ङः	८८	११
२०१ ठा-भा-गाश्च-वर्तमान-भविष्यद्-विध्याद्येकवचनेषु	३६१	४३
२२० ठो ङः	१६६	२५
२०३ डस्य च	१६८	२५
२०४ णवरः केवले	२६५	३५
२०५ णवरि आनन्तर्ये	२६६	३५



क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
२०६ एवि वैपरीत्ये	३०२	३६
२०७ गिच एदादेरत आत्	४०१	४६
२०८ गुदेर्लोराः	३८६	४७
२०९ रो शसि	२६६	३२
२१० स्रं वाऽमि	२५३	३०
२११ तद ओश्च	२४४	३०
२१२ तदेतदोः सः सावनपुंसके	२४३	३०
२१३ तल् त्वयोर्दा-त्तर्णा	३१३	३७
२१४ तालवृन्ते णः	२०७	२६
२१५ तिणिण जस्-शस्-भ्याम्	१४६	१८
२१६ तुज्भे तुम्हे जसि	२५२	३०
२१७ तुज्भेसु तुम्हेसु सुपि	२६४	३२
२१८ तुज्भेहि तुम्हेहि तुम्भेहि भिसि	२५८	३१
२१९ तुमाइ च	२५७	३१
२२० तुम्हाहितो तुम्हासुतो भ्यसि	२६०	३१
२२१ तूर्य-धैर्य-सौन्दर्य-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः	१६६	२४
२२२ तून इरः शीले	४१७	५१
२२३ तृपस्थिम्पः	३६१	४८
२२४ ते तिपोरिदेतो	३१७	३८
२२५ त्तो डसेः	२४८	३०
२२६ त्तो-त्थयोस्तो लोपः	२४६	३०
२२७ त्तो दो डसेः	२२१	२७
२२८ तय-थ्य-द्यां कच-कछ-ज्जाः	७१	६
२२९ त्रसेर्वज्जः	३८०	४६
२३० त्रस्ती	१५०	१८
२३१ त्वरस्तुवरः	३५६	४३
२३२ थास्-सिपोः सि से	३२४	३६
२३३ वशादिषु हः	१००	१४
२३४ दाढादयो बहुलम्	२१५	२६
२३५ दिक्-प्र वृषोः सः	२८०	३३
२३६ दिवसे सस्य	१०३	१२
२३७ दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ-वब्भा	४०७	५०
२३८ दूडो दूमः	३८१	४७
२३९ दृशोः पुलञ्ज-शिञ्जक-अववखाः	३६८	४५

क्रमाङ्क	सूत्रा	पृष्ठाङ्क
२४१	दैवे वा	१६२ २४
२४२	दोला-दण्ड-दशनेपु डः	६४ ११
२४३	दोहवे एणः	६७ ११
२४४	द्वे रो वा	१०४ १२
२४५	द्विवचनस्य बहुवचनम्	११ २
२४६	द्वेदुवे दोणि वा	१४६ १७
२४७	द्वेदो	१४७ १७
२४८	धातोर्भविष्यति हिः	३३३ ४१
२४९	ध्य-ह्योर्भः	१०७ १२
२५०	न डि-ङस्थोरेदातौ	१४२ १७
२५१	नगोर्हलि	४ १
२५२	न तथः	२२६ २८
२५३	न धृत्तदिषु	११६ १३
२५४	न नपुंसके	२१६ २६
२५५	नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो	२८७ ३४
२५६	न बिन्दु परे	१३० १५
२५७	न र-होः	११४ १३
२५८	न विद्युति	२८ २४
२५९	न शिरो-नभसी	२८८ ३४
२६०	न-सान्त-प्राष्ट-शरदः पुसि	२४२ २६
२६१	न स्तम्भे	१०६ १३
२६२	नाऽऽतोऽदातौ	१६१ १६
२६३	नाऽऽमन्णे सावोत्व-दीर्घत्व बिन्दवः	२५ ४
२६४	नानेकाचः	३२२ ३८
२६५	निपाताः	२८६ ३५
२६६	निरो माङो माणः	३७७ ४६
२६७	नीडादिषु च	१६३ २४
२६८	नो एणः सर्वत्र	६ २
२६९	नोत्सुकोत्सवयोः	१२६ १४
२७०	न्त-माणौ शतृ-शानचोः	४१८ ५२
२७१	न्ति-हेत्था मो-मु-मा बहुषु	३२३ ३८
२७२	न्तु ह मो बहुषु	३३२ ३६
२७३	न्मो म्मः	६६ ११
२७४	पटेः फलः	३४५ ४२
२७५	पत्तने	२०४ २५

२७६	पदस्य	२५०	३०
२७७	पदः पालः	३८२	४७
२७८	परुष-परिघ-परिखासु फः	६३	८
२७९	पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु लः	२०३	२५
२८०	पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः	१५४	१८
२८१	पृष्ठा-ऽक्षि प्रश्नाः स्त्रियां दा	१५६	१९
२८२	पो वः	८५	१०
२८३	पौरादिष्वउः	७४	९
२८४	प्रतिसर-वेतस-पताकासु ङः	३३	५
२८५	प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः	६२	११
२८६	प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः	८३	१०
२८७	प्रादेर्भवः	३३९	४१
२८८	प्रादेर्मलः	३४९	४२
२८९	फो भः	६१	११
२९०	बा०पेऽधुणि हः	१२३	१४
२९१	बिसिन्यां भः	१८०	२२
२९२	बुड-खुप्पी मस्जेः	३९०	४८
२९३	बृहस्पती ब-होर्भ-श्री	१४५	१७
२९४	ब्रह्माद्या आत्मवत्	२४१	२९
२९५	भाव-कर्मणोर्वश्च	४०४	५०
२९६	भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः	६९३	४८
२९७	भिन्दिपाले ण्डः	१२८	१५
२९८	भियो भा-बीही	३७६	४६
२९९	भिसो हि	१७	३
३००	भुजादीनां वत्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः	४१४	५१
३०१	भुवो हो-हुवौ	३१६	३८
३०२	भ्यसो हितो सुत्तो	२१	३
३०३	मं ममं	२६८	३२
३०४	मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि	२७६	३३
३०५	मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि इसी	२७३	३२
३०६	मध्या-हं हस्य	१०६	१२
३०७	मध्ये च	३२१	३८
३०८	मम्मथे वः	६५	११
३०९	मममि डौ	२७७	३३
३१०	मयूर-मयूख-योर्ध्वा वा	४२	६

क्रमाङ्कः	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३१३	मातुरात्	१८२
३१४	मिना स्सं वा	३३६
३१५	मि-मो-मु-मानामधो ह्रस्व	३७२
३१६	मृजेर्लुभ-पुसौ	३७४
३१७	मृदो लः	३८६
३१८	मे मम मह मञ्ज डसि	२७५
३१९	मो विन्दुः	२
३२०	मो-मु मैहि-स्सा-हित्या	३३७
३२१	मन-ज्ञ-पञ्चाशत् पञ्चदशेषु णः	१२७
३२२	म्मि-मि-वि-वि-इ-वार्थे	३०५
३२३	म्लै वा-वा-व्री	३५६
३२४	मक ई-इ-जौ	४०३
३२५	यमुनाया मस्य	१६६
३२६	यष्ट्यां लः	१७६
३२७	यावदादिषु वस्य	१३४
३२८	युवतस्य	३१
३२९	युधि-बुध्योर्भः	३८३
३३०	युष्मदस्तं तुम्	२५१
३३१	राज्ञश्च	२३०
३३२	रुदेर्वः	३७५
३३३	रुधेर्ध-म्मौ	३६२
३३४	रुपादीनां दीर्घः	३८४
३३५	रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु	३०४
३३६	रो रा	२८४
३३७	र्त्तस्य टः	११५
३३८	र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः	११२
३३९	लवण-नवमलिकयोर्वेन	१६४
३४०	लादेशे वा	३१६
३४१	लाहल लाङ्गल-लाङ्गुलेषु वा णः	६८
३४२	लृतः क्लृप्त इलि	१६१
३४३	लोपोऽरण्ये	१८३
३४४	वक्रादिषु	५
३४५	वर्गेषु युजः पूर्वः	३७
३४६	वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोज्जः ज्जा वा	३२०

३४६	विप्रकर्षः	३०	४
३५०	विह्वले स्म-हो वा	१२६	१५
३५१	वृक्षे वेन रुर्वा	६६	८
३५२	वृधेर्हः	३५५	४३
३५३	वृन्दे वो रः	२१३	२६
३५४	वृश्चिके ञ्छः	४७	६
३५५	वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः	३५४	४३
३५६	वेः ऋके च	३६७	४६
३५७	वेष्टेश्च	३४२	४२
३५८	वो च शसि	२५४	३१
३५९	वो भे तुजभाणं तुम्हाणमामि	२६३	३१
३६०	शक्रादीनां द्वित्वम्	३८७	४७
३६१	शकेस्तर-चग्र-तीराः	३८८	४७
३६२	शद्-तु-पत्योर्दः	३५७	४३
३६३	शरदो दः	२७६	३३
३६४	शर्षोः सः	४४	६
३६५	शस एत्	२३४	२८
३६६	शेषः संस्कृतात्	३०७	३७
३६७	शेष-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादी	३५	५
३६८	शेषाणामदन्तता	३६६	४५
३६९	शेषोऽदन्तवत्	१३७	१६
३७०	श्च-त्स-प्सां छः	१२५	१४
३७१	श्मश्रु-श्मशानयोरादेः	२०१	२५
३७२	श्मदो धो दहः	३७८	४६
३७३	श्रु-हु-जि-लू-ध्रुवां णोऽन्त्येह्रस्वः	३५०	४२
३७४	स्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा	३६६	४४
३७५	षट्-शावक-सप्तपर्णानां छः	६६	१२
३७६	ष्क-स्क-क्षां वखः	५६	७
३७७	ष्टस्य ठः	१७५	२२
३७८	ष्ठा-ध्या-गानां ठाग्र-भाग्र-गात्राः	३६०	४३
३७९	ष्यस्य फः	२०६	२५
३८०	ष्म-यक्ष-विस्मयेषु म्हः	११६	१४
३८१	संख्यायां च	१०१	१२
३८२	संज्ञायां वा	१०२	१२
३८३	सटा-शकट-कैटभेषु ढः	८६	११
३८४	मन्थान्नामजलोपविशेषा नटलम्	९	९

क्रमशः	सूत्राङ्क	पञ्चाङ्क
३८६ सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५	१२
३८७ सर्वत्र लबराम्	३४	५
३८८ सर्वादिर्जस एत्वम्	१३५	१६
३८९ सीकरे भः	७६	१०
३९० सुपः सुः	२४	४
३९१ सु-भिस्-सुप्सु दीर्घः	१३८	१६
३९२ सू कृत्सायाम्	३०३	३६
३९३ सूर्ये वा	११३	१३
३९४ सेवादिषु	१३२	१५
३९५ सोबिन्दुनंपुंसके	१८४	२३
३९६ स्तम्भे खः	११०	१३
३९७ स्तस्य थः	५७	७
३९८ स्त्रियां वास उदीती	१५६	१६
३९९ स्त्रियामात्	२८३	३४
४०० स्त्रियामात् एत्	१६३	१६
४०१ स्थाणावहरे	१५१	१८
४०२ स्नुषायां ण्हः	१६६	२०
४०३ स्नेहे वा	३८	५
४०४ स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य	१२२	१४
४०५ स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः	७७	१०
४०६ स्फटिके लः	७८	१०
४०७ स्फुटि-चत्योर्वा	३४४	४२
४०८ स्फोटके	१११	१३
४०९ स्मरतेभर-सुमरौ	३६४	४४
४१० स्स-स्सिमोरद् वा	२२७	२८
४११ स्सो ङसः	१६	३
४१२ स्सो ङसः	३७०	४५
४१३ स्सो ङसः	६०	८
४१४ स्सो ङसः	२८२	३३
४१५ स्सो ङसः	२६०	३५
४१६ स्सो ङसः	२६४	३५
४१७ स्सो ङसः	४०६	५०
४१८ स्सो ङसः	४६	६
४१९ स्सो ङसः	१०८	१२

प्राकृतानन्दप्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका

अ. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः	क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
अंकोठे लः	२००	अंकोले लः	२।२५
×		१ अत इदेतो लुक् च	११।१०
×		२ अदीर्घः सम्बुद्धौ	११।१३
×		३ अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ	१२। ३
१ अपौ विव	३०६	×	
अम्हेहितो अम्हेसुतो म्यसि	२७४	अम्हाहितो अम्हासुतो म्यसि	६।४६
×		४ अस्मदः सौ हके हगे अहके	११।६
×		५ अस्मदोजसावअं च	१२।२५
×		६ अयुक्तस्यानादौ	२।१
२ अण्वो अम्मो दुःखाऽऽक्षेप-		×	
विस्मापनेषु	३०१	अस्तेर्लोपः	७।६
असेर्लोपः	२६६	७ अस्तेरच्छ	१२।१६
×		×	
३ अस्थिनि	२१७	आडो जस्य	३।५५
आडो ज्ञादेशस्य	१७०	आच सो	५।३५
आच्च सौ	१५५	८ आत्मनि पः	३।४८
×		९ आनन्तर्येणवरि	६।८
×		आम एसि	६।४
आमः एसि	२२३	आमासि	६।१२
आमि सि	२४६	आल्विलोलवन्तेन्तामतुपः	४।२५
आल्विलोललालवत्तेत्ता मतुपः	३१४	१० आविःकत कर्मभावेषु वा	७।२८
×		११ आश्चर्यस्याच्चरिअं	१२।३०
×		×	
४ इअं भूते	३२६	१२ इ गघसमेषु	१२।६
×		इङ् मिपोमिः	७।३
इट् मयोमिः	३२५	१३ इत्सदादिषु	१।११
×		१४ इः श्रीह्रीक्रीतकलान्तवलेशमला-	
×		नस्वप्नस्पर्शहर्षहिर्गर्हेषु	३।६२
×		१५ इवस्य पिवः	१०।४

क्र. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
५ इवे ळ्व	३०८
ईत् स्त्रियाम्	४१६
उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा	८६
उद्धमो धूमा	३६३
६ उद्धखले द्वा वा	१८७
उल्लूखले ह्वा वा	१८७ A
×	
×	
एच्च क्त्वातुमुन् तव्य-	
भविष्यत्सु	३३४
×	
श्रीत् श्रीत्	७३
×	
×	
×	
क्रुधेर्भूरः	३८५
×	
×	
×	
×	
क्वचिद् युक्तस्यापि	५४
×	
×	
धे क्त्वा-तुमुन्तव्येषु	४१६
७ ङसा से	
ङसि तुमो-तुह-तुज्भ-तुम्ह-	
तुम्हा	२६१
८ ङसो वा	१६२
×	
ङे ए-म्मी	२२
×	
×	
×	

क्र. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
×	
ईच स्त्रियाम्	७।११
उत्तरीयाऽऽनीययोज्जो वा	२।१७
उद्धम उद्धुमा	८।३२
×	
उल्लूखलेत्वा वा	१।२१
१७ ऋरीति	१।३०
१८ लृतः क्लृप्तः हलिः	१।३३
एच क्त्वातुमुन् तव्यभविष्यत्सु	७।३३
१९ एवस्य जेव्व	१२।२३
आत श्रीत्	१।४१
२० कन्यायां न्यस्य	१०।१०
२१ करेण्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः	४।२८
२२ कृज्गृङ्गमां क्तस्य डः	११।१५
क्रुधेर्भूरः	८।६४
२३ क्त्व इअः	१२।६
२४ क्त्व स्तूनम्	१०।१३
२५ क्तान्तादुश्च	११।११
२६ क्तो दाणिः	११।१६
क्वचित्पृक्तस्यापि	१।३१
२७ क्षस्य स्कः	११।८
२८ खिदेविसूरः	८।६३
२९ गर्दभसंभर्दवितदिविच्छदिषु	
र्दस्य	३।२६
धेत् क्त्वा तुमुन् तव्येषु	८।१६
×	
ङसि तुमो तुह तुज्भ तुम्ह	
तुम्हाः	६।३१
×	
३० ङसो हो वा दीर्घत्वञ्च	११।१२
ङे रेम्मी	५।६
३१ ङेदेन हः	६।१६
३२ चर्चश्चम्पः	८।६५
३३ चवर्गस्य स्पष्टतया	



क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
९	चिग्र चेग्र अवधारणे	२६१
	×	
१०	जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०
	×	
	जस ओश्च यूत्वम्	१३६
	जस्-शस्-डसो एो	२३१
	×	
११	ओ एज्ज-एव्वो वा	४०८
	×	
	×	
१२	भयि तद्वर्गान्तः	७
	टा-डस् डीनामिदे ददातः	१६०
	टा-डचोस्तइ तए तुमए तुए	२५५
	×	
	×	
१३	एववरि आनन्तनयें	२६६
	×	
	एुदेर्लोणः	३८६
	एो शसि	२६६
	×	
	×	
	×	
	त्तां वाऽमि	२५३
	तुज्जेहिं तुम्हेहिं तुम्मेहिं भिसि	२५८
	तृणइरः शीले	४१७
१४	ते-तिपोरिदेती	३१७
	त्रेस्ती	१५०
	×	
१५	दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ	
	वब्भा	४०७
	×	
१६	दोह्वे एः	६७
	×	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
	×	
३४	चिट्टस्य चिट्टः	१११४
	×	
३५	जशशस्डसां एो	५१३८
	जसश्च ओ यूत्वम्	५११६
	जशशस्डसां एो	५१३८
३६	जोयः	१११४
	×	
३७	जस्य ऊजः	१०१६
३८	ऊज च्व	१०१११
	×	
	टाडसिडस्डोनामिदेददातः	५१२२
	टाडचोस्तइ तएतुमए तुमे	६१३०
३९	टामोर्णः	५१४
४०	डुक्कजः करः	१२११५
	×	
४१	एिण्जंशसोर्वा वलीवे	
	स्वरदीर्घश्च	१२१११
	एुदो एोल्ल	८१७
	एो शसि	६१४४
४२	एो नः	१०१५
४३	ततिपो रिदेतो	७११
४४	तिपात्थि	१२१२०
	तु चामि	६१२७
	तुज्जेहिं तुम्हेहिं भिसि	६१३४
	तृणइरः शीले	४१२४
	×	
	त्रस्ति	६१५५
४५	ददातेर्दे दइस्स लृटि	१२११४
	×	
४६	दृशेः पेक्खः	१२११८
	×	
४७	धातोर्भावकर्तृकर्मसु	
	परस्मैपदम्	१२१२७

८. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि सूत्राङ्क

×	
नपुंसके स्वभोरिदमिणमिणमो २८७	
नाऽऽमन्त्रणे सावोत्व-दीर्घत्व	
बिन्दव	२५
×	
×	
पदेः पालः	२८३
×	
परुष-परिघपरिखासु फः	
×	
×	
×	
×	
१७ बाष्पेऽश्रुणि हः	१२३
१८ बृहस्पती ब-होर्भ-औ	१४५
×	
×	
×	
१९ भियो-भाः बीहौ	३७६
×	
भ्यसो हितो सुत्तो	२१
×	
×	
मृजेलुभ-पुसौ	३७४
×	
यावदादिषु वस्य	१३४
×	
रुषादीनां दीर्घः	३८४
×	

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि सूत्राङ्क

४८ न लृटि	१२१३
नपुंसके स्वभोदिदमिण-	
मिणमो	६१८
नामन्त्रणे सावोत्व-	
दीर्घबिन्दवः	५१२७
४९ नान्त्यद्वित्वे	७१६
५० नैदावे	७१२६
पदेः पालः	८१०
५१ पनसेऽपि	२१३७
परुषपलितपरिखासु फः	२१३६
५२ पुत्रेऽपि क्वचित्	१२१५
५३ पैशाची	१०११
५४ प्रकृतिः शौरसेनी	१०१२
५५ प्रकृतिः संस्कृतम्	१२१२
५६ प्रकृत्या दोलादण्डदशनेषु	१२१३१
×	
×	
५७ ब्रह्मण्यविज्ञकन्यकानां प्यभ-	
न्यानां ङजो वा	१२१७
५८ भविष्यति मिपास्सं वा स्वर-	
दीर्घत्वञ्च	१२१२१
५९ भाजने जस्य	३१४
×	
६० भोभुवस्तिङि	१२११२
भ्यसो हितो सुत्तो	५१७
६१ मागधी	११११
६२ मिपो लोटि च	१२१२६
मृजेलुभसुपौ	८१६७
६३ ययि तद्वर्गान्तः	४११७
याबादादिषु वस्य	४१५
६४ राज्ञो राचि टाङ्सिङस्-	
ङिषु वा	१०११२
रुषादीनां दीर्घता	८१४६
६५ यस्य रिअः	१०१८

हन्-ल्ल-ह्येषुनलमां स्थितिरूर्ध्वम् १०८  
न नः इवः त्वाश्चाकृतां तत्तः ५६

लल्लहो पु नलमां स्थितिरुर्ध्वम् ३।८  
तस्मात्प्राश्नादयं गतः

भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृता चेति भेदतः ।  
कौमारपाणिनीयादिसंस्कृता संस्कृता भवेत् ॥ १

इयं तु देवतादीनां मुनीनां नायकस्य च  
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रमन्त्रिकञ्चुकिनामपि ॥ २

गार्ग्यगालवशाकल्यपाणिन्याद्या यथर्षयः ।  
शब्दराशेः संस्कृतस्य व्याकर्तारो महत्तमाः ॥ ३

तथैव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः ।  
आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्त्ता लोकविश्रुतः ॥ ४

यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् ।  
तथैव प्राकृतेनापि निर्मितं हि सतां मुदे ॥ ५

पाणिन्याद्यैः शिक्षितत्वात्संस्कृती स्याद्यथोत्तमा ।  
प्राचेतसव्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥ ६



पण्डित - रघुनाथ - कवि - विरचित

## प्रा कृ ता न न्द



प्रेङ्खन्नखच्छविमिथश्छुरितेन यस्मिन्,  
रक्ताञ्चलग्रथनकौतुकमन्वकारि ।  
स्वेदोद्गमद्विगुणदानजलः स भूयान्,  
भूयात् करग्रहविधिः शिवयोः शिवाय ॥ १ ॥

रचयति नृसिंहरत्नै रघुनाथः सरसदैववित्तनयः ।  
रसिकानन्दनिमित्तं सानन्दं प्राकृतानन्दम् ॥ २ ॥

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ॥  
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ? ॥ ३ ॥

ये पण्डितकुलोत्पन्ना रसवन्तोऽल्पबुद्धयः ।  
तदर्थमयमारम्भः किमज्ञातं मनीषिणाम् ? ॥ ४ ॥

\*

सन्धावचामजूलोपविशेषा बहुलम् ॥ १ ॥

अचां सन्धावजविशेषा लोपश्च वा स्युः । नदीस्रोतः णइस्रोत्तो ।  
राम ओ इति स्थिते रामो, अकारलोपः ।

मो बिन्दुः ॥ २ ॥

मस्य अनुस्वारः स्यात् । कण्ह अम् इति स्थिते कण्हं ।

अचि मश्च ॥ ३ ॥

अचि परे मस्य म एव स्यात् । अनुस्वारापवादः । धणम् ओहरइ  
इति स्थिते धणमोहरइ । 'अनचि मो बिन्दुः' इत्येव सूत्रयितुं  
मुचितम् ।

नजो हलि ॥ ४ ॥

नकारञ्कारयोः अनुस्वारः स्याद् हलि । अन्सः अंसो, अत्र

वक्रादिषु ॥ ५ ॥

एषु अनुस्वारागमः स्यात् । वक्रं वंक्रं । वक्र त्र्यस्र ह्रस्व अश्रु इमश्च  
गृष्टि मूर्द्धन् मनस्विनी दर्शन स्पर्श वर्ण प्रतिश्रुत् अश्व अभिमुत्त  
वक्रादिः ।

मांसादिषु वा ॥ ६ ॥

एषु वा बिन्दुः स्यात् । संयोगेऽणो ह्रस्व इति वाच्यम् । मांसं  
मंसं मासं । आकृतिगणोऽयम् ।

झयि तद्वर्गान्तः ॥ ७ ॥

तद्वर्गान्तोऽनुस्वारो वा स्याद् झयि । शङ्का संका सङ्का ।

॥ इति सन्धिः ॥

\*

अत ओत् सोः ॥ ८ ॥

अकारान्तात् परस्य सोः ओत् स्यात् ॥

नो णः सर्वत्र ॥ ९ ॥

यत्र क्वचित् स्थितस्य नस्य णः स्यात् ।

क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लोपः ॥ १० ॥

कादीनां नवानामयुक्तानामनादिवर्तिनां प्रायो लोपः स्यात्  
नारायणः नाराअणो । अयुक्तानामिति किम् ? शक्रः सक्रो इत्यादि  
अनादिवर्तिनामिति किम् ? कृष्णः कण्हो इत्यादि ।

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ११ ॥

सुपां तिङां च द्विवचनस्य बहुवचनं स्यात् ।

जस्-शसोर्लोपः ॥ १२ ॥

अकारान्तात् परयोः जस्-शसोः लोपः स्यात् ।

जस्-शस्-डसि-आमसु दीर्घः ॥ १३ ॥

एषु अतो दीर्घः स्यात् ।

ए च सुप्यङि-डसोः ॥ १४ ॥

अकारस्य एत्वं स्यात् सुपि, न तु ङि-डसोः । चाद् दीर्घोऽपि

अकारान्तात् परस्य अमः अकारस्य लापः स्यात् । नारायण  
नाराअणं । ननु 'सन्धावचाम्०' (१) इति अलोपेनैव भाव्यम्  
इति चेत्, न, तत्र बहुलग्रहणात् कचिदप्रवृत्तेरपि सम्भावनीयत्वात्  
नारायणान् णाराअणा णाराअणे ।

टा-ऽऽमोर्णः ॥ १६ ॥

अकारान्तात् परयोः टा-ऽऽमोः णः स्यात् । नारायणेन णारा  
अणेण । नारायणानां णाराअणाणं ।

भिसो हिं ॥ १७ ॥

अकारान्तात् परस्य भिसो हिं इत्यादेशः स्यात् । नारायणैः  
णाराअणेहिं ।

चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ १८ ॥

स्यात् । तथा हि ।

स्सो ङसः ॥ १९ ॥

अकारान्तात् परस्य ङसः स्स इत्यादेशः स्यात् । नारायणाय  
णाराअणस्स । नारायणेभ्यः णाराअणाणं ।

ङसेः आ-दो-दु-हयः ॥ २० ॥

अदन्तात् परस्य ङसेः आ दो दु हि इति प्रत्येकं चत्वार आदेशा  
स्युः । नारायणात् णाराअणा णाराअणादो णाराअणादु नारायणाहि  
'अस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः ।

भ्यसो हितो सुत्तो ॥ २१ ॥

अदन्ताद् भ्यसो हितो सुत्तो इत्येतौ आदेशौ स्याताम् । नारा  
यणेभ्यः णाराअणाहितो णाराअणासुत्तो । नारायणस्य णाराअणस्स

ङेः ए-म्मी ॥ २२ ॥

अदन्ताद् ङि इति सप्तम्येकवचनस्य ए म्मि इत्येतौ स्याताम्

कचिद् ङसि-ङ्योर्लोपः ॥ २३ ॥

ङसि-ङ्योः परयोः कचिदतो लोपः स्यात् । नारायणे णाराअणे  
णाराअणम्मि ।

नारायणेषु णाराअणेषु । 'ए च०' (१४) इति एत्वम् ।

नाऽऽमन्त्रणे सावोत्व-दीर्घत्व-बिन्दवः ॥ २५ ॥

सम्बोधने ओत्व-दीर्घत्वा-ऽनुस्वारा न स्युः ।

अन्त्यस्य हलः ॥ २६ ॥

[ अन्त्यस्य हलः ] लोपः स्यात् । हे नारायण हे णाराअण ।

रागः राओ । 'क-ग०' (१०) इति गलोपः । रागाः राआ राए  
'जस्-शसोः०' (१२) इति लोपः, 'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः  
रागम् राअं । रागान् राआ राए । रागेण राएण । रागैः राएहिं । रागात्  
राअस्स । रागेभ्यः राआणं । रागात् राआ राआदो राआदु राआहि  
रागेभ्यः राआहिंतो राआसुत्तो । रागस्य राअस्स । रागाणाम् राआणं  
रागे राए राअम्मि । रागेषु राएसु ।

आदेरतः ॥ २७ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इदीषत्-पक्-स्वप्न-वेतस-व्यजन-मृदङ्गा-ऽङ्गारेषु ॥ २८ ॥

एषु सप्तसु मध्ये आदेः अतः इः स्यात् ।

उद् ऋत्वादिषु ॥ २९ ॥

एषु ऋतः उः स्यात् । मृदङ्गः मुहंगो । ऋतु मृणाल पृथिवी वृन्दा-  
वन प्रावृह प्रवृत्ति विवृत संवृत निवृत वृत्तान्त परभृत मातृक जामा-  
तृक मृदङ्ग इत्यादि ऋत्वादिः ।

विप्रकर्षः ॥ ३० ॥

-इत्यधिकृत्य ।

युक्तस्य ॥ ३१ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इः श्री-ही-क्रीत-क्लान्त-क्लेश-म्लान-स्वप्न-स्पर्श-हर्षा-ऽर्ह-गर्हेषु ॥ ३२ ॥

एषु एकादशसु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य इत्वम्, तत्स्व-  
रता च । 'नो याः०' (९) इति णः । स्वप्नः सिविणो इत्यादि ।  
'उपरि०' (३६) इति वक्ष्यमाणेन पलोपः ।



एषु तस्य डः स्यात् । प्रतिसरः पडिसरो । 'सर्वत्र०' (३४) इति वक्ष्यमाणेन रलोपः । ननु पडिवआ पडिसिद्धि इत्यादौ तस्य डः केन ? इति चेत्, उच्यते, प्रतिसर इत्यत्र प्रतिना सरति प्रतिपूर्वक इति यावद् इति व्याख्यानात्, 'प्रतिसर'शब्दस्यापि प्रतिनैव सरत्वादिति । वेतसः वेडिसो ।

सर्वत्र लबराम् ॥ ३४ ॥

संयुक्तस्य उपर्यधःस्थितानां लकार-वकार-रेफाणां लोपः स्यात् शेषा-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ ॥ ३५ ॥

युक्तस्य लोपे जाते यः शेषः आदेशश्च तयोः अनादौ वर्तमानयोर्द्वित्वं स्यात् । पक्कः पिको ।

उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम् ॥ ३६ ॥

कादीनामष्टानां युक्तस्य उपरिस्थितानां लोपः स्यात् । भक्तः भक्तो ।

वर्गेषु युजः पूर्वः ॥ ३७ ॥

'शेषा०' (३५) इति यस्य द्वित्वं क्रियते स द्वितीयः चतुर्थो वा चेत् तत्पूर्वः प्रथमः तृतीयो वा स्यात् । मुग्धः मुद्धो । खङ्गः खग्गो । उत्पीतः उप्पीओ । सङ्गमः सग्गमो । आप्तः अत्तो । वसिष्ठः वसिद्धो स्नेहे वा ॥ ३८ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य अत्वं च । स्नेहः सणेहो णेहो ।

आदेर्यो जः ॥ ३९ ॥

शब्दस्य आदिभूतयकारस्य ज-आदेशः स्यात् ।

अधो म-न-याम् ॥ ४० ॥

युक्तस्य अधःस्थितानामेषां लोपः स्यात् । योग्यः जोग्गो ।

ए शय्यादिषु ॥ ४१ ॥

एषु आदेः अकारस्य एत्वं स्यात् । उत्करः उक्केरो । शय्या सौन्दर्य उत्कर त्रयोदश आश्चर्य पर्यन्त बह्वी शय्यादिः ।

अनयोः यूशब्देन सह आदेः अत आत्व वा स्यात् मयूरः मारा ।  
मयूखः मोहो । पक्षे 'क-ग०' (१०) इति यलोपः, मऊरो मऊहो ।

आ समृद्धादिषु वा ॥ ४३ ॥

अविभक्तिको निर्देशः । 'सविसर्गः पाठः' इति केचित् । एषु  
आदेः अकारस्य आकारो वा स्यात् । समृद्धि प्रकट अभिजाति  
मनखिनी प्रतिपत् सहस्र प्रतिस्पर्द्धि प्रसुप्त प्रसिद्धि अश्व । आकृति-  
गणोऽयम् ।

शषोः सः ॥ ४४ ॥

सर्वत्र शस्य षस्य च सः स्यात् । अश्वः आसो अस्सो ।

अदातो यथादिषु वा ॥ ४५ ॥

एषु आतः स्थाने वा अत् स्यात् । प्रहारः पहरो पहारो 'सर्वत्र०'  
(३४) इति रलोपः । हालिकः हलिओ हालिओ । यथा तथा प्राकृत  
तालवृन्त उत्खात चामर प्रहार चाटु दावाग्नि खादित संस्थापित  
मृगाङ्क हालिक यथादिः ।

उद् इक्षु-वृश्चिकयोः ॥ ४६ ॥

अनयोः इत उत् स्यात् ।

वृश्चिके ङ्छः ॥ ४७ ॥

युक्तस्य स्यात् । वक्ष्यमाण'श्च-त्स-प्सां ङ्छः' (१२४) इति  
छत्वापवादः ।

इद् ऋष्यादिषु ॥ ४८ ॥

एषु ऋकारस्य इत् स्यात् । वृश्चिकः विञ्छुओ । ऋषि वृषी गृष्टि  
सृष्टि दृष्टि शृङ्गार मृगाङ्क भृङ्ग भृङ्गार हृदय वितृष्ण वृंहित कृशर  
कृत्या वृश्चिक कृपा शृगाल कृति कृत्ति कृषि ऋष्यादिः । शृङ्गार  
सिंगारो । मृगाङ्कः मिअंको, यथादित्वाद् आत अः । भृङ्गः भिंगो  
भृङ्गारः भिंगारो ।

ह्र-स्व-ष्ण-क्ष-श्नां ण्हः ॥ ४९ ॥

एषां ण्हादेशः स्यात् । वितृष्णः वितिण्हो । शृगालः सिआलो

ईत् सिंह-जिह्वयोश्च ॥ ५० ॥

अनयोः इत् ईत् स्यात् । सिंहः सीहो ।

इद् ईतः पानीयादिषु ॥ ५१ ॥

एषु ईत् इत् स्यात् । करीषः करिसो । पानीय अलीक व्रीडित  
व्यलीक गृहीत तदानीम् करीष द्वितीय तृतीय गभीर पानीयादिः ।

एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु ॥ ५२ ॥

एषु ईत् एत् स्यात् ।

आपीडे मः ॥ ५३ ॥

पस्य मः स्यात् । लोपं बाधित्वा प्राप्तस्य 'पो वः' (८५) इति  
वक्ष्यमाण-व-त्वस्यापवादः । आपीडः आमेलो ।

क्वचिद् युक्तस्यापि ॥ ५४ ॥

वर्णान्तरेण युक्तस्यापि ककारस्य क्वचिद् रिः स्यात् । 'क-ग  
(१०) इति द-लोपः । कीदृशः केरिसो । ईदृशः एरिसो ।

उत् ओत् तुण्डरूपेषु ॥ ५५ ॥

संयुक्तवर्णपरोकारेषु उत् ओत् स्यात् ।

ष्क-स्क-क्षां क्खः ॥ ५६ ॥

एषां क्खादेशः स्यात् । पुष्करः पोक्खरो ।

स्तस्य थः ॥ ५७ ॥

स्यात् । 'उपरि लोपः०' (३६) इत्यस्यापवादः । पुस्तकः पोत्थओ  
लुब्धकः लोद्धओ । 'उत् ओत्०' (५५) इत्यस्य प्रायिकत्वात् लुद्धओ  
अत्र 'सर्वत्र०' (३४) इति व-वयोरैक्याद् लोपे शेषस्य थस्य 'शेषाः'  
(३५) इति द्वित्वे दपूर्वो धकारः ।

अन्मुकुटादिषु ॥ ५८ ॥

एषु आदेः उत् अत् स्यात् । मुकुट मुकुल गुरु गुर्वी युधिष्ठि  
सौकुमार्य मुकुटादिः । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, 'उपरि  
(३६) इति षलोपः, 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् ।

एषामयुक्तस्य रेफस्य लादेशः स्यात् । युधिष्ठिरः जहिष्ठिलो ।  
हरिद्रा चरण मुखर युधिष्ठिर करुण अङ्गुरी अङ्गार किरात परिखा  
परिघ हरिद्रादिः । चरणः चलणो । मुखर मुहलो । अङ्गारः इंगालो,  
'इद् ईषत्०' ( २८ ) इति इत्वम् ।

किराते चः ॥ ६१ ॥

अत्र आदेः चः स्यात् ।

ऋत्वादिषु तो दः ॥ ६२ ॥

एषु तस्य दः स्यात् । किरातः चिलादो । ऋतु रजत आगत निर्वृति  
आकृति संवृति सुकृति हत संयत विवृत सञ्जात सम्प्रति प्रतिपत्ति  
ऋत्वादिः ।

परुष-परिघ-परिखासु फः ॥ ६३ ॥

एषु आदेः फः स्यात् । परुषः फरुसो । परिघः फलिहो । आगतः  
आअदो । हतः हदो । संयतः संजदो, 'आदेर्यो जः' ( ३९ ) इति जः ।  
सम उपसर्गत्वाद् यत इति यकारस्य आदिस्थत्वम् ।

इत् पुरुषे रोः ॥ ६४ ॥

अत्र रोः उत इत् स्यात् । पुरुषः पुरिसो । रोरिति किम् ? पका-  
राद् उकारस्य मा भूत् ।

अयुक्तस्य रिः ॥ ६५ ॥

वर्णान्तरेण अयुक्तस्य ऋकारस्य रिः इत्यादेशः स्यात् । ऋद्ध-  
रिद्धो ।

वृक्षे वेन रुर्वा ॥ ६६ ॥

वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुः वा स्यात् । व्यवस्थित  
विभाषेयम्, तेन च्छत्वपक्षे न भवति, खत्वपक्षे तु स्यादेव ।

क्षमा-वृक्ष-क्षणेषु वा ॥ ६७ ॥

एषु क्षस्य वा च्छः । पक्षे 'ष्क-स्क०' ( ५६ ) इति खः  
'ऋतोऽत्' ( १२० ) इति वक्ष्यमाणेन अकारः । वृक्षः वच्छो रुक्खो ।

एत इद् वेदना-देवरयोः ॥ ६८ ॥

अनयोः आदेः एत इर्वा स्यात् । देवरः दिअरो देअरो, 'क-ग' १०) इति बलोपः ।

ऐत एत् ॥ ६९ ॥

आदेः ऐतः एः स्यात् । शैलः सेलो । कैलासः केलासो ।

दैत्यादिष्वङ् ॥ ७० ॥

दैत्यादिषु ऐकारस्य अङ् इत्यादेशः स्यात् ॥

त्य-थ्य-द्यां च-च्छ-ज्जाः ॥ ७१ ॥

त्रयाणां क्रमेण त्रयः स्युः । दैत्यः दइच्चो । चैत्रः चइत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः । भैरवः भइरवो । वैदेशः वइदेसो । वैदेहः वइदेहो । कैतवः कइअवो । वैशाखः वइसाहो, 'ख-घ०' (५९) इति हः । वैशिकः वइसिओ । वैशम्पायनः वइसंपाअणो । दैत्य चैत्र भैरव खैर वैर वैदेश वैदेह कैतव वैशाख वैशिक वैशम्पायन दैत्यादिः ।

ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥ ७२ ॥

प्रकोष्ठशब्दे ओतः अद् वा स्यात्, कस्य च वः स्यात् । प्रकोष्ठः पवट्टो, 'सर्वत्र०' (३२) इति रलोपः, 'उपरि०' (३६) इति षलोपः 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । पक्षे पओट्टो, 'क-ग०' (१०) इति कलोपः ।

औत ओत् ॥ ७३ ॥

आदेः औकारस्य ओत् स्यात् । पौत्रः पोत्तो ।

पौरादिष्वउः ॥ ७४ ॥

एषु औकारस्य अउः इत्यादेशः स्यात् । ओत्वापवादः । पौरः पउरो कौरवः कउरवो ।

कौशले वा ॥ ७५ ॥

कउसलो कोसलो । आकृतिगणोऽयम् ।

उत् सौन्दर्यादिषु ॥ ७६ ॥

एषु औकारस्य उत् स्यात् । मौञ्जायनः मुंजाअणो । शौण्डः सुंडो कौक्षेयकः कुक्खेअओ, 'वर्गेषु०' (३१) इति कः, 'क-ग०' (१०) इति य-कोलोपः । सौन्दर्य मौञ्जायन शौण्ड कौक्षेयक दौवारिकादयः सौन्

स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः ॥ ७७ ॥

एषु ककारस्य हादेशः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इति कलोपापवादः

स्फटिके लः ॥ ७८ ॥

अत्र टस्य लः स्यात् । 'टो डः' (८८) इति वक्ष्यमाणस्यापवादः ।  
'उपरि०' (३६) इति सलोपः, स्फटिकः फलिहो । चिकुरः चिहुरो  
निकषः णिहसो, 'नो णः०' (९) इति णत्वम्, 'शषोः०' (४४)  
इति सः ।

सीकरे भः ॥ ७९ ॥

अत्र कस्य भः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इत्यस्यापवादः । सीकर  
सीभरो ।

गर्भिते णः ॥ ८० ॥

तस्य णः स्यात् । गर्भितः गर्भिणो ।

वसति-भरतयोर्हः ॥ ८१ ॥

अनयोः तस्य हः स्यात् । लोपापवादः । भरतः भरहो ।

ऐरावते च ॥ ८२ ॥

अत्र तस्य णः स्यात् । लोपापवादः । ऐरावतः ऐरावणो, 'ऐत एत्  
(६९) इति एत् ।

प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः ॥ ८३ ॥

एषु अनादिभूतस्य दस्य लः स्यात् । कदम्बः कलंबो । दोहदः  
णोहलो । अनेति (अनादीति) किम् ? आद्यस्य मा भूत् । 'दोहदे णः  
(९७) इति वक्ष्यमाणेन णः ।

गद्गदे रः ॥ ८४ ॥

अत्र अयुक्तस्य दस्य रः स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति दलोपः  
गद्गदः गग्गरो ।

पो वः ॥ ८५ ॥

पस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य वः स्यात् । शपथः सवहो, 'ख-घ०'  
(५९) इति हः । ननु पस्य लोपोक्तेः कथं पस्य वविधिः ? इति चेत्  
उच्यते, लोपविधौ 'प्रायः' (सू० १०) इत्युक्तेः यत्र लोपाभावस्तत्रैव  
अपवादः ।

प्राकृतानन्द

उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा ॥ ८६ ॥

उत्तरीयशब्दस्य अनीयप्रत्ययस्य च यो यकारः तस्य जो वा ।  
रमणीयः रमणिज्जो ।

कबन्धे बो मः ॥ ८७ ॥

अत्र बस्य मः स्यात् । लोपापवादः । कबन्धः कर्मधो ।

टो डः ॥ ८८ ॥

टस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य डः स्यात् । विटपः विडवो ।

सटा-शकट-कैटभेषु ढः ॥ ८९ ॥

एषु टस्य ढः स्यात् । डापवादः । शकटं सअढो ।

कैटभे वः ॥ ९० ॥

भस्य वः स्यात् । कैटभः केढवो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

फो भः ॥ ९१ ॥

स्यात् । सफलः सभलो ।

प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः ॥ ९२ ॥

एषु थ-धयोः ढादेशः स्यात् । हापवादः । प्रथमः पढमो । शिा  
सिढिलो । निषधः णिसढो ।

कुब्जेः खः ॥ ९३ ॥

अत्र आदेः वर्णस्य खादेशः स्यात् । कुब्जः खुज्जो ।

दोला-दण्ड-दशनेषु डः ॥ ९४ ॥

एषां आदेः डः स्यात् । दण्डः डंडो । दशनः डसणो ।

मन्मथे वः ॥ ९५ ॥

अत्र आदेः वः स्यात् ।

न्मो म्मः ॥ ९६ ॥

स्यात् । मन्मथः वम्महो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

दोहदे णः ॥ ९७ ॥

अत्र आदेः णः स्यात् । दोहदः णोहलो ।

लाहल-लाङ्गल-लाङ्गलेषु वा णः ॥ ९८ ॥

एषु आदः छः स्यात् । षण्मुखः छम्मुहा । शावकः छावआ । सप्त  
पर्णः छत्तवण्णो, 'पो वः' (८५) इति वत्वम्, 'सर्वत्र०' (३४) इति  
रलोपः ।

दशादिषु हः ॥ १०० ॥

एषु शस्य हः स्यात् ।

सङ्ख्यायां च ॥ १०१ ॥

सङ्ख्यावाचिशब्दसम्बन्धिकारस्य रः स्यात् । एकादशः एआरहो  
द्वादशः बारहो । त्रयोदशः तेरहो, शय्यादित्वाद् एत् ।

संज्ञायां वा ॥ १०२ ॥

संज्ञायां दशादेः शस्य हो वा स्यात् । दशमुखः दहमुहो दसमुहो  
दशरथः दहरहो दसरहो ।

दिवसे सस्य ॥ १०३ ॥

हः स्याद् वा । दिवसः दिअहो दिअसो ।

द्रे रो वा ॥ १०४ ॥

द्रशब्दे रेफस्य लोपो वा स्यात् । इंद्रः इंदो इंद्रो । द्रुतः दुओ द्रुओ ।  
सर्वज्ञतुल्येषु अस्य ॥ १०५ ॥

सर्वज्ञ इत्येवमाकृतिषु अस्य लोपः स्यात् । सर्वज्ञः सवज्जो । अत्र ज्ञे  
जकारञकारयोर्मध्ये ञकारलोपे 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । जानाते-  
र्यानि सोपपदानि रूपाणि तत्रायं लोपः ।

मध्याह्ने हस्य ॥ १०६ ॥

लोपः स्यात् । वक्ष्यमाणोर्द्ध्वस्थितेः (१०८) अपवादः ॥

ध्य-ह्योर्झः ॥ १०७ ॥

स्यात् । मध्याह्नः मज्झण्णो ।

ह-ह्र-ह्रेषु न-ल-मां स्थितिरुद्धूर्वम् ॥ १०८ ॥

एषु त्रिषु अधःस्थितानां नकार-लकार-मकाराणां त्रिभ्य उपरि  
स्थितिः स्यात् । प्रह्लादः पल्हादो । अत्र हग्रहणं चिन्त्यम्, 'ह-स्न-ष्ण०'  
(४९) इति ण्हादेशे नस्य खयमेव उपरिष्ठाद् (१०६) भूतत्वात् कौस्तुभः  
कोत्थुहो, 'औत ओत्' (७३) 'स्तस्य थः' (५७) 'ख-घ०' (५९) इति हः ।



स्तस्य थो न स्यात् । 'उपरि०' ( ३६ ) इति सलोपः । तं इति पाठान्तरम् । स्तम्भः तंबो ।

स्तम्भे खः ॥ ११० ॥

स्तस्य खः स्यात् । थापवादः । स्तम्भः खंभो ।

स्फोटके ॥ १११ ॥

अत्र युक्तस्य खः स्यात् । स्फोटकः खोडओ, 'टो डः' ( ८८ ) इति डः ।

र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः ॥ ११२ ॥

र्य इत्येतस्य शय्या-ऽभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जः स्यात् । कार्यकज्जो ।

सूर्ये वा ॥ ११३ ॥

सूर्यशब्दे युक्तस्य र-ज्जौ वा स्याताम् ।

न र-होः ॥ ११४ ॥

रेफ-हकारयोर्द्वित्वं न स्यात् । सूर्यः सूरौ सुज्जो ।

र्त्तस्य टः ॥ ११५ ॥

स्पष्टम् । कैवर्त्तः केवटो, 'ऐत एत्' ( ६९ ) इति एत् ।

न धूर्त्तादिषु ॥ ११६ ॥

एषु र्त्तस्य टो न स्यात् । धूर्त्तः धुत्तो, 'सर्वत्र०' ( ३४ ) इति रलोपः आवर्त्तः आवत्तो । संवर्त्तः संवत्तो । निवर्त्तः णिवत्तो । आर्त्तः अत्तो । धूर्त्त कीर्त्ति वर्त्तमान वर्त्त आवर्त्त संवर्त्त निवर्त्त वर्त्तिका आर्त्त कर्त्तर मूर्त्ति धूर्त्तादिः ।

गर्त्ते डः ॥ ११७ ॥

र्त्तस्य डः स्यात् । गर्त्तः गड्डो ।

---

१ अत्रायमाशयः — यथा "न स्तम्भे" इति सूत्रपाठो दृश्यते तथा प्रत्यन्तरेषु "तः स्तम्भे" इत्या सूत्रपाठो दृश्यते इति ।

एषु क्षस्य छः स्यात् । क्षुब्धः लुब्धो । उत्क्षिप्तः उच्छिद्यो । 'उपरि०'  
( ३६ ) इति पलोपः । सहक्षः सरिच्छो, 'क-ग०' ( १० ) इति दलोपः, ऋ  
रिः । ऋक्षः रिच्छो । अक्षि लक्ष्मी क्षुण्ण क्षीर क्षुब्ध उत्क्षिप्त सहक्ष इक्षु  
उक्षा क्षार ऋक्ष मक्षिका क्षुर क्षुत क्षेत्र वक्ष उदक्ष कुक्षि कक्षा रक्षा  
अक्ष्यादिः । क्षणः छणो खणो ।

ष्म-यक्ष्म-विस्मयेषु म्हः ॥ ११९ ॥

ष्म इत्यस्य यक्ष्म-विस्मययोश्च युक्तस्य म्हादेशः स्यात् । विस्मयः  
विम्हो । स्नातः ण्हाओ, 'ह-स्न०' ( ४९ ) इति ण्हादेशः ।

ऋतोऽत् ॥ १२० ॥

ऋत आदेः अत् स्यात् । कृष्णः कण्हो । प्रश्नः पण्हो ।

इत एत् पिण्डसमेषु ॥ १२१ ॥

एषु इकारस्य एत्वं स्यात् । समग्रहणं संयोगपरमुपलक्षयति । विश्नः  
वेण्हो ।

स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ॥ १२२ ॥

फः स्यात् । स्पन्दः फंदो । निस्पन्दः निष्फंदो ।

बाष्पेऽश्रुणि हः ॥ १२३ ॥

बाष्पशब्दे षपस्य हः स्यात्, अश्रुणि वाच्ये । बाष्पः बाहो, 'न  
र-होः' ( ११४ ) इति द्वित्वनिषेधः । अश्रुणि किम् ? बाष्पः बाफो ऊष्मा,  
वक्ष्यमाणः 'षपस्य फः' ( २०६ ) ।

कार्षापणे ॥ १२४ ॥

युक्तस्य हादेशः स्यात् । कार्षापणः कर्हावणो, 'पो वः' ( ८५ )  
इति वः ।

श्च-त्स-प्सां छः ॥ १२५ ॥

त्रयाणां छः स्यात् । पाश्चात्यः पच्छत्तो । वत्सः वच्छो । ईप्सितः  
इच्छिओ ।

नोत्सुकोत्सवयोः ॥ १२६ ॥

अनयोः त्सस्य छादेशो न स्यात् । उत्सुकः ऊसुओ । उत्सवः  
ऊसवो ।

अ-ज्ञ इत्येतयोः पञ्चाशत्-पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णः स्यात्  
प्रद्युम्नः पञ्जुण्णो, 'त्य-थ्य०' (७१) इति ज्ञः । यज्ञः जण्णो ।

भिन्दिपाले ण्डः ॥ १२८ ॥

युक्तस्य ण्डः स्यात् । भिन्दिपालः भिन्दिवालो, 'पो वः' (८५)  
इति वः ।

विह्वले म्भ-हौ वा ॥ १२९ ॥

युक्तस्य एतौ वा स्याताम् । विह्वलः विंभलो विह्वलो ।

न बिन्दुपरे ॥ १३० ॥

अनुस्वारात् परस्य द्वित्वं न स्यात् । सङ्क्रान्तः संकतो ।

समासे वा ॥ १३१ ॥

समासे शेषा-ऽऽदेशयोर्वा द्वित्वं स्यात् । 'शेषा०' (३५) इत्यत्र  
'अनादौ' इत्युक्तेः अप्राप्तविभाषेयम्, अन्तर्वर्त्तिनीं विभक्तिमाश्रित्य  
पदादित्वात् । छायाग्रामः छायागामो छाहागामो, 'छायायां हः'  
(१६८) इति वक्ष्यमाणेन हः ।

सेवादिषु ॥ १३२ ॥

एषु अनादौ स्थितस्य हलो द्वित्वं वा स्यात् । निहितः निहितो निहिओ,  
'न र-होः' (११४) इति निषेधाद् न हस्य द्वित्वम् । तूष्णीकः तुण्हिक्को  
तुण्हिओ, 'ह-स्न०' (४९) इति ण्हः । दुःखितः दुक्खिओ, पक्षे 'ख-घ०'  
(५९) इति हः, दुहिओ । द्वित्वपक्षे 'वर्गेषु' (३९) इति कः । विश्रामः  
वीसामो विस्सामो । निःश्वासः निस्सासो णीसासो । पुष्यः पुस्सो पूसो ।  
सेवा एक नख दैव अशिव त्रैलोक्य निहित तूष्णीक कर्णिकार दीर्घरात्रि  
दुःखित अश्व ईश्वर विश्राम निःश्वास रश्मि मित्र पुष्य सेवादिः । उभ-  
यत्र विभाषेयम्, सेवादीनामप्राप्ते दीर्घादीनां 'शेषा०' (३५) इति प्राप्ते ।

कृष्णे वा ॥ १३३ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य तदचक्रता च । कृष्णः  
किसणो कण्हो । व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन वर्णवाचके विप्रकर्षः, भग-  
वति न इति ।

लोपः । अनुवर्त्तमानः अणुअत्तमाणो । यावत् तावत् पारावत् अनु-  
वर्त्तमान जीवित एवं एव अवट देवकुल यावदादिः । आकृतिगणोऽयम् ।  
सर्वः सवो ।

सर्वादेर्जस एत्वम् ॥ १३५ ॥

स्पष्टम् । सर्वे सवे । सर्वं सवं । सर्वान् सवा । सर्वेण सवेण । सर्वैः  
सवेहिं । सर्वस्मै सवस्स । सर्वेभ्यः सवाणं । सर्वस्मात् सवा सवादो सवादु  
सवाहि, 'ङसेः०' (२०) इत्यादेशाः । सर्वेभ्यः सवाहितो सवासुत्तो ।  
सर्वस्य सवस्स । सर्वेषाम् सवाणं ।

डेः सिंसि-मिम-त्थाः ॥ १३६ ॥

सर्वादेः परस्य डेः इति सप्तम्येकवचनस्य सिंसि मिम त्थ इति त्रय  
आदेशाः स्युः । सर्वस्मिन् सवसिंसि सवमिमि सवत्थ । सर्वेषु सवेसु । विश्वः  
विस्सो । उभौ उहे । उभशब्दस्य द्विवचनान्तत्वाद् द्विवचनस्य बहुवच-  
नादेशः । संस्कृते प्रसिद्धः सर्वादिः ॥

शेषोऽदन्तवत् ॥ १३७ ॥

शेषस्तु विधिः अदन्तवत् स्यात् । तेन आकारान्तादपि 'अत ओत  
सोः' (८) इत्यादि विधिः प्रवर्त्तते । विश्वपाः विस्सवो इत्यादि ।

सु-मिस्र-सुप्सु दीर्घः ॥ १३८ ॥

इदुदन्तयोः दीर्घः स्याद् एषु परेषु । 'अन्त्यस्य हलः' (२६) इति  
सोर्लोपः, अग्निः अग्गी । 'अधो०' (४०) इति न लोपः ।

जस ओश्च यूत्वम् ॥ १३९ ॥

इदुदन्तयोः परस्य जस ओ इत्यादेशः स्याद् णो च, पूर्वस्य ईकारो-  
कारौ च स्याताम् । अग्रयः अग्गीओ अग्गीणो । पाठान्तरे तु-

जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च ॥ १४० ॥

इदुदन्तयोः शब्दयोर्जसः ओ वो इत्येतावादेशौ स्याताम्, अत्वम्  
ईत्वम् ऊत्वं च विकल्पेन स्यात् णो च । पक्षे अदन्तवत् । अग्रयः  
अग्गीओ अग्गीवो अग्गीणो अग्गओ अग्गवो अग्गी । हे अग्ने हे अग्नि ।  
अग्निं अग्निं ।

टा णा ॥ १४१ ॥

इदुदन्तयोः टाया णा इत्यादेशः स्यात् । अग्निना अग्निणा ।

न डि-डस्योरेदातौ ॥ १४२ ॥

इदुदन्तयोः परयोः डि-डस्योः एत् आत् इत्येतौ न स्याताम् । अग्नेः अग्नीदो अग्नीदु अग्नीहि । डि-डस्योरिति किम् ? समृद्ध्या समिद्धीए समिद्धीआ । 'टा-डस्-डीनाम्' (१६०) इति एत्-आतौ ।

ए भ्यसि ॥ १४३ ॥

इदुदन्तयोः भ्यसि एत्वं न स्यात् । अग्निभ्यः अग्नीहिंतो अग्नीसुत्तो ।

डसो वा ॥ १४४ ॥

इदुदन्तयोः डसो णो वा स्यात् । पक्षे 'शेषो०' (१३७) इत्य-  
तिदेशात् 'डसः स्सः' (१९) इति स्सः । अग्नेः अग्नीणो [ अग्निस्स ] ।  
अग्नीनाम् अग्नीणं । अग्नौ अग्निग्मि । अग्निषु अग्नीसु । ऋषिः इसी,  
'इद् ऋष्यादिषु' (४८) इति इत्वम् ।

बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ ॥ १४५ ॥

अत्र वकार-हकारयोः क्रमेण भकाराकारौ स्याताम् । बृहस्पतिः  
भअप्पई, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, 'शेषो०' (३५) इति  
द्वित्वम्, 'क-ग०' (१०) इति तलोपः, 'सु-भिस०' (१३८) इति  
दीर्घः । गृहपतिः, गृहवई, 'पो वः' (८५) इति वः ॥ द्विशब्दो नित्यं  
द्विवचनान्तः ।

द्वेर्दुवे दोणि वा ॥ १४६ ॥

द्विशब्दस्य जसा शसा च सह दुवे दोणि इत्येतावादेशौ स्याताम्  
द्वौ दुवे दोणि ।

द्वेर्दो ॥ १४७ ॥

द्विशब्दस्य दो अयमादेशः स्यात् सुपि । द्वाभ्याम् दोहिं । द्वाभ्याम्  
दोहिंतो दोसुत्तो ।

एषामामो णं ॥ १४८ ॥

द्वि-त्रि-चतुरामामो णं इत्यादेशः स्यात् । णापवादः । द्वयोः दोणं  
द्वयोः दोसु । त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः ।

तिणिण जस्-शस्भ्याम् ॥ १४९ ॥

जसा शसा च सह त्रिशब्दस्य तिणिण इत्यादेशः स्यात् । त्रयः तिणिण ।

त्रेस्ती ॥ १५० ॥

त्रिशब्दस्य ती इत्यादेशः स्यात् सुपि । त्रिभिः तीहिं । त्रिभ्यः तीहिंतो तीसुत्तो । त्रयाणाम् तीणहं त्रिषु तीसु । सखा सही । सखायः सहीओ सहीणो । हे सहि । सखायम् सहिं । सखीन् सहिणो इत्यादि । पतिः पई । 'इत् एत्' (१२१) इति एत्, विष्णुः वेणू । जहुः जणू । इक्षुः उच्छू, 'उद् इक्षु' (४६) इति उत्त्वम्, अक्ष्यादित्वात् छः । ऋतुः उद्, 'उद् ऋत्वादिषु' (२९) इति उत्त्वम्, 'ऋत्वादिषु' (६२) इति दः ।

स्थाणावहरे ॥ १५१ ॥

युक्तस्य खादेशः स्यात्, न तु हरे अभिधेये । स्थाणुः खाणू । हर-वाचके तु थाणू, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, विष्णुवत् । 'र्य-शय्या०' (११२) इति जः, अभिमन्युः अहिमज्जु । करेणुः सूर्यः करेणू सुज्जो ।

ऋत आरः सुपि ॥ १५२ ॥

ऋकारस्य आरः स्यात् सुपि । भर्ता भत्तारो ॥

उर्जस्-शस्-टा-डस्-सुप्सु वा ॥ १५३ ॥

जसि शसि टायां डसि सुपि च ऋकारस्य स्थाने उर्वा स्यात् । आरापवादः । भर्तारः भत्तारा भत्तूओ भत्तुणो, 'जस ओः०' (१३९) इति ओत्वं णो च । हे भर्तः हे भत्तारा । भर्तृन् भत्तुणो, 'इदुतोः०' (१४०) इति णो । भर्त्रा भत्तुणा भत्तारेण । भर्तृभिः भत्तारेहिं । भर्तुः भत्तुस्स भत्तारस्स । भर्तृणां भत्ताराणं । भर्तृरि भत्तारम्मि । भर्तृषु भत्तारेसु ।

पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः ॥ १५४ ॥

एषाम् ऋत अरः स्यात् सुपि । आरापवादः ।

आच्च सौ ॥ १५५ ॥

पित्रादीनाम् आत् स्यात् सौ परे । पिता पिआ पिअरो इत्यादि । भ्राता भाआ भाअरो । जामाता जामाआ जामाअरो इत्यादि ।

इत्यजन्ताः प्रल्लिङ्गाः ॥

पक्षे यथालिङ्गम् । प्रश्नः पण्हा । शय्या सेज्जा, 'ए शय्यादिषु' (४१  
इति एत्वम्, 'यं शय्या०' (११२) इति जः ।

जसो वा ॥ १५७ ॥

स्त्रियां तिष्ठतो जस उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्या  
सेज्जाउ सेज्जाओ सेज्जा ।

अमि ह्रस्वः ॥ १५८ ॥

स्त्रीवाचकस्य ह्रस्वः स्याद् अमि परे । शय्याम् सेज्जं ।

स्त्रियां शस उदोतौ ॥ १५९ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ स्याताम् । शय्या  
सेज्जाउ सेज्जाओ ।

टा-ङस्-ङीनामिदेददातः ॥ १६० ॥

स्त्रीवाचकात् परेषां टा ङस् ङि इत्येतेषां इत् एत् अत् आत् एत्  
आदेशाः स्युः । इति चतुर्व्वपि प्राप्तेषु -

नाऽऽतोऽदातौ ॥ १६१ ॥

स्त्रीवाचकादाकारान्तात् शब्दात् परेषां टा-ङस्-ङीनाम् अत्-आतौ ः  
स्याताम् । शय्याया सेज्जाइ सेज्जाए । शय्याभिः सेज्जाहिं । शय्यायाः सेज्ज  
सेज्जादो सेज्जादु सेज्जाहि । शय्याभ्यः सेज्जाहिंतो सेज्जासुत्तो ।

ङसो वा ॥ १६२ ॥

ङसः स्त्रियाम् उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्यायाः सेज्जाउ  
सेज्जाओ सेज्जस्स (?) सेज्जाइ सेज्जाए । शय्यानाम् सेज्जाणं । शय्यायाम्  
सेज्जाइ सेज्जाए । शय्यासु सेज्जासु ।

स्त्रियामात् एत् ॥ १६३ ॥

सम्बुद्धौ स्त्रियाम् आत् एत्वं स्यात् सौ । हे शय्ये हे सेज्जे, 'अन्त्यस्य०'  
(२६) इति सोर्लोपः ।

लवण-नवमल्लिकयोर्वेन ॥ १६४ ॥

लवण-नवमल्लिकयोः आदेः अतो वकारेण सह ओकारः स्यात् ।  
नवमल्लिका णोमल्लिआ । मल्लिका इत्येतदुपलक्षणम्, तेन नवमल्लिका

णोभलिआ इति सिद्धम् । निद्रा णेद्वा णेद्रा, 'द्रे रो वा' (१०४) इति व रलोपः, 'इत् एत्' (१२१) इति एत्वम् । हे णेहे इत्यादि ।

अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु ॥ १६५ ॥

एषु इतो अत् स्यात् । हरिद्रा हलद्वा हलद्रा, 'हरिद्रादीनां' (६०) इति रेफस्य लः । जिह्वा जीह्वा, 'ईत् सिंह' (५०) इति ईत्वम् "सर्वत्र" (३४) इति वलोपः । मुक्ता मोक्ता, 'उत् ओत्' (५५) इति ओत्वम् । घृणा घणा, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत् । कृशरा किसरा कृत्या किच्चा, 'त्य-थ्य' (७१) इति चः । कृपा किवा, 'पो वः' (८५) इति वः । त्रिष्वपि 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत्वे प्राप्ते ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । वेदना विअणा वेअणा, 'क-ग' (१०) इति दलोपः, 'नो णः' (९) इति णः ।

यमुनाया मस्य ॥ १६६ ॥

लोपः स्यात् । यमुना जउणा, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः ।

चन्द्रिकायां मः ॥ १६७ ॥

कस्य मः स्यात् । चन्द्रिका चन्दिमा, 'सर्वत्र' (३४) इति रलोपः । पताका पडाआ, 'प्रतिसर' (३३) इति तस्य डः, 'क-ग' (१०) इति कलोपः ।

छायायां हः ॥ १६८ ॥

यस्य हः स्यात् छाया छाहा । रमणीया रमणिज्जा, 'उत्तरीया' (८६) इति जः, 'शेषादेशः' (३५) इति द्वित्वम् । सटा सढा । राधा राहा । सभा सहा । शोभा सोहा । परिखा फलिहा, हरिद्रादित्वाद् लः, 'परुष' (६३) इति फः, 'ख-घ' (५९) इति हः । दोला डोला, 'दोला-दण्ड' (९४) इति डः । निशा णिसा ।

सुषायां ण्हः ॥ १६९ ॥

षस्य ण्हः स्यात् । सुषा सोणहा, तुण्डरूपत्वाद् उत्त ओत्वम् । उल्का उक्का, 'सर्वत्र' (३४) इति ललोपः । वार्त्ता वत्ता, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वान्न । वर्त्तिका वत्तिआ, पूर्ववत् । सन्ध्या



इति चः । मिथ्या मिच्छा । विद्या विज्ञा । क्षुणा छुणा । उक्षा उच्छा ।  
मक्षिका मच्छिआ । कक्षा कच्छा । रक्षा रच्छा । पञ्चस्वपि अक्ष्यादित्वात्  
छः 'वर्गेषु०' (३७) इति चः । क्षमा छमा खमा, 'क्षमा-वृक्ष०' (६७)  
इति छत्ववैकल्यात् पक्षे 'क्क-स्क०' (५६) इति खः । 'अ-त्स-प्सां  
च्छः' (१२३) पश्चिमा पच्छिमा । विवत्सा विइच्छा (?) । लिप्सा लिच्छा ।  
जुगुप्सा जुउच्छा, 'प्रायः' (१०) इत्युक्तेर्लोपाभावपक्षे जुगुच्छा ।  
मूर्च्छा मुच्छा, "वर्गेषु०" (३७) इति चः ।

आङो ज्ञादेशस्य ॥ १७० ॥

'म-ज्ञ०' (१२७) इति जातो यो णादेशः तस्य आङः परस्य द्वित्वं  
न स्यात् । आज्ञा आणा । सेवा सेव्वा सेवा, 'सेवादिषु' (१३२) इति  
द्वित्वम् ।

क्लिष्ट-श्लिष्ट-रत्न-क्रिया-शार्ङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य ॥ १७१ ॥

एषु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात् । विप्रकर्षितव्यस्य विप्रकर्षे जाते य  
पूर्वो वर्णो निरर्थकस्तस्य विप्रकर्षितव्यस्वरता स्यात् । क्रिया किरिआ ।

अः क्षमा-श्लाघयोः ॥ १७२ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्याकारः तत्स्वरता च । क्षमा खमा  
विप्रकर्षितव्यस्य दीर्घत्वादीर्घत्वे प्राप्ते ह्रस्वो अकारो विधीयते । 'क्क-स्क०'  
(५६) इति खः । श्लाघा सलाहा, 'श-घोः०' (४४) इति सः, 'ख-घ०'  
(५९) इति हः ।

ज्यायामीत् ॥ १७३ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य ईकारः । ज्या जीआ अत्राप्याकारे प्राप्ते  
ईकारो विधीयते । ज्येत्यत्र विप्रकर्षकरणात् पूर्वम् 'अधो म-न-याम्' (४०)  
इति यलोपः, ततो घचेत् 'कग०' (१०) इति । माला माला । शाला साला

आदीतौ बहुलम् ॥ १७४ ॥

स्त्रियामकारान्तादातः स्थाने आत् ईत् इत्येतौ बहुलं स्तः । सहमान  
सहमाणा सहमाणी । वेपमाना वेवमाणा वेवमाणी । हरिद्रा हलद्रा (द्वा)  
हलद्दी । सूर्पनखा सुप्पणहा सुप्पणही । छाया छाहा छाही । का की  
जा जी । ता ती । प्रश्नः पण्णी । समृद्धिः समिद्धी सामिद्धी, 'आ समृद्ध्या०'  
(४३) इति वा आकारः, ऋष्यादित्वाद् इः, 'सु-भिस०' (१३८) इति  
मीलः । अक्षित्वादिः अक्षित्वादिः अक्षित्वादिः 'ख-ग०' (५९) इति हः ।

ष्टस्य ठः ॥ १७५ ॥

ष्ट इत्यस्य ठकारः स्यात् । गृष्टिः गिष्टी । हृष्टिः दिष्टी । सृष्टिः सिष्टी । चतुर्ष्वपि ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । आकृतिः आइदी; ऋष्यादित्वाद् इः; आउदी, ऋत्वादित्वाद् उः । सुकृतिः सुइदी, ऋष्यादौ कृति शब्दपाठात् । संवृतिः संवुदी । प्रतिपत्तिः पदिवत्ती, 'प्रतिसर०' (३३) इति तु न, ऋत्वादिपाठेन बाधात् । वसतिः वसही, 'वसति-भरत०' (८१) इति हः ।

यष्ट्यां लः ॥ १७६ ॥

आदेर्लः स्यात् । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जापवादः । यष्टिः लट्टी । कीर्त्तिः कित्ती, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति टे प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । मूर्त्तिः मुत्ती । वितर्दिः विअड्डी । विच्छर्दिः विच्छड्डी । उभयत्रापि 'गर्दभ०' (?) इति डः, 'शेषा-SSदेश०' (३५) इति द्वित्वम् । कुक्षिः कुच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः । स्थितिः थिई । मनस्विनी मणंसिणी, समृद्ध्यादित्वाद् वा आकारः, वक्रादित्वादनुस्वारः ।

ईदूतोर्ह्रस्वः ॥ १७७ ॥

सम्बुद्धौ । [ हे मनस्विनि ] हे माणंसिणि । मनस्विनीम् माणंसिणिं, 'अमि ह्रस्वः' (१५८) इति ह्रस्वः । वल्ली वेल्ली, शय्यादित्वाद् एकारः ।

चतुर्थी-चतुर्दशोस्तुना ॥ १७८ ॥

अनयोस्तुशब्देन सह आदेः अतः ओत्वं वा स्यात् । चतुर्थी चोत्थी चउत्थी । चतुर्दशी चोदही चउदही । 'दशादिषु०' (१००) इति हः । पृथिवी पुहवी, ऋत्वादित्वाद् उः, 'अत् पथि०' (१६५) इति अः ।

उः पद्म-तन्वीसमेषु ॥ १७९ ॥

पद्मशब्दे तन्वी इत्येवंरूपेषु च युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य उकारः । गुर्वी गरुई, मुकुटादित्वाद् अः । शफरी सभरी, 'श-षोः सः' (४४) 'फो भः' (९१) । अङ्गुरी अङ्गुली, 'हरिद्रादीनां०' (६०) इति रेफस्य लः ।

विसिन्यां भः ॥ १८० ॥

आदेः । विसिनी भिसिणी । स्त्रीलिङ्गनिर्देशः किम् ? विसं । षष्ठी छट्टी, 'षट्-शावक०' (९९) इति छः । सप्तमी सत्तमी । कर्त्तरी कत्तरी, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । लक्ष्मी लच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः ।

पः स्यात् । रुक्मिणी रुक्मिणी । श्रीः सिरी । हीः हिरी, 'इः श्री-ही' (३२) इति विप्रकर्ष-यौ । लघ्वी लहुई, 'ख-घ०' (५९) इति हः, 'पञ्च०' (१७९) इति विप्रकर्षः । तन्वी तणुई । नदी नई । हे नह । पृष्ठं पुट्टी अक्षि अच्छी । वधूः वहु । हे बहु इत्यादि ।

मातुरात् ॥ १८२ ॥

मातृशब्दसम्बन्धिन ऋकारस्य आत् स्यात् । माता माआ । हे मा इत्यादि ।

॥ इति अजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

लोपोऽरण्ये ॥ १८३ ॥

आदेरतः ।

सोर्बिन्दुर्नपुंसके ॥ १८४ ॥

नपुंसके तिष्ठतः सोः अनुस्वारः स्यात् । अरण्यं रण्णं ।

इज्जस्-शसोर्दीर्घश्च ॥ १८५ ॥

नपुंसके वर्त्तमानयोः जस्-शसोः इदादेशः स्यात्, पूर्वस्य दीर्घश्च अरण्यानि रण्णाई । अरण्यं रण्णं । अरण्यानि रण्णाई । अरण्येन रण्णेण पुंवत् । हे अरण्य हे रण्ण, 'नाऽऽमन्त्रणे०' (२५) इति निषेधाद् बिन्दुर्न किन्तु 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

ओ बदरे देन ॥ १८६ ॥

अत्र दकारेण सह आदेरत ओत्वं स्यात् । बदरं बोरं इत्यादि ।

उदूखले द्वा वा ॥ १८७ ॥

अत्र दूशब्देन सह आदेः ओद् वा स्यात् । उदूखलं ओखलं उदूहलं ।

उलूहले ल्वा वा ॥ १८७A ॥

उलूहलशब्दे लू शब्देन सह आदेः उकारस्य ओकारो वा स्यात् । उलूहलं ओहलं । इति पाठान्तरम् ।

उदूतो मधूके ॥ १८८ ॥

अत्र मधूकशब्दे ऊकारस्य उत् स्यात् । मधूकं महुअं ।

जङ् दुङ्कुल वा लस्य । द्वित्वम् ॥ १८९ ॥

दुङ्कुलशब्दे ऊकारस्य अकारो वा स्यात्, तत्सन्नियोगेन च लस्य द्वित्वम् । दुङ्कुलं दुङ्कुलं दुङ्कुलं ।

एङ्गपुरे ॥ १९० ॥

नूपुरशब्दे ऊकारस्य एत् स्यात् । अत्र 'आदेः' इति प्रयोजनाभावाद् नानुवर्तते । नूपुरं णेउरं । ऋणं रिणं, 'ऋ रिः' (?) इति रि । हृदयं हिअयं, ऋष्यादित्वाद् इः । वृन्दावनं वुंदावणं, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति प्राप्ते ऋत्वादित्वाद् उः ।

लृतः कृत इलि ॥ १९१ ॥

कृतशब्दे लृकारस्य इलिः स्यात् । कृतं किलित्तं । त्रैलोक्यं तेल्लोकं, 'ऐत् एत्' (६९) इति एत्, सेवादित्वात् द्वित्वम्, द्वित्ववैकल्यात् पक्षे तेल्लोकं । शैल्यं सेत्तं । सैरं सइरं । वैरं वइरं । द्वयोरप्यैकारस्य 'दैत्यादिषु' (६८) इति अइः ।

दैवे वा ॥ १९२ ॥

दैवशब्दे ऐकारस्य अइरित्यादेशो वा स्यात् ।

नीडादिषु च ॥ १९३ ॥

एषु अनादौ तिष्ठतो हलो वा द्वित्वम् । दैवं देवं देवं दइवं । नीडस्रोत प्रेम व्याहृत जनक यौवन दैव इत्यादयः नीडादिः ।

इत् सैन्धवे ॥ १९४ ॥

अत्र एकारस्य इकारः स्यात् । एत्वापवादः । सैन्धवं सिन्धवं ।

ईद् धैर्ये ॥ १९५ ॥

अत्र एकारस्य ईत् स्यात् । एत्वापवादः ।

तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः ॥ १९६ ॥

एषु र्यस्य रः । धैर्यं धीरं । तूर्यं तूरं । सौन्दर्यं सुन्देरं, 'उत् सौन्दर्यादिषु' (७६) इति उः । आश्चर्यं अच्छेरं, 'अत्स' (१२५) इति छः । पर्यन्तं परंतं । त्रिष्वपि शय्यादित्वाद् एत्वम् । यौवनं जोवणं, 'औत् ओत्' (७३) इति ओत्, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, नीडादित्वात् द्वित्वम्, 'नो णः' (९) इति णः ।

आच्च गौरवे ॥ १९७ ॥

गौरवशब्दे आ अउ ओ इत्येते स्युः । गौरवं गारवं गउरवं गोरवं  
इत्यादि । गर्भितं गर्भिणं, 'गर्भिते णः' (८०) इति णः ।

उस्य च ॥ १९८ ॥

डकारस्यायुक्तस्य अनादिभूतस्य लः स्यात् । दाडिमं दालिमं । 'प्रायः  
इत्यनुवृत्तेः कचिद् दाडिमं इत्यपि ।

ठो ढः ॥ १९९ ॥

अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ठस्य ढः स्यात् । जठरं जढरं । कठोरं कढोरं  
अंकोठे छः ॥ २०० ॥

अत्र ठस्य छः स्यात् । अंकोठं अंकोछं । सफलं सभलं, 'फो भः  
(९१) इति भः । सुखं सुहं, 'ख-ग०' (५९) इति हः । करुणं कलुणं  
हरिद्रादित्वाद् रेफस्य लः ।

श्मश्रु-श्मशानयोरादेः ॥ २०१ ॥

अनयोरादेर्वर्णस्य लोपः स्यात् । श्मशानं मसाणं ।

चौर्यसमेषु रिअं ॥ २०२ ॥

एषु र्यस्य रिअं इत्यादेशः स्यात् । चौर्यं चोरिअं । शौर्यं सोरिअं  
'औत ओत्' (७३) इति ओत् । वीर्यं वीरिअं ।

पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु छः ॥ २०३ ॥

एषु र्यस्य छः स्यात् । पर्यस्तं पल्लत्थं, 'स्तस्य थ' (५७) इति थः  
'शेषादेशः' (३५) इति द्वित्वम् । पर्याणं पल्ल्हाणं । सौकुमार्यं सोअमल्लं  
मुकुटादित्वाद् अः ।

पत्तने ॥ २०४ ॥

युक्तस्य टः । पत्तनं पट्टणं । क्षीरं छीरं, अक्षयादित्वात् छः । श्लक्ष्णं  
सण्हं । तीक्ष्णं तिण्हं । 'ह-स्त्र०' (४९) इति णहादेशः ।

चिह्ने धः ॥ २०५ ॥

युक्तस्य धः स्यात् । णहापवादः । चिह्नं चिन्धं, प्रायिकमेतत्, चिण्हं  
प्पस्य फः ॥ २०६ ॥

तालवृत्तः २०॥ २०७ ॥

युक्तस्य णः स्यात् । तालवृन्तकं तालवेण्ठअं तलवेण्ठअं ।

आम्र-ताम्रयोर्बः ॥ २०८ ॥

अनयोरनादेः वः स्यात् । आम्रं अंबं । ताम्रं तंबं । क्लिष्टं किलिष्टं ।  
रत्नं रअणं । 'क्लिष्ट-श्लिष्टं' ( १७१ ) इति विप्रकर्षः तत्स्वरता च ।

उदुम्बरे दोर्लोपः ॥ २०९ ॥

अत्र दु इत्यस्य लोपः स्यात् । उदुम्बरं उंबरं ।

कालायसे यस्य वा ॥ २१० ॥

अत्र यस्य वा लोपः स्यात् । य इति विशिष्टग्रहणम् । कालायसं  
कालासं कालाअसं, लोपाभावपक्षे 'क-ग०' ( १० ) इति यकारमात्रलोपः ।

मलिने लिनोरिलौ वा ॥ २११ ॥

मलिनशब्दे लि इत्यस्य इः स्यात्, न इत्यस्य लः स्याद् वा । मलिनं  
मइलं मलिणं ।

गृहे घरोऽपतौ ॥ २१२ ॥

गृहशब्दस्य घर इत्ययमादेशः स्यात्, न तु पतौ परे । गृहं घरं ।  
अपताविति किम् ? गृहपतिः गृहवई । पीतं पीअं । धनं धणं ।

वृन्दे वो रः ॥ २१३ ॥

वृन्दशब्दे वात् परः स्वार्थे रो वा स्यात् । व्रंदं वंदं ।

आलाने न-लोः ॥ २१४ ॥

अत्र नकार-लकारयोः स्थितिपरिवृत्तिः स्यात् । आलानं आणालं ।

दाढादयो बहुलम् ॥ २१५ ॥

दाढा इत्यादयः शब्दाः बहुलं निपात्यन्ते । चातुर्यं चाउलिअं । पृष्टं  
पुष्टं । इदानीं एणिहं । दुहिता दिद्धी । मण्डूकः मण्डूरो । कमलं कंदोद्धो ।  
गोदावरी गोला । ललाटं लडालं णिडालं । आकृतिगणोऽयम् । 'सु-भिसू०'  
( १३८ ) इति दीर्घे प्राप्ते -

न नपुंसके ॥ २१६ ॥

क्लीबे प्रथमैकवचने दीर्घो न । वारि वारिं । वारीणि वारीहं । पुनस्त-  
द्वत् । शेषं पुंवत् ।

युक्तस्य ठः स्यात् । अस्थि अट्ठिं । सक्थि सत्थिं । अक्षि अच्चिंछ  
गुरु गरुअं, मुकुटादित्वाद् अः । श्मश्रुः मंसू, 'श्मश्रु-श्मशानयोः०  
(२०१) इति शकारलोपः अश्नु अंसू, वक्रादित्वाद् अनुस्वारः । मधु महं  
॥ इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

\*

अनङ्गान् अणङ्गओ, विष्णुवत् । चतुरशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः  
चतुरश्चत्तारो चत्तारि ॥ २१८ ॥

चतुःशब्दस्य जसा शसा च सह एतावादेशौ स्याताम् । चत्वार  
चत्तारो चत्तारि । चतुरः चत्तारो चत्तारि । चतुर्भिः चऊर्हि । चतुर्भ्यं  
चऊर्हितो चऊसुत्तो । चतुर्णां चउण्हं । चतुर्षु चऊसु ।

किमः कः ॥ २१९ ॥

स्पष्टम् । कः को । के के, 'सर्वादेः०' ( १३५ ) इति एत्वम् ।

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यो इणा वा ॥ २२० ॥

एभ्यः परः टा इणा इति वा स्यात् । केन कइणा केण ।

त्तो दो डसेः ॥ २२१ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डसेः त्तो दो इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । कस्मात्  
कत्तो कदो का कादो कादु काहि । केभ्यः कार्हितो कासुत्तो ।

किं-यत्-तद्भ्यो डस आसः ॥ २२२ ॥

एभ्यः परस्य डस आस इत्यादेशो वा स्यात् । कस्य कास करस ।

आम एसिं ॥ २२३ ॥

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यः परस्य आम एसिं इत्यादेशो वा स्यात् ।  
केषां केसिं काणं ।

डेर्हि ॥ २२४ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डेः सप्तम्येकवचनस्य हिं इत्यादेशो वा स्यात् ।  
कस्मिन् कर्हि कस्मिन् कस्मिन् कत्थ ।

आहे इआ काले ॥ २२५ ॥

किं-यत्-तद्भ्यः परस्य डेः काले वाच्ये आहे इआ इत्येतावादेशौ वा  
स्याताम् । कदा काहे कइआ कर्हि कस्मिन् कस्मिन् कत्थ । केषु केषु ।

इदम् इमः ॥ २२६ ॥

इदम्शब्दस्य इम इत्यादेशः स्यात् सुपि । अयं इमो । इमे इमे । इमं इमं । इमान् इमा । अनेन इमेण इमिणा, 'इदमेतत्०' (२२०) इति इणादेशः । एभिः इमेहिं । अस्मात् इमादो इमादु इमाहि । एभ्यः इमाहितो इमासुत्तो ।

स्स-स्सिमोरदू वा ॥ २२७ ॥

इदम्शब्दस्य अ इत्यादेशो वा स्यात् स्से स्सिमि च । अस्य अस्स इमस्स । एषां इमेसिं इमाणं ।

डेदन हः ॥ २२८ ॥

इदम्शब्दस्य दकारेण डेः ह इत्यादेशो वा स्यात् । पक्षे यथाप्राप्तम्

न तथः ॥ २२९ ॥

इदम्ः परस्य डेः तथ इत्यादेशो न स्यात् । अस्मिन् अस्सिं इमस्सिं इह इमस्मि । एषु इमेसु ।

राज्ञश्च ॥ २३० ॥

राजन्शब्दस्य आ इत्ययमादेशः स्यात् सौ । राजा राआ 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

जस्-शस्-डसो णो ॥ २३१ ॥

राज्ञः परेषामेषां णो इत्यादेशः स्यात् ।

आ णो-णमोरडसि ॥ २३२ ॥

णो-णमोः परयोः राज्ञो जस्य आ स्यात् । राजानः राआणो ।

आमन्त्रणे वा बिन्दुः ॥ २३३ ॥

राजन्शब्दस्यामन्त्रणेऽनुस्वारो वा स्यात् सौ । हे राजन् हे राअ हे राअ । राजानं राअं । 'शेषो०' (१३७) इति अदन्तवद्भावः ।

शस एत् ॥ २३४ ॥

राज्ञः परस्य श ए इत्यादेशः स्यात् । राज्ञः राए राआणो ।



डसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च ॥ २३६ ॥

राज्ञः परस्य डसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वं वा स्यात् अन्त्यस्य च लोपः । राज्ञा रण्णा । पक्षे -

इदद्वित्वे ॥ २३७ ॥

डसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वाभावपक्षे राज्ञ इत्वं स्यात् । राइणा । राजभिः राएहिं 'शेषो०' (१३७) इत्यदन्तवद्भावः । राज्ञः राआ राआदो राआद् राआहि । राजभ्यः राआहितो राआसुत्तो । राज्ञः रण्णो राइणो ।

आमो णं ॥ २३८ ॥

राज्ञ उत्तरस्य आमः णं इत्यादेशः स्यात् । राज्ञां राआणं । राज्ञि राअम्मि राए । राजसु राएसु ।

आत्मनो अप्पाणो वा ॥ २३९ ॥

आत्मनः अप्पाण इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ॥ २४० ॥

आत्मनः अनादेशे राजवत् कार्यं स्यात्, [ इत्व-द्वित्वे वर्जयित्वा ] आत्मा अप्पाणो अप्पा । 'राज्ञश्च' (२३०) इति आकार उक्तः सोऽत्रापि स्यात् । आत्मनः अप्पाणो । आत्मानं अप्पं । आत्मनः अप्पणो । आत्मन अप्पणा । आत्मभिः अप्पेहिं । आत्मनः अप्पा अप्पादो अप्पाद् अप्पाहि । आत्मभ्यः अप्पाहितो अप्पासुत्तो । आत्मनः अप्पणो आत्मनां अप्पाणं । आत्मभिः (०त्मनि?) अप्पे अप्पम्मि । आत्मसु अप्पेसु ।

ब्रह्माद्या आत्मवत् ॥ २४१ ॥

ब्रह्मन् युवन् इत्यादयः शब्दाः आत्मवत् साधवः स्युः । ब्रह्म ब्रह्मा ब्रह्माणो । युवा जुवा जुवाणो । अध्वा अद्धा अद्धाणो । एवमादयं लक्ष्यानुसारतो ज्ञेयाः ।

न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुंसि ॥ २४२ ॥

नश्च मश्च न-मौ अन्ते यस्य इति विग्रहः । एते पुंसि प्रयोक्तव्याः

अनयोर्घः तकारः तस्य सकारः स्यात् सौ । सः सो । ते ते । तं तं ।  
तान् ता । तेन तद्गुणा तेण । तैः तेहिं ।

तद ओश्च ॥ २४४ ॥

तदः परस्य ङसेः ओ इत्ययमादेशो वा स्यात् । तस्मात् तओ तत्तो  
तदो तादो तादु ताहि । तेभ्यः ताहितो तासुत्तो ।

ङसा से ॥ २४५ ॥

तदो ङसा सह से इत्यादेशो वा स्यात् । तस्य से तास तस्स ।

आमि सिं ॥ २४६ ॥

तद आमा सह सिं इत्यादेशो वा स्यात् । तेषां सिं तेसिं ताणं ।  
तस्मिन् तहिं तस्सिं तम्मि तत्थ । तदा तहे तद्गुआ । तेषु तेसु । एवं यः जो ।

एतदः सावोत्वं वा ॥ २४७ ॥

एतद ओत्वं वा स्यात् सौ । एषः एसो एस, नित्यप्राप्तविभाषेयम् ।  
एते एते । एतं एतं । एतान् एता । एतेन एदिणा एदेण । एतैः एदेहिं ।

त्तो ङसेः ॥ २४८ ॥

एतदः परस्य ङसेः त्तो इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

त्तो-त्थयोस्तो लोपः ॥ २४९ ॥

एतच्छब्दस्य तकारस्य लोपः स्यात् त्तो-त्थयोः परयोः । एतस्मात्  
एत्तो एदादो एदादु एदाहि । एतस्मिन् एत्थ एतस्सिं एतम्मि ।

पदस्य ॥ २५० ॥

— इत्यधिकृत्य ।

युष्मदस्तं तुमं ॥ २५१ ॥

युष्मदः पदस्य तं तुमं इत्यादेशौ स्यातां सावा सह । त्वं तं तुमं ।

तुज्जे तुम्हे जसि ॥ २५२ ॥

युष्मदः पदस्य तुज्जे तुम्हे इत्येतावादेशौ वा स्तः जसा सह । यूयं  
तुज्जे तुम्हे ।

त्तं वाऽमि ॥ २५३ ॥

युष्मदः पदस्य त्तं इत्यादेशो वा स्यात् अमा सह । त्वाम् त्तं तुमं ।

युष्मदः पदस्य वो तुज्जे तुम्हे इत्येते आदेशाः स्युः शसा सह ।  
युष्मान् वो तुज्जे तुम्हे ॥

टा-ङ्योस्तइ तए तुमए तुए ॥ २५५ ॥

युष्मदुत्तरयोः टा ङि इत्येतयोः तइ तए तुमए तुए इत्येते आदेशाः  
स्युः प्रकृत्या सह । त्वया तइ तए तुमए तुए ।

आङि च ते दे ॥ २५६ ॥

युष्मदः पदस्य आङा सह ते दे इत्येतावादेशौ स्तः । आङ् इति  
टासंज्ञा प्राचाम् ।

तुमाइ च ॥ २५७ ॥

अयमपि स्यात् । ते दे तुमाइ ।

तुज्जेहिं तुम्हेहिं तुब्मेहिं भिसि ॥ २५८ ॥

युष्मदः पदस्य एते आदेशाः स्युः भिसा सह । युष्माभिः तुज्जेहिं  
तुम्हेहिं तुब्मेहिं । अत्र 'तुज्जे तुम्हे तुब्मे' इति सुवचम् 'शिषो०  
(१३७) इत्यनेन 'भिसो हिं' (१७) इति हिमादेशस्यातिदिष्टत्वात् ।

ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ॥ २५९ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङस्या सह । त्वत् तत्तो तइत्तो तुमादं  
तुमादु तुमाहि ।

तुम्हाहितो तुम्हासुत्तो भ्यसि ॥ २६० ॥

युष्मद एतौ आदेशौ स्यातां पञ्चमीबहुवचनेन सह । युष्मा  
तुम्हाहितो तुम्हासुत्तो । अत्रापि 'तुम्हा भ्यसि' इत्येव सुवचम् । एवम  
[सत्]शब्देऽपि ज्ञेयम् ।

ङसि तुमो-तुह-तुज्ज-तुम्ह-तुब्भाः ॥ २६१ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङसा सह । तव तुमो तुह तुज्ज तुम्ह  
तुब्भ ।

वो भे तुज्ज्ञाणं तुम्हाणमामि ॥ २६२ ॥

युष्मद एते स्युरामा सह । युष्माकम् वो भे तुज्ज्ञाणं तुम्हाणं ।

डौ तुमम्मि ॥ २६३ ॥

युष्मदः तुमम्मि इत्यादेशः स्यात् इया सह । त्वयि तुमम्मि तइ  
तए तुमए तुए ।

तुज्जेसु तुम्हेसु सुपि ॥ २६४ ॥

युष्मद एतौ स्यातां सुपा सह । युष्मासु तुज्जेसु तुम्हेसु ।

अस्मदो हमहमहअं सौ ॥ २६५ ॥

अस्मद एते स्युः प्रथमैकवचनेन सह । अहम् हं अहं अहअं ।

अहम्मिरमि च ॥ २६६ ॥

अस्मदः प्रथमैकवचन-द्वितीयैकवचनाभ्यां सह आदेशः स्यात् ।  
अहं अहम्मि ।

अम्हे जस् शसोः ॥ २६७ ॥

अस्मदः अयमादेशः स्याद् जसा शसा च सह । वयं अम्हे ।

मं ममं ॥ २६८ ॥

अस्मद एतावादेशौ स्याताम् । माम् अहम्मि मं ममं । 'अहम्मि  
रमि च' (२६६) इत्यतो 'अमि' इत्यनुवर्त्तते । 'चानुकृष्टं नोत्तरत्र' इति  
परिभाषया चानुकृष्टानां हं-आदीनां नानुवर्तनम् ।

णे शसि ॥ २६९ ॥

अस्मदो णे इत्यादेशः स्यात् शसा सह । अस्मान् अम्हे णे ।

आडि मे ममाइ ॥ २७० ॥

अस्मदः एतौ स्तः टया सह । मया मे ममाइ ।

डौ च मइ मए ॥ २७१ ॥

अस्मदः एतौ स्तः डि-टाभ्यां सह । मया मइ मए ।

अम्हेहिं भिसि ॥ २७२ ॥

अस्मदः अयं स्याद् भिसा सह । अस्माभिः अम्हेहिं ।

मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि डसौ ॥ २७३ ॥

अम्हेहिंतो अम्हेसुत्तो भ्यसि ॥ २७४ ॥

अस्मद एतौ स्यातां भ्यसा मह । अस्मत् अम्हेहिंतो अम्हेसुत्तो ।

मे मम मह मज्झ डसि ॥ २७५ ॥

अस्मद एते स्युः डसा सह । मम मे मम मह मज्झ । झस्य  
धत्वमपीच्छन्ति केचित्, मद्ध ।

मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि ॥ २७६ ॥

अस्मद एते स्युरामा सह । अस्माकम् मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे ।

ममम्मि डौ ॥ २७७ ॥

अस्मदः अयं स्याद् डया सह । मयि ममम्मि मह मए ।

अम्हेसु सुपि ॥ २७८ ॥

अस्मदः अयं स्यात् सुपा सह । अस्मासु अम्हेसु ।

शरदो दः ॥ २७९ ॥

अत्रान्त्यहलो दः स्यात् । लोपापवादः । शरत् सरदो, 'नसान्तं'  
( २४२ ) इति पुंवद्भावः ।

दिक्-प्रावृषोः सः ॥ २८० ॥

अनयोरन्त्यस्य सः स्यात् । लोपापवादः । प्रावृद् पाउसो । रत्नमुद्  
रअणम् ।

अदसो दो मुः ॥ २८१ ॥

अदसो दकारस्य मु इत्यादेशः स्यात् सुपि ।

हश्च सौ ॥ २८२ ॥

अदसो दस्य हः स्यात् सौ । असौ अह अमू । हादेशोऽयं ओत्व-  
आत्व-विन्दून् परत्वाद् बाधते । अमी अमुए अमुणो । अमुम् अमुं  
अमून् अमूओ । अमुना अमुणा । अमीभिः अमूहिं । अमुष्मात् अमूदो  
अमूदु अमूहि । अमीभ्यः अमूहिंतो अमूसुत्तो । अमुष्य अमुस्स  
अमीषाम् अमुणं । अमुष्मिन् अमुरिस् अमुम्मि अमुत्थ । अमीषु अमूसु  
तपः तवो । यशः जसो । सरः सरो ।

॥ इति हलन्ताः प्रलिङ्गाः ॥

रो रा ॥ २८४ ॥

स्त्रियामन्त्यस्य रेफस्य रा इत्ययमादेशः स्यात्। धूः धुरा। गीः गिरा।  
चतस्रः चत्तारो चत्तारि। का काआ की।

इद्वयः स्सा-से ॥ २८५ ॥

इकारान्तेभ्यः किं-यत्-तद्भ्यो ङसः स्सा से इत्येतावादेशौ वा  
स्याताम्। कस्याः किस्सा कीसे। पक्षे कीइ कीए कीअ कीआ, 'टाङ्स०'  
(१६०) इति आदेशाः। 'आदीतौ०' (१७४) इति आकारपक्षे काइ  
काए। इयं इमा। युष्मदस्मदोर्लिङ्गत्रये सदृशं रूपम्। या जा जी। याः  
जाउ जाओ जा। यस्याः जिस्सा जीसे जीइ जीए जीअ जीआ जाइ  
जाए। वाक् वाआ।

न विद्युति ॥ २८६ ॥

अन्त्यस्य हल आकारो न स्यात्। विद्युत् विज्जू। दिक् दिसा,  
'दिक्प्रावृषोः०' (२८०) इति सः। असौ दिक् अम् दिसा। अम्ः  
अओ। मूशेषमूकारस्त्रीलिङ्गवत्।

॥ इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

\*  
नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ॥ २८७ ॥

क्लीबे सविभक्तिकस्येदमः इदं इणं इणमो इत्यादेशाः स्युः स्वमोः  
परयोः। इदम् इदं इणं इणमो। इमानि इमाइं। पुनस्तद्वत्। शेषं  
पुंवत्। किम् किं। कानि काइं। पुनरपि। शेषं पुंवत्। तत् तं, '०अनपुं-  
सके' (२४३) इत्युक्ते न सादेशः। तानि ताइं। एतत् एदं। यत् जं।  
यानि जाइं। अदः अह अमुं। अमूनि अमूइं। 'न सान्त०' (२४२)  
इति प्राप्ते—

न शिरो-नभसी ॥ २८८ ॥

एतौ पुंसि न स्याताम्। शिरः सिरं, 'अन्त्यस्य०' ( ) इति  
सोलोपः।

॥ इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

\*

आधकाराऽयम् ।

हुं दान-पृच्छा-निर्धारणे ॥ २९० ॥

हुमित्ययं निपातसंज्ञः स्याद् दाने पृच्छायां निर्धारणे च ।

चिअ चेअ अवधारणे ॥ २९१ ॥

चिअ चेअ इत्येतौ निपातसंज्ञौ स्तः निश्चये ।

ओ सूचना-पश्चात्ताप-विकल्पेषु ॥ २९२ ॥

ओ इत्ययं निपातः सूचनायां पश्चात्तापे विकल्पे च ।

इर-किर-किला अनिश्चिताख्याने ॥ २९३ ॥

अयो निपाताः संशयाख्याने ।

हु-क्खु निश्चय-वितर्क-सम्भावनेषु ॥ २९४ ॥

हु क्खु इत्येतौ निपातौ निश्चये वितर्के सम्भावनायां च ।

णवरः केवले ॥ २९५ ॥

निपातः केवलेऽर्थे ।

णवरि आनन्तर्ये ॥ २९६ ॥

णवरि इति आनन्तर्ये निपातः ।

किणो प्रश्ने ॥ २९७ ॥

किणो इत्ययं पृच्छायां निपातः ।

अव्वो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु ॥ २९८ ॥

अव्वो इत्ययं निपातः दुःखे सूचनायां सम्भावनायां च ।

अलाहि निवारणे ॥ २९९ ॥

अलाहि इत्ययं निपातः निषेधे ।

अइ वले सम्भाषणे ॥ ३०० ॥

अइ वले एतौ निपातौ वचने ।

अव्वो अम्मो दुःखा-ऽऽक्षेप-विस्मापनेषु ॥ ३०१ ॥

एतौ निपातौ दुःखे आक्षेपे विस्मापने च । अत्र 'अव्वो दुःख-सूच-  
ना-सम्भावनेषु' 'अम्मो च दुःखाऽऽक्षेप-विस्मापनेषु' इति सूत्रयितुं  
इच्छामिति केचित् । वयं तु तत्रापरसूत्रे 'दुःख' शब्दमपि त्यजामः, पूर्वसूत्रे  
दुःखशब्दस्य स्वरितत्वेनानुवर्त्तनात्, 'स्वरितेनाधिकारः' इति पाणिनीये

परिभाषितत्वात् समस्तपदादेकदेशानुवृत्तिस्तु 'विङति च' इत्यत्र 'न धातुलोपः'—इत्यतो धातुग्रहणानुवृत्तिवत् ।

णवि वैपरीत्ये ॥ ३०२ ॥

अयं वैपरीत्ये निपातः ।

सू कुत्सायाम् ॥ ३०३ ॥

सू इत्ययं निपातो निन्दायाम् ।

रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु ॥ ३०४ ॥

रे अरे हिरे इति त्रयः क्रमेण सम्भाषणे रतिकलहे आक्षेपे च निपाताः । अत्र च 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' इत्युक्तत्वाद् यथासंख्यम्

म्मिव-मिअ-विआ इवार्थे ॥ ३०५ ॥

म्मिव मिअ विअ इत्येते इवार्थे निपातसंज्ञकाः ।

अज्ज आमन्नणे ॥ ३०६ ॥

अज्ज इत्ययं निपातः आमन्नणेऽर्थे, सम्बोधने इत्यर्थः ।

शेषः संस्कृतात् ॥ ३०७ ॥

उक्तादन्यः संस्कृतादवगन्तव्यः ।

इवे वः ॥ ३०८ ॥

इवशब्दे व्व इति निपात्यते । स इवायम् सो व्व इमो । विअ इति वक्तव्यम्, सो विअ इमो ।

अपौ विः ॥ ३०९ ॥

अपिशब्दे विः इति निपात्यते । सोऽपि देव इव सो वि देवो व्व ।

ओदवा-ऽपयोः ॥ ३१० ॥

अव अप इत्येतयोः ओ इत्यादेशो वा स्यात् । अवगाहः ओगाहो अवगाहो । अपनयः ओणओ अवणओ, 'पो वः' (८५) इति वः ।

इतेस्तः पदादेः ॥ ३११ ॥

पदादेः इतिशब्दस्य यः तकारः ततः परस्य इकारस्य अ इत्यादेशः स्यात् । इति विलपन् इअ विलअन्तो । त इति किम् ? आदेरिकारस्य मा यत् । तदादेरिति किम् ? इत्येतिरिति वक्तव्यम् (१) । तिम इति नमति



कृष्णपरो यो द्विधाशब्दः तस्य आदेः इकारस्य ओकारः स्याद् उश्च  
द्विधाकृतम् दोहाइअं दुहाइअं । एवम् एअं एवं, एव एअ एव, यावदादि  
त्वाद् वा बलोपः ।

तल्-त्वयोर्दा-त्तणौ ॥ ३१३ ॥

पाणिनीये भावार्थे [ यौ ] तल्-त्वौ विहितौ तयोः क्रमेण दां त्तण  
इत्येतावादेशौ स्याताम् । कृष्णता कण्हदा, 'तलन्तं स्त्रियाम्' ( )  
इति लिङ्गानुशासनबलात् स्त्रीत्वम् । कृष्णत्वम् कण्हत्तणं, 'त्वान्तं  
स्त्रीवम्' ( ) इति षण्डत्वम् ।

आल्विल्लोलवत्तेत्ता मतुपः ॥ ३१४ ॥

तदस्यास्त्यस्मिन्नित्यर्थे विहितो मतुप् तस्य आल्लु इल्ल उल्ल आल  
वत्त इत्त इति षडादेशाः स्युः । निद्रावान् णिद्दाल्ल । मालावान् मालाइल्लो  
विकारवत् विआरुल्लं । धनवान् धणालो । गुणवान् गुणवत्तो । मानवान्  
माणइत्तो, 'सन्धावचा०' (१) ।

विद्युत्-पीताभ्यां वा लः ॥ ३१५ ॥

आभ्यां लप्रत्ययः स्यात् । विद्युत् विज्जुली, विद्युच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्ग  
त्वात् स्त्रीत्वम्, पक्षे विज्जू । पीतं पीअलं पीअं ।

॥ इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरव-  
विरचिते प्राकृतानन्दे प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

[ अथ द्वितीयः परिच्छेदः । ]



भू सत्तायाम् ।

भुवो हो-हुवौ ॥ ३१६ ॥

भूधातोः हो हुव इत्येतावादेशौ स्याताम् ।

ते-तिपोरिदेतौ ॥ ३१७ ॥

धातोः परयोः ते तिप् इत्येतयोरिदेतौ स्याताम् । यथासंख्यं नेष्यते ।

अत ए से ॥ ३१८ ॥

नियमार्थं वचनम् । त-तिपोः सिप्-थासोर्यौ ए से इत्येतावादेशौ विहितौ तावकारान्तादेव स्याताम्, नान्यस्मात् ।

लादेशे वा ॥ ३१९ ॥

लकारादेशे परे अत एत्वं वा स्यात् । भवति = होइ हुवइ हुवए हुवेइ हुवेए ।

वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोज्जं जा वा ॥ ३२० ॥

त्तमाने भविष्यदनद्यतने च विध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्जं जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । होज्ज होज्जा । लि-लो-लुट्-लङ् विध्यादयः ।

मध्ये च ॥ ३२१ ॥

वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातु-प्रत्यययोर्मध्ये ज्जं जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । भवति = होज्जइ होज्जेइ होज्जाइ, पक्षे पूर्व-मुक्तम् ।

नानेकाचः ॥ ३२२ ॥

वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः परतो मध्ये ज्जं जा इत्येतावादेशौ न स्याताम् । भवति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा । एवमग्रेऽपि पूर्वोक्तलेषु प्रथम-द्वितीय-तृतीयेषु पुरुषेषु एकवचन-द्विवचन-बहुवचनादावप्यवगन्तव्यम् ।

न्ति-हेत्था-मो-मु-मा बहुषु ॥ ३२३ ॥

तिङो बहुवचनानामेते आदेशाः स्युः । प्रथमपुरुषबहुवचनस्य न्ति, मध्यमस्य ह इत्था एतौ, उत्तमस्य मो मु म एते इति विवेकः । भवतः भवन्ति = होन्ति हुवन्ति हुवेन्ति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा होज्ज होज्जा

थास्-सिपोः सि से ॥ ३२४ ॥

धातोः परयोः थास्-सिपोः सि से इत्येतावादेशौ स्याताम् ।  
यथासंख्यं न । भवसि=होसि हुवसि हुवेसि हुवसे हुवेसे । भवथः भवथ-  
होह होइत्था हुवह हुवेह हुवइत्था हुवेइत्था हुवित्था, 'सन्धा०' (१)  
इत्यकारलोपो वा ।

इट्-मयोर्मिः ॥ ३२५ ॥

इट् मि इत्येतयोः मिः स्यात् ।

अत आ मिपि वा ॥ ३२६ ॥

अकारस्य आकारो वा स्याद् मिपि परे । भवामि=होमि हुवामि  
हुवेमि हुवमि ।

इच्च बहुषु ॥ ३२७ ॥

मिपो बहुवचने परे अत इः स्याद् आ च । भवावः भवामः=होमो  
होमु होम हुवामो हुविमो हुवेमो हुवमो हुवासु हुविषु हुवेसु हुवसु  
हुवाम हुविम हुवेम हुवम । इति लट् । अथ लिट्-

ईअ भूते ॥ ३२८ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशः स्यात् । बभूव-  
हुवीअ ।

इअं भूते ॥ ३२९ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य इअं इत्यादेशः स्यात् । बभूव-  
हुविअं ।

एकाचो हीअ ॥ ३३० ॥

भूते काले एकाचो धातोः परस्य प्रत्ययस्य हीअ इत्यादेशः स्यात्  
बभूव=होहीअ । त्रीण्यपि रूपाणि प्रथम-मध्यमोत्तमैकवचन-द्विवचन  
बहुवचनेष्ववगन्तव्यानि ।

उ सु मु विध्यादिष्वेकस्मिन् ॥ ३३१ ॥

विध्यादेरेकवचनस्य क्रमेण उ सु मु इत्येते आदेशाः स्युः । बभूव-  
होउ हुवेउ हुवउ ।

न्तु ह मो बहुषु ॥ ३३२ ॥

विध्यादेर्बहुवचनस्य क्रमेण न्तु ह मो इत्येते आदेशाः स्युः । बभूवुः  
होवु हुवेवु हुववु । नन्तु-होम हुवेम हुवम=बभूव=होइ हुवे

हुवह, हविधानं इत्थ(त्था)वाधनार्थम् । बभूव-होमु हुवमु हुवमु । बभू-  
विम=होमो हुवेमो हुवमो । मोविधानं मु-मयोर्वाधार्थम् । इति लिट् ।  
अथ लृट्-

धातोर्भविष्यति हिः ॥ ३३३ ॥

भविष्यति काले धातोः परे हिः स्यात् । भविता=होहिइ हुवेहिइ  
हुवहिइ ।

एच्च क्त्वा-तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु ॥ ३३४ ॥

एषु अत एत्वं स्यात्, चादिश्च । हुविहिइ हुवेहिए हुवहिए हुविहिए  
होज्ज होज्जा हुवेज्ज हुवज्ज हुवज्जा होज्जहिइ होज्जेहिइ होज्जाहिइ होउ हुवेउ  
हुवउ । भवितारः=होहिंति हुवेहिंति हुविहिंति हुवहिंति होन्तु हुवेन्तु  
हुवन्तु । भवितासि=होहिसि हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे होसु  
हुवेसु हुवसु । भवितास्थ=होहिहा हुवेहिह हुवहिह होह हुवेह हुवह ।

उत्तमे स्सा हा च ॥ ३३५ ॥

भविष्यत्युत्तमे परे धातोः परौ स्सा हा इत्येतौ स्याताम् । चात् हिः ।

मिना स्सं वा ॥ ३३६ ॥

भविष्यति मिना सह धातोः परः स्सं वा स्यात् । भविष्यामि=  
होस्सामि हुवेस्सामि हुवस्सामि होहामि हुवेहामि हुवहामि हुवाहामि  
होहिमि हुवेहिमि हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं होसु हुवेसु  
हुवासु हुवसु ।

मो-मु-मैहि-स्सा-हित्था ॥ ३३७ ॥

भविष्यति मो-मु-मैः सह हिस्सा हित्था इत्येतावादेशौ वा स्याताम् ।  
भवितास्मः=होहिस्सा हुवेहिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था  
हुवेहित्था हुविहित्था हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो  
हुवस्सामो होहामो हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो  
हुवेहिमो हुविहिमो हुवाहिमो हुवहिमो होमो हुवेमो हुविमो हुवामो  
हुवमो । इति लृट् ।

अथ लृट् । भविष्यति=होहिइ हुवेहिइ हुवहिय हुवेहिए हुवहिए ।  
भविष्यन्ति=होहिन्ति हुवेहिन्ति हुवहिन्ति । भविष्यसि=होहिसि  
हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे । भविष्यथ=होहिह हुवेहिह-  
हुवहिह होहित्थ हुवइत्थ हुवित्थ । भविष्यामि=होस्सामि हुवेस्सामि

हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं । भविष्यामः = होहिस्सा हुवे-  
हिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था हुवेहित्था हुविहित्था  
हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो हुवस्सामो होहामो  
हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो हुवेहिमो हुविहिमो  
हुवाहिमो हुवहिमो होस्सामु हुवेस्सामु हुविस्सामु हुवस्सामु होहामु  
हुवेहामु हुविहामु हुवाहामु हुवहामु होहिमु हुवेहिमु हुविहिमु हुवाहिमु  
हुवहिमु होस्साम हुवेस्साम हुविस्साम हुवस्साम होहाम हुवेहाम  
हुविहाम हुवाहाम हुवहाम होहिम हुवेहिम हुविहिम हुवाहिम हुवहिम ।  
इति लट् ।

अथ लोट् - भवतु = होउ हुवेउ हुवउ । भवन्तु = होंतु हुवेन्तु हुवन्तु ।  
भव = होसु हुवेसु हुवसु । भवत = होह हुवेह हुवह । भवानि = होसु हुवेसु  
हुवासु हुवसु । भवाम = होमो हुवेमो हुवामो हुविमो हुवमो । इति  
लोट् । लोट्त्वद् लङ्-लिङाशीर्लिङः ।

अथ लृङ्-अभूत् = हुवीअ हुविअं होहीअ, एवं पुरुष-वचनेषु ।  
लृङ् लृट्त्वत् ।

प्रादेर्भवः ॥ ३३८ ॥

प्रादेः परस्य भुवो भव इत्यादेशः स्यात् । प्रभवति = पभवइ पभवए  
पभवेइ पभवेए । उद्भवति उब्भवइ । प्रतिभवइ पडिभवइ, 'प्रतिसर०'  
( ३३ ) इति तस्य डः । खाह भक्षणे ।

खादि-धाव्योः खा-धौ ॥ ३३९ ॥

अनयोः खा धा इत्येतौ क्रमेण स्यातां वर्त्तमाने भविष्यति विध्या  
दीनामेकवचनेषु च । खादति खाइ । चखाद खाहीअ । खादिता खाहिइ  
खादिष्यति खाहिइ । खादतु खाउ । एवं लङ्-लिङाशीर्लिङः । अखादीत  
खादीअं खादीअ । लृङ् लृट्त्वत् ।

क्षियो क्षिजः ॥ ३४० ॥

'क्षि क्षये' अस्य क्षिज इत्यादेशः स्यात् । क्षयति क्षिजइ क्षिजए  
छिज-भिज्जावप्येके । व्रज गतौ ।

चो व्रज-नृत्योः ॥ ३४१ ॥

अवगोर्गन्तव्यं ज्ञः स्यात् । व्रजति वच्चइ वच्चेइ वच्चए । व्रजिता वच्च

वेष्टेश्च ॥ ३४२ ॥

अन्तस्य ढः स्यात् । ठापवादः । वेष्टते वेढइ वेढए वेढेइ वेढेए ।  
'कथेढः' ( ३५८ ) इति पूर्वसूत्रान्तर्गतं न कृतम्, 'उत्समोर्ल्लः' ( ३४३ )  
इत्युत्तरसूत्रेऽनुवृत्त्यर्थम्, अन्यथा कथिरपि ल्लविधानेऽनुवर्त्तत ।

उत्समोर्ल्लः ॥ ३४३ ॥

एतयोः परस्य वेष्टेरन्तस्य ल्लः स्यात् । उद्वेष्टते उवेल्लइ । संवेष्टते  
संविल्लइ । स्फुट विकसने ।

स्फुटि-चल्योर्वा ॥ ३४४ ॥

अनयोरन्तस्य द्वित्वं वा स्यात् । स्फोटते फुटइ फुटइ, भौवादिक-  
तौदादिकौ गृह्यते स्फुटि-चली इह । पट गतौ ।

पटेः फलः ॥ ३४५ ॥

स्पष्टम् । पटति फलइ । जृभि गात्रविनामे ।

जृभो जंभाअ ॥ ३४६ ॥

जृभि इत्यस्य जंभाअ इत्यादेशः स्यात् । जृम्भते = जंभाअइ जंभाएइ  
जंभाअए जंभाएए । जृम्भता = जंभाअहिइ जंभाएहिइ जंभाअहिए जंभा-  
एहिए । जल्प व्यक्तायां वाचि ।

जल्पेर्लो मः ॥ ३४७ ॥

जल्पेर्लस्य मः स्यात् । जल्पति जंपइ । घुण भ्रमणे ।

घुणो घोलः ॥ ३४८ ॥

घुणेर्घोल इत्यादेशः स्यात् । घूर्णति घोलइ घोलए, भ्वादि तुदादि ।  
मील निमेषणे ।

प्रादेर्मीलः ॥ ३४९ ॥

प्रादेः परस्य मीलो लस्य द्वित्वं वा स्यात् । प्रमीलति = पमिल्लइ पमी-  
लइ पमिल्लए पमीलए पमिल्लेइ पमीलेइ पमील्लेए पमीलेए । जि जये ।

श्रु-हु-जि-लू-धुवां णोऽन्त्ये ह्रस्वः ॥ ३५० ॥

एषामन्त्ये णः स्यात्, दीर्घस्य ह्रस्वश्च स्यात् । जयति जिण्णइ ।  
जिगाय जिण्णीअ ।

धावु गति-शुद्धोः । धावति धावते धाइ । दधाव दधावे धाहीअ ।  
धाविता धाहिइ । धावतु धावतां धाउ ।

काशेर्वासः ॥ ३५१ ॥

अवात् परस्य काशेर्वास इत्यादेशः स्यात् । अवकासते ओवासइ ।  
अवादिति किम् ? कासते कासइ । असु ग्लसु अदने ।

ग्रसेर्विसः ॥ ३५२ ॥

अस्य विस इत्यादेशः स्यात् । ग्रसते विसइ । गाहू विलोडने ।

अवाद् गाहेर्वाहः ॥ ३५३ ॥

अवात् परस्य गाहेर्वाह इत्यादेशः स्यात् । अवगाहते ओवाहइ ।  
अवादिति किम् ? गाहते गाहइ । वृषु मृषु सेचने ।

वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः ॥ ३५४ ॥

एषां ऋतः अरिः इत्ययमादेशः स्यात् । वर्षति वरिसइ । मर्षति  
मरिसइ । कृषि विलेखने इति भौवादिकस्यैव ग्रहणम्, न तौदादिकस्य,  
वृषादिसाहचर्यात् । हृषु अलीके । हर्षति हरिसइ । वृधु वृद्धौ ।

वृधेर्ढः ॥ ३५५ ॥

अन्तस्य स्यात् । वर्धते वृहइ, 'ऋतोऽद्' (१२०) इत्यकारः । अित्वरा  
सम्प्रमे ।

त्वरस्तुवरः ॥ ३५६ ॥

स्पष्टम् । त्वरते तुवरइ तुवरए । चल कम्पने । चलति चल्लइ चलइ,  
'स्फुटि-चल्योर्वा' (३४४) इति वा द्वित्वम् । पल्ल गतौ ।

शद्ल-पत्योर्ढः ॥ ३५७ ॥

अनयोरन्तस्य ङः स्यात् । पतति पडइ । शद्ल शानने । शीयते  
सडइ । कथे निष्पाके ।

कथेर्ढः ॥ ३५८ ॥

अन्तस्य स्यात् । कथति कडइ । म्लै हर्षक्षये ।

म्लै वा-वाऔ ॥ ३५९ ॥

अस्य वा वाअ इत्येतावादेशौ स्याताम् । म्लायति वाइ वाअइ । ध्यै  
चिन्तायाम् ।

ष्ठा-ध्या-गानां ठाअ-ज्ञाअ-गाआः ॥ ३६० ॥

एषामेते क्रमेण स्युः ।

ठा-ज्ञा-गाश्च वर्त्तमान-भविष्यद्-विध्याद्येकवचनेषु ॥ ३६१ ॥

ननु तेषां गानां वा वाअ वा अतोऽपि आदेशः स्यात् । तत्र न तेषां गानां वा वाअ वा अतोऽपि आदेशः स्यात् ।

ध्यायाते=झाअइ झाइ । दध्यो=झाइअं झाहीअ । ध्याता=झाअहिइ झाहिइ  
 एवं लृट् । ध्यायतु=झाअउ झाउ । अध्यासीत्=झाइअं झाईअ । अः  
 'ठाझा-गाश्चालुङि' इत्येव सूत्रयितुं युक्तम् । गै शब्दे । गायति गाअ  
 गाइ, पूर्ववत् । घ्रा गन्धोपादाने ।

जिघ्रतेः पा-पाओ ॥ ३६२ ॥

अस्य पा पाअ एतौ स्याताम् । जिघ्रति पाइ पाअइ । जघ्रौ पाहीअ  
 पाईअ पाइअं । ध्मा शब्दाऽग्निर्संयोगयोः ।

उद्धमो धूमा ॥ ३६३ ॥

उदः परस्य धमतेः धूमा इत्यादेशः स्यात् । उद्धमति उद्धमाइ  
 छा गतिनिवृत्तौ । तिष्ठति ठाअइ ठाइ, ध्यावत् । स्मृ चिन्तायाम् ।

स्मरतेर्भर-सुमरौ ॥ ३६४ ॥

अस्य भर सुमर इत्येतौ स्याताम् । स्मरति भरइ सुमरइ । स्मृ गतौ  
 ऋतोऽरः ॥ ३६५ ॥

धात्वन्तऋकारस्य अरः स्यात् । सरति सरइ । श्रु श्रवणे । शृणोति  
 सुण्णइ । शुश्राव सुण्णीअ सुण्णिअं ।

श्रवादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ॥ ३६६ ॥

श्रु वचि नमि रुदि दृशि विदि इत्येतेषां प्रथम-मध्यम-उत्तमपुरुषेषु  
 परेषु सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं इति क्रमेण आदेशाः स्युः,  
 अनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा । ओता=सोच्छिहिइ सोच्छिइ सोच्छइ  
 सोच्छहिइ सोच्छेहिइ सोच्छेइ सोच्छिहिए सोच्छिए सोच्छए सोच्छ-  
 हिए सोच्छेहिए सोच्छेए । ओतारः=सोच्छहिंति सोच्छिति सोच्छंति  
 सोच्छिहिंति सोच्छेहिंति सोच्छेंति । ओतासि=सोच्छिसि सोच्छिहिसि  
 सोच्छेसि सोच्छेहिसि सोच्छसि सोच्छहिसि सोच्छिसे सोच्छिहिसे  
 सोच्छेसे सोच्छेहिसे सोच्छसे सोच्छहिसे । ओतास्थ=सोच्छिहिह  
 सोच्छेहिह सोच्छहिह सोच्छिह सोच्छेह सोच्छह ।

कृ-दा-श्रु-वचि-गमि-रुदि-दृशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं

वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं ॥ ३६७ ॥

एषामेते क्रमेण स्युः भविष्यत्युत्तमैकवचने । ओतासि=सोच्छं  
 सोच्छिस्सामि सोच्छेस्सामि सोच्छस्सामि सोच्छिहामि सोच्छेहामि  
 सोच्छास्मि सोच्छेस्मि सोच्छस्मि सोच्छिहामि सोच्छेहामि



सोच्छाहामि सोच्छामि सोच्छहिमि सोच्छमि सोच्छेस्सं सोच्छस्सं  
 श्रोतास्मः=सोच्छिहिस्सा सोच्छेहिस्सा सोच्छाहिस्सा सोच्छिहित्थ  
 सोच्छेहित्था सोच्छाहित्था सोच्छहित्था सोच्छिस्सामो सोच्छेस्सामं  
 सोच्छस्सामो सोच्छिहामो सोच्छेहामो सोच्छाहामो सोच्छहामो सोच्छि-  
 हिमो सोच्छिमो सोच्छेहिमो सोच्छेमो सोच्छाहिमो सोच्छामो सोच्छ-  
 हिमो सोच्छमो । श्रोष्यति=सोच्छिहिइ इत्यादि । प्रथमे मध्यमस्यैक  
 वचने च लुङ् वत् । बहुवचने तु श्रोष्यथ=सोच्छिहिह सोच्छिह सोच्छे-  
 हिह सोच्छेह सोच्छहिह सोच्छह सोच्छिहित्थ सोच्छित्थ सोच्छे-  
 हित्थ सोच्छेइत्थ सोच्छहित्थ सोच्छइत्थ । मिपि लुङ् वत्, मवि च । सु-  
 मयोस्तु यत्र मो इति तत्र सु-मौ प्रत्येकं प्रयोज्यौ । शृणोतु सुण्णउ  
 शृण्वन्तु सुणंतु । शृणु सुणसु । शृणुत सुणह । शृणोमि सुणसुं  
 शृणमः सुणमो । दृशिर् प्रेक्षणे । इइ इत् ।

दृशेः पुलअ-णिअक-अवक्खाः ॥ ३६८ ॥

त्र्यक्षरा आदेशाः स्युः । पश्यति पुलअइ णिअकइ अवक्खइ । दद्रइ  
 पुलईअ णिअक(क्की?)अ अवक्खीअ । द्रष्टा दच्छिहिइ इत्यादि वोच्छवत्  
 कृषि विलेखने । कर्षति करिसइ । गम्लु गतौ गच्छति गमइ । गन्तासि  
 गच्छं इत्यादि । इति भ्वादिः ।

अद भक्षणे ।

शेषाणामदन्तता ॥ ३६९ ॥

लुप्तानुबन्धानां शेषाणामकारान्तत्वं स्यात् । अत्ति अअइ । ह-  
 हिंसा-गत्योः ।

हन्तेर्मः ॥ ३७० ॥

हन्तेर्नस्य म्मः स्यात् । हन्ति हम्मइ । वच परिभाषणे । वक्ति व  
 अइ । वक्ष्यामि वोच्छं इत्यादि सोच्छवत् । विद ज्ञाने । वेत्ति वे-  
 वेअइ । वेत्स्यामि वेच्छं । अस भुवि । अस्ति अत्थि । सन्ति असन्ति ।

असेर्लोपः ॥ ३७१ ॥

असो लोपः स्यात् थास्-सिपोः परयोः । असि सि । थासोऽनुवृत्ति  
 भाव-कर्मणोः सफला । स्थ त्थ ।

मि-मो-मु-मानामधो हश्च ॥ ३७२ ॥

अन्तेः तन्तेः मि-मो-मु-मानामधो न मान् अन्तेः तन्तेः । अस्ति

भूते निपातः । बभूव आसि । मृजूष शुद्धौ ।

मृजेर्लुभ-पुसौ ॥ ३७४ ॥

द्वक्षरौ स्याताम् । मार्ष्टि लुभइ पुसइ 'सुप' इति पाठे सुपइ ।  
रुदिर् अश्रुविमोचने ।

रुदेर्वः ॥ ३७५ ॥

रुदेर्दस्य वः स्यात् । रोदिति रुवइ । रुदिष्यामि रुच्छं, वोच्छवत् ।  
इत्यदादयः ।

हु दानादनयोः । जुहोति हुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति ण्णः ।  
जिभी भये ।

भियो भा-बीहौ ॥ ३७६ ॥

भा बीह इत्येतावादेशौ स्याताम् । बिभेति भाइ बीहइ । पृ पालन  
पूरणयोः । पिपर्त्ति परइ । डुभृञ् धारण-पोषणयोः । बिभर्त्ति भरइ  
माङ् माने ।

निरो माडो माणः ॥ ३७७ ॥

निरः परस्य माडो माण इत्यादेशः स्यात् । निर्मिमीते णिम्माणइ  
निरः किम् ? मिमीते माइ । डुदाञ् दाने । ददाति दाइ । दातास्मि दाहं  
डुधाञ् धारण-पोषणयोः ।

श्रदो धो दहः ॥ ३७८ ॥

श्रदः परस्य धो दह इत्यादेशः स्यात् । श्रदधाति सदहइ । श्रद  
इति किम् ? धाइ । विजिर् पृथग्भावे ।

उदो विजः ॥ ३७९ ॥

उदः परस्य विजेर्जस्य वः स्यात् । उद्वेक्ते उद्वेवेक्ति उद्विव्वइ  
ऋ सृ गतौ । इयर्त्ति अरइ । ससर्त्ति सरइ । इति ह्यादयः ।

दिबु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहारद्युति-स्मृति-मोद-मद-खम्र-कान्ति  
गतिषु । दीव्यति दिवइ । नृती गात्रविनामे । नृत्यति णच्चइ । असि उद्वेगे

त्रसेर्वजः ॥ ३८० ॥

स्पष्टम् । त्रस्यति वज्जइ । व्रीड चोदने लज्जायां च । व्रीड्यति वीलइ  
पूङ् प्राणिप्रसवे । सूयते सूइ । दूङ् परितापे ।

स्पष्टम् । दूयते = दूमइ दूमए दूमेइ दूमेए । शो तनूकरणे । दूयति सोइ । दो अवखण्डने । दूयति दोइ । जनी प्रादुर्भावे । जायते जणइ । पद गतौ ।

पदः पालः ॥ ३८२ ॥

आदेशः स्यात् । पद्यते पालइ । बुध अवगमने ।

युधि-बुध्योर्ज्ञः ॥ ३८३ ॥

एतयोर्धस्य झः स्यात् । बुध्यते बुज्झइ । युध सम्प्रहारे । युध्यते जुज्झइ । सृज विसर्गे । सृज्यते सज्जइ । शुष शोषणे ।

रूषादीनां दीर्घः ॥ ३८४ ॥

रूषादीनां दीर्घः स्यात् । शुष्यति सूसइ । तुष प्रीतौ । तुष्यति तूसइ । दुष वैकृत्ये । दुष्यति दूसइ । कुध कोपे ।

कुधेर्झरः ॥ ३८५ ॥

स्पष्टम् । कुध्यति झरइ । रुष रोषे । रुष्यति रूसइ । गृधु अभि-  
काङ्क्षायाम् । गृध्यति गधइ । इति दिवादयः ।

षुञ् अभिषवे । सुनोति सुअइ । चिञ् चयने ।

चिञश्चिणः ॥ ३८६ ॥

चिञः चिण इत्यादेशः स्यात् । चिनोति चिणइ । शक् शक्तौ ।

शकादीनां द्वित्वम् ॥ ३८७ ॥

शकादीनां द्वित्वं वा स्यात् । शक्नोति सकइ । पक्षे-

शकेस्तर-चअ-तीराः ॥ ३८८ ॥

अस्य ह्यक्षरास्त्रय आदेशाः स्युः । शक्नोति तरइ चअइ तीरइ ।  
अशू व्याप्तौ सङ्घाते च । अश्रुते असइ । जिघृषा प्रागल्भ्ये । धृष्णोति  
धसइ । इति स्वादयः ।

तुद व्यथने । तुदति तुअइ । णुद प्रेरणे ।

णुदेर्लोणः ॥ ३८९ ॥

णुदेर्लोण इत्यादेशः स्यात् । तुदति लोणइ । 'णोल्ल' इति पाठे  
णोल्लइ । कृष विलेखने । कृषति कसइ, 'वृष-कृष-०' ( ३५४ ) इति अरिस्तु  
न, वृषसाहचर्याद् भौवादिकस्यैव ग्रहणात् । ओविजी भये । उद्विजति  
उव्विवइ, 'उदो विजः' ( ३७९ ) इति वः । दुमस्जौ शुद्धौ ।

बुड-खुप्पौ मस्जेः ॥ ३९० ॥

[ मस्जेः बुड खुप्प इत्येतावादेशौ स्याताम् । ] मज्जति बुडइ खुप्पइ ।  
तृप तृप्तौ ।

तृपस्थिम्पः ॥ ३९१ ॥

तृपेः थिम्प इत्यादेशः स्यात् । तृपति थिम्पइ । घुण भ्रमणे । घूर्णति  
घोलइ । पृङ् व्यायामे । प्रियते परइ । सृङ् प्राणत्यागे । त्रियते मरइ ।  
सृज विसर्गे । सृजति सअइ । कृती छेदने । कृन्तति कतइ । खिद परि-  
घाते । खिदति विसूरइ । पिश अवयवे । पिशति पिसइ । इति तुदादयः ।  
रुधिर आवरणे ।

रुधेर्न्ध-म्मौ ॥ ३९२ ॥

रुधेः धस्य न्ध म्म इत्येतावादेशौ स्याताम् । रुणद्धि रुन्धइ रुम्मइ ।  
भिदिर् विदारणे ।

भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः ॥ ३९३ ॥

अनयोः दस्य न्दः स्यात् । भिनत्ति भिंदइ । छिदिर् द्वैधीकरणे ।  
छिनत्ति छिंदइ । खिद दैन्ये । खिनत्ति विसूरइ । ओविजी भय-चलनयोः ।  
विनत्ति विअइ । उद्विनत्ति उद्विअइ । इति रुधादयः ।

तनु विस्तारे । तनोति तण्णइ । षणु दाने । सनोति सण्णइ । क्षणु  
हिंसायाम् । क्षणोति खण्णइ । क्षिणु च-क्षिणोति खिण्णइ । ऋणु गतौ ।  
ऋणोति अण्णइ । तृणु अदने । तृणोति तण्णइ । घृणु दीप्तौ । घृणोति  
घण्णइ । वनु याचने । वनोति वण्णइ । मनु अवबोधने । मनोति मण्णइ ।  
डुकृञ् करणे ।

कृञः कुणो वा ॥ ३९४ ॥

कृञः कुण इत्यादेशो वा स्यात् । करोति कुणइ करइ ।

कृञः का भूत-भविष्यतोश्च ॥ ३९५ ॥

एतयोरर्थयोः क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु च कृञः का इत्यादेशः स्यात् ।  
चकार काहीअ कम्मं (?) [करिष्यति ?] काहिइ । कर्तास्मि काहं, दावत् ।  
इति तनादयः ।

डुक्तीञ् द्रव्यविनिमये ।

—

वः कं च ॥ ३९७ ॥

वेः परस्य क्रीणातेः के इत्यादेशः स्यात् । चात् किणः । विक्रीणाति  
विकेइ विकिणइ । लृञ् छेदने । लृणाति लृण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' ( ३५० )  
इति अन्त्यस्य णः पूर्वस्य ह्रस्वश्च । कृञ् हिंसायाम् । कृणाति करइ । धूञ्  
कम्पने । धुनाति धुण्णइ । शृ हिंसायाम् । शृणाति सरइ । पृ पालन-पूर-  
णयोः । पृणाति परइ । मृ हिंसायाम् । मृणाति मरइ । ज्ञा अवबोधने ।

ज्ञो जाण-मुणौ ॥ ३९८ ॥

व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । जानाति जाणइ मुणइ । बध बन्धने ।  
बध्नाति बंधइ । वृङ् सम्भक्तौ । वृणीते वरइ । मृद क्षोदे ।

मृदो लः ॥ ३९९ ॥

मृद्रातेः दस्य लः स्यात् । मृद्राति मलइ । अश भोजने । अश्नाति  
असइ । पुष पुष्टौ । पुष्णाति पूसइ । ग्रह उपादाने ।

ग्रहेर्गेण्हः ॥ ४०० ॥

स्पष्टम् । गृह्णाति गेण्हइ । इति क्रयादयः ।

चुर स्तेये ।

णिच एदादेरत आत् ॥ ४०१ ॥

णिच एत् स्यात्, धातोरकारस्य आत् स्यात् ।

आवे च ॥ ४०२ ॥

णिचोऽयमपि आदेशः स्यात् । चोरयति चुरेइ चुरावेइ । चिति  
स्मृत्याम् । चिन्तयति चित्तेइ चिंतावेइ । लक्ष दर्शना-ऽङ्कनयोः । लक्षयति  
लाखेइ लखावेइ । भक्ष अदने । भक्षयति भाखेइ भखावेइ । गज शब्दे ।  
गाजयति गाजेइ गजावेइ । शठ श्लाघायाम् । शाठयति साठेइ सठावेइ ।  
इति चुरादयः ।

भू-हेतुमद् णिच् । भावयति होएइ होआवेइ हुवेइ हुवावेइ । पट-  
पाटयति फालेइ फलावेइ । जल्पयति जंप्पेइ जंपावेइ । प्रमीलयति पमि-  
ल्लेइ पमिल्लावेइ । अवकाशयति ओवासेइ ओवासावेइ । ग्रासयति विसेइ  
विसावेइ । अवगाहयति ओगाहेइ ओगाहावेइ । रोषयति रूसेइ रूसा-  
वेइ । वर्षयति वरिसेइ वरिसावेइ । वर्धयति वड्डेइ वड्डावेइ । त्वरयति  
तुवरेइ तुवरावेइ । चलयति चल्लेइ चालेइ चल्लावेइ चलावेइ । स्मारयति

भारेइ भरावेइ सुमरेइ सुमरावेइ । सारयति सारेइ सरावेइ । आवयति सुण्णेइ सुण्णावेइ । गमयति गामेइ गमावेइ । रोदयति रुवेइ रुवावेइ । पारयति पारेइ पारावेइ । नर्त्तयति णच्चेइ णच्चावेइ । चासयति चज्जेइ वज्जावेइ । व्रीडयति वीलेइ वीलावेइ । शुष्यति सूसेइ सूसावेइ । कुध्यति झूरेइ झूरावेइ । चिनोति चिण्णेइ चिण्णावेइ । शक्कोति सक्केइ सक्कावेइ, तारेइ तरावेइ, चाएइ चआवेइ, तीरेइ तीरावेइ । घूर्णयति घोलेइ घोलावेइ । रुन्धयति रुंधेइ रुंधावेइ, रुम्भेइ रुम्भावेइ । कारयति कारेइ करावेइ, कुणेइ कुणावेइ । काययति किणेइ किणावेइ । इति हेतुमणिचप्रकरणम् ।

यक ईअ-इज्जौ ॥ ४०३ ॥

यको द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । भूयते होईअइ होइज्जइ हुवीअइ हुविज्जइ ।

भाव-कर्मणोर्वश्च ॥ ४०४ ॥

श्रु हु जि लू धू एषामन्ते वः स्यात्, णश्च भाव-कर्मणोः । जीयते जिवइ जिण्णीअइ जिणिज्जइ ।

गमादीनां द्वित्वं वा ॥ ४०५ ॥

एषां द्वित्वं वा स्याद् भाव-कर्मणोः । हस्यते हस्सइ हसीअइ हसिज्जइ । रम्यते रम्मइ रमीअइ रमिज्जइ ।

ह-क्रोर्हीर-कीरौ ॥ ४०६ ॥

हज्ज-कृजोः क्रमाद् हीर कीर इत्येतौ स्यातां भाव-कर्मणोः । हियते हीरइ । श्रूयते सुवइ सुण्णीअइ सुणिज्जइ । गम्यते गम्मइ गमीअइ गमिज्जइ ।

दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ-वब्भाः ॥ ४०७ ॥

एषां क्रमेण द्व्यक्षरा आदेशाः स्युः भाव-कर्मणोः । उह्यते वब्भइ । दुह्यते दुब्भइ । लिह्यते लिब्भइ । ह्रयते हुवइ हुण्णीअइ हुणिज्जइ । क्रियते कीरइ । लूयते लुवइ लुण्णीअइ लुणिज्जइ । धूयते धुवइ धुण्णीअइ धुणिज्जइ ।

ज्ञो णज्ज-णवौ वा ॥ ४०८ ॥

ज्ञाधातोः द्व्यक्षरावादेशौ वा स्यातां भाव-कर्मणोः । ज्ञायते णज्जइ णव । पक्षे जाणीअइ जाणिज्जइ, सुणीअइ सुणिज्जइ ॥

ग्रहे दीर्घौ वा ॥ ४०९ ॥

स्पष्टम् । गृह्यते गाहिज्जइ । पक्षे गेणिहज्जइ ।

॥ इति भावकर्मप्रकरणम् ॥ इति तिङन्तम् ॥

क्ते हुः ॥ ४१० ॥

भुवो हुरादेशः स्यात् क्ते । भूतं हुअं ।

क्ते तुरः ॥ ४११ ॥

त्वरतेः तुर इत्यादेशः स्यात् क्ते ।

क्ते ॥ ४१२ ॥

धातोरन्त्याकारस्य इः स्यात् क्ते । त्वरितं तुरिअं । पटितं फलिअं ।

क्तेन दिण्णादयः ॥ ४१३ ॥

दिण्ण इत्यादयः शब्दाः क्तेन सह निपात्यन्ते । दाअ दत्तं दिण्णं । रुदिअ रुदितं रुण्णं । त्रसी त्रस्तं हित्थं । दह भस्सीकरणे दग्धं डहं । रञ्ज रक्तं रत्तं । दंश दष्टं डहं । रुधिअ रुद्धं रुहं इत्यादयः ।

भुजादीनां क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः ॥ ११४ ॥

एषामन्तस्य लोपो वा स्यात् ।

क्त्व ऊणः ॥ ४१५ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य ऊण इत्यादेशः स्यात् । भुक्त्वा भोजण । भोक्तुम् भोउं । भोक्तव्यम् भोअवं । विदित्वा वेऊण । वेत्तुम् वेउं । वेत्तव्यम् वेअवं । एवं रुदिअ ।

घे क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु ॥ ४१६ ॥

ग्रहेः घे इत्यादेशः स्याद् एषु परेषु । गृहीत्वा घेऊण । ग्रहीतुम् घेउं । ग्रहीतव्यम् घेअवं । कृत्वा काऊण । कर्तुम् काउं । कर्तव्यम् काअवं ।

तृन इरः शीले ॥ ४१७ ॥

शीलार्थे तृन इर इत्यादेशः स्यात् । गन्तुम् गमिरो, गमनशील इत्यर्थः ।

शतृ शानच् इत्येतयोः क्रमेण न्त माण इत्येतावादेशौ स्याताम्  
भवन् हुवंतो । यजमानः जअमाणो ।

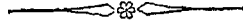
ईत् स्त्रियाम् ॥ ४१९ ॥

शतृ-शानचोः ईदादेशः स्याद् न्त-माणौ च । वदन्ती वदई । यज  
माना जअमाणी । पक्षे वदन्ती जअमाणा ।

इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरवविरचिते  
प्राकृतानन्दे द्वितीयः परिच्छेदः ।

\*

॥ समाप्तः प्राकृतानन्दः ॥



[ ॥ संवत् १७२६ अश्विन सुदि १२ रविदिने लिखितं लाभपुरनग  
रमध्ये शुभं भवतु । ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥ ]

✽



## परिशिष्टम्

### प्राकृतशब्दानुक्रमणिका

कृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	अ		अट्टि	अस्थि	२१७
इ	अत्ति	३६६	अण्डुओ	अनङ्वात्	२१७
ो	असूः	२८६	अत्थि	अस्ति	३७०
गओ, अगवो	अग्नयः	१४०	अत्तो	आप्तः	३७
गणा	अग्निना	१४१	अत्तो	आत्तः	११६
गणो	अग्नीन्	१४०A	अढा, अढाणो	अध्वा	२४१
गस्मि	अग्नौ	१४४	अप्पजू	आत्मयुक्	२४२
ग	अग्नि	१४०	अप्पणा	आत्मना	२४०
गी	अग्निः	१३८	अप्पणो	आत्मनः	२४०
गी	अग्नयः	१४०	अप्पणः	आत्मनः	२४०
गीओ	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पा	आत्मनः	२४०
गीणो			अप्पा	आत्मा	२४०
(अग्निस्स)	अग्नेः	१४४	अप्पादु, अप्पादो	आत्मनः	२४०
गीणो	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पाणो	आत्मनः	२३६
ीदु, अगोदो	अग्नेः	१४२	अप्पाणं	आत्मनां	२४०
गीवो	अग्नयः	१४०	अप्पाहि	आत्मनः	२४०
गीहि	अग्नेः	१४२	अप्पेहि	आत्मभिः	२४०
ीणं	अग्नीनाम्	१४४	अप्पं	आत्मानं	२४०
गीसु	अग्नीषु	१४४	अप्पस्मि	आत्मनि	२४०
गीसुत्तो,			अप्पासुत्तो,		
अग्गीहितो	अग्निभ्यः	१४३	अप्पाहितो	आत्मभ्यः	२४०
डुली	अङ्गुरी	१७६	अप्पे	आत्मनि	२४०
व्छ	अक्षि	२१७	अप्पेसु	आत्मसु	२४०
छी	अक्षि	१८१	अम्हे	वयम्	२६७
छेरं	आश्चर्यं	१६६	अम्हे	अस्मान्	२६६
अणोनि		३६३	अम्हे	अस्माकम्	२७६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अम्हेसुत्तो	अस्मत्	२७४	अस्सि	अस्मिन्	२२
अम्हेहि	अस्माभिः	२७२	अह	असौ	२८
अम्हेहितो	अस्मत्	२७४	अह	अवः	२८
अम्हं	अस्माकम्	२७६	अहअं	अहम्	२६
अम्हाणं	अस्माकम्	२७६	अहस्मि	अहम्	२६
अमुए	अमी	२८२	अहस्मि	याम्	२६
अमुथ	अमुष्मिन्	२८२	अहिआई	अभिजातिः	१७
अमुणा	अमुना	२८२	अहिमज्जु	अभिमन्युः	१५
अमुणो	अमो	२८२	अहं	अहम्	२६
अमुणं	अमीषाम्	२८२	अहं	अहम्	२६
अमुम्मि	अमुष्मिन्	२८२			
अमुस्स	अमुय्य	२८२	आ		
अमुस्सि	अमुष्मिन्	२८२	आअदो	आगतः	६
अमुं	अमुम्	२८२	आइदी	आकृतिः	१७
अमुं	अवः	२८७	आउदी	आकृतिः	१७
अमू	असौ	२८२	आणा	आज्ञा	१७
अमूहं	अमूनि	२८७	आणालं	आलानं	२१
अमूओ	अमून्	२८२	आमेलो	आपीडः	५
अमूदिसा	असौ दिक्	२८६	आवलो	आवर्त्तः	११
अमूदु	अमुष्मात्	२८२	आसि	बभूव	३७
अमूदो	अमुष्मात्	२८२	आसो, अस्सो	अवः	४
अमूसु	अमीषु	२८२	अ हिआई.		
अमूसुत्तो	अमीभ्यः	२८२	अहिआई	अभिजातिः	१७
अमूहि	अमुष्मात्	२८२			
अमूहि	अमीभिः	२८२	इ		
अमूहितो	अमीभ्यः	२८२	इच्छिओ	ईप्सितः	१२
अरइ	इयत्ति	३७६	इणमो	इदम्	२८
अवक्खइ	पश्यति	३६८	इणं	इदम्	२८
अवक्खीअ	दद्वट	३६८	इदं	इदम्	२८
अवगाहो	अवगाहः	३१०	इमस्मि	इह	२२
अवणओ	अपनयः	३१०	इमस्स	अस्य	२२
असइ	अश्नुते	३८८	इमस्सि	अस्मिन्	२२
असइ	अश्नाति	३६६	इमा	इमान्	२२
असन्ति	सन्ति	३७०	इमा	इयं	२८

तशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
गं	एषां	२२७
हु	अस्मात्	२२६
हो	अस्मात्	२२६
मुत्तो	एभ्यः	२२६
ह	अस्मात्	२२६
हेतो	एभ्यः	२२६
णा	अनेन	२२६
	इमे	२२६
	अनेन	२२६
त	एषां	२२७
	एषु	२२६
इ	एभिः	२२६
	अयं	२२६
	इमं	२२६
	ऋषिः	१४४
तो	अङ्गारः	६०
	इन्द्रः	१०४
	इन्द्रः	१०४
	उ	
रो	उत्करः	४१
हा	उक्षा	१६६
अत्तो	उत्क्षिप्त	११८
	इक्षुः	१५०
राइ	उद्धमति	३६३
	ऋतुः	१५०
लं	उद्वलम्	१८७
ओ	उत्पीतः	३७
वइ	उद्भवति	३३८
णआ	उपानत्	२८३
ववइ	उद्वेक्षते,	
	उद्वेक्षित	३७६
	उद्विजति	३८६
	उद्विनक्ति	३६३
लइ	उद्वेष्टते	३४३
ो	उत्सवः	१२६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
उमुओ	उत्सुकः	१२६
उहे	उभौ	१३६
उबरं	उदुम्बरम्	२०६
	ए	
एअ	एव	३१२
एआरहो	एकादशः	१०१
एअं	एवम्	३१२
एणिह	इदानीं	२१५
एत्तो	एतस्मात्	२४६
एत्थ	एतस्मिन्	२४६
एतम्मि	एतस्मिन्	२४६
एतस्सि	एतस्मिन्	२४६
एता	एतान्	२४७
एते	एते	२४७
एतं	एतं	२४७
एदादु	एतस्मात्	२४६
एदादो	एतस्मात्	२४६
एदाहि	एतस्मात्	२३६
एविणा	एतेन	२४७
एवेण	एतेन	२४७
एवेहि	एतैः	२४७
एव	एतत्	२८७
एरावणो	ऐरावतः	८२
एरिसो	ईदृशः	५४
एव	एव	३१२
एवं	एवम्	३१२
एस	एषः	२४७
एसो	एषः	२४७
	ओ	
ओखलं	उद्वलम्	१८७
ओगाहावेइ	अवगाहयति	४०२
ओगाहेइ	अवगाहयति	४०२
ओगाहो	अवगाहः	३१०
ओणओ	अपनयः	३१०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
ओवासइ	अवकासते	३५१	कस्स	कस्य	२२
ओवासावेइ	अवकाशयति	४०२	कस्सि	कस्मिन्	२२
ओवासेइ	अवकाशयति	४०२	कस्सि	कदा	२२
ओवाहइ	अवगाहते	३५३	कसइ	कृषति	३८
ओहलं	उलूहलम्	१८७A	कलुणं	करणं	२०
अंकोलं	अंकोठं	२००	कलंबो	कदम्बः	८
अंबं	आम्रं	२०८	कहावणो	कार्पाषणः	१२
अंसू	अश्रु	२१७	कहि	कस्मिन्	२२
	क		कहि	कदा	२२
कइअवो	कतवः	७१	का	कस्मात्	२२
कइआ	कदा	२२५	काअव्वं	कर्त्तव्यम्	४१
कउरवो	कौरवः	७४	काआ	का	२८
कउसलो	कौशलः	७५	काइ	का	२८
कच्छा	कक्षा	१६६	काइं	कानि	२८
कज्जो	कार्यः	११२	काउं	कर्त्तुम्	४१
कढइ	भवयति	३५८	काऊण	कुत्वा	४१
कढोरं	कठोरं	१६६	काए	का	२८
कण्हो	कृष्णः १०, १२०, १३३		काडु	कस्मात्	२२
कण्हं	कृष्णम्	२	काणं	केषां	२२
कण्हत्तणं	कृष्णस्वम्	३१३	कारेइ	कारयति	४०
कण्हदा	कृष्णता	३१३	कालाअसं	कालायसं	२१
कतइ	कृत्तति	३६१	कालासं	कालायसं	२१
कत्तरी	कर्त्तरी	१८०	कास	कस्य	२२
कत्तो	कस्मात्	२२१	कासइ	कासते	३५
कत्थ	कदा	२२५	कासुत्तो	केभ्यः	२२
कदो	कस्मात्	२२१	काहि	कस्मात्	२२
कम्भं (?)	करिष्यति (?)	३६५	काहितो	केभ्यः	२२
कस्मि	कदा	२२५	काहीअ	करिष्यति (?)	३६
कम्मो	कर्म	२४२	काहे	कदा	२२
कमंधो	कबन्धः	८७	काहं	कर्त्तस्मि	३६
करइ	करोति	३६४	किक्का	कृत्या	१६
करइ	कृणाति	३६७	कित्ती	कीर्त्तिः	१७
करावेइ	कारयति	४०२	किणइ	कीणाति	३६
करिसइ	कर्षति	३६८	किणावेइ	क्राययति	४०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
किरिआ	क्रिया	१७१	खमा	क्षमा	१६६
किलिडुं	किलष्टं	२०८	खमा	क्षमा	१७२
किलित्तं	कलृप्तं	१६१	खहिइ	खादिता	३३६
किवा	कृपा	१६५	खाइ	खादति	३३६
किसणो	कृष्णः (भगवति)	१३३	खाउ	खादतु	३३६
किसरा	कृशरा	१६५	खाणू	स्थाणुः	१५१
किस्सा	कस्याः	२८५	खादीअ	अखादीत्	३३६
किं	किम्	२८७	खादीअं	अखादीत्	३३६
की	का	१७४, २८४	खाहिइ	खादिष्यति	३३६
कीअ	कस्याः	२८५	खाहीअ	अखाद	३३६
कीआ	कस्याः	२८५	खिणइ	क्षिणोति	३६३
कीई	कस्याः	२८५	खुज्जो	कुब्जः	६३
कीए	कस्याः	२८५	खुप्पइ	मज्जति	६६०
कीरइ	क्रियते	४०७	खोडओ	स्फोटकः	१११
कीसे	कस्याः	२८५	खंभो	स्तम्भः	११०
कुक्खेअओ	कौक्षेयकः	७६		ग	
कुच्छी	कुक्षिः	१७६	गउरवं	गौरवं	१६७
कुणइ	करोति	३६४	गग्गरो	गद्गदः	८४
कुणावेइ	कारयति	४०२	गच्छं	गन्तास्मि	३६८
कुणेइ	कारयति	४०२	गजावेइ	गाजयति	४०२
के	के	२१६	गड्डो	गर्तः	११७
केढवो	कैटभः	६०	गधइ	गृध्यति	३८५
केरिसो	कीदृशः	५४	गढिभणो	गर्भितः	८०
केलासो	कैलासः	६६	गढिभणं	गर्भितं	१६७
केवट्टो	कैवर्त्तः	११५	गम्मइ	गम्यते	४०६
केसि	केषां	२२३	गमइ	गच्छति	३६८
केसु	केषु	२२५	गमावेइ	गमयति	४०२
को	कः	२१६	गमिज्जइ	गम्यते	४०६
कोत्थुहो	कौस्तुभः	१०८	गमिरो	गन्ता	४१७
कोसलो	कोशलः	७५	गमोअए	गम्यते	४०६
कंवोट्टो	कमलं	२१५	गरुअं	गुरु	२१७
	ख		गरुई	गुर्घी	१७६
खगो	खङ्गः	३७	गहवई	गृहपतिः	१४५, २१२
खगोअ	खगोति	२६२	गगण	गगणि	२८०

गामेइ	गमयाति	४०२
गारवं	गौरवं	१६७
गाहइ	गाहते	३५३
गाहिज्जइ	गृह्यते	४०६
गिह्ठी	गृष्टिः	१७५
गिरा	गीः	२८४
गुणवत्तो	गुणवान्	३१४
गेणहइ	गृह्णाति	४००
गेण्हज्जइ	गृह्यते	४०६
गोरवं	गौरवं	१६७
गोला	गोदावरी	२१५

घ

घणइ	घृणोति	३६३
घणा	घृणा	१६५
घरं	गृहं	२१२
घेअघं	ग्रहीतव्यम्	४१६
घेऊण	गृहीत्वा	४१६
घेउं	ग्रहीतुम्	४१६
घोलइ	घूर्णति	३४८, ३६१
घोलए	घूर्णति	३४८
घोलेइ	घूर्णयति	४०२
घोलावेइ	घूर्णयति	४०२

च

चअइ	शक्नोति	३८८
चआवेइ	शक्नोति	४०२
चइत्तो	चेत्रः	७१२
चउत्थी	चतुर्थी	१७८
चउद्दही	चतुर्दशी	१७८
चउण्हं	चतुर्णां	२१८
चऊत्तु	चतुर्षु	२१८
चउत्तुत्तो	चतुर्भ्यः	२१८
चऊहि	चतुर्भिः	२१८
चउहितो	चतुर्भ्यः	२१८

चत्तारि	चतुरः
चत्तारि	चतस्रः
चत्तारो	चत्वारः
चत्तारो	चतुरः
चत्तारो	चतस्रः
चन्दिमा	चन्द्रिका
चम्मो	चर्म
चलभइ	चलति
चलइ	चलति
चलणो	चरणः
चल्लावेइ	चलयति
चलावेइ	चलयति
चल्लेइ	चलयति
चाउलिअं	चातुर्यं
चाएइ	शक्नोति
चालेइ	चलयति
चिणइ	चिनोति
चिण्णावेइ	चिनोति
चिण्णेइ	चिनोति
चितावेइ	चिन्तयति
चित्तेइ	चिन्त्यति
चिन्धं	चिह्नं
चिलाढो	किरातः
चिहुरो	चिकुरः
चुरावेइ	चोरयति
चुरेइ	चोरयति
चोत्थी	चतुर्थी
चोद्दही	चतुर्दशी
चोरिअं	चौर्यं
	छ
छत्तवणो	सप्तपणः
छट्ठी	षष्ठी
छणो	क्षणः
छमा	क्षमा

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

छम्मुहो	षण्मुखः	६६
छायागामो	छायाग्रामः	१३१
छवग्रो	शवकः	६६
छाहा	छाया	१६८, १७४
छाहागामो	छायाग्रामः	१३१
छाही	छाया	१७४
छिदइ	छिनत्ति	३६३
छीरं	क्षीरं	२०४
छुढो	क्षुब्धः	११८
छुणा	क्षुणा	१६६

ज

जअमाणा	यजमाना	४१६
जअमाणी	यजमाना	४१६
जअमाणो	यजमानः	४१८
जउण	यमुना	१६६
जठरं	जठरं	१६६
जणो	यज्ञः	१२७
जण्ह	जह्नुः	१५०
जणइ	जायते	३८१
जम्मो	जन्म	२४२
जसो	यशः	२८२
जहिट्टिलो	युधिष्ठिरः	६०
जा	या	२८५
जा	या	२८५
जाउ	याः	२८५
जाइ	यस्याः	२८५
जाइं	यानि	२८७
जाए	यस्याः	२८५
जाओ	याः	२८५
जाणइ	जानाति	३६८
जाणिजइ	ज्ञायते	४०८
जाणीअइ	ज्ञायते	४०८
जामाआ	जामाता	१५५
जामाआरो	जामातारः	१५५
जिणइ	जयति	३५०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

जिणिजइ	जीयते	४०४
जिणीअ	जिगाय	३५०
जिणीअइ	जीयते	४०४
जिअवर	जीयते	४०४
जिस्ता	यस्याः	२८५
जी	जा	१७५
जी	या	२८५
जीअ	यस्याः	२८५
जीआ	ज्या	१७३
जीआ	यस्याः	२८५
जीइ	यस्याः	२८५
जीए	यस्याः	२८५
जीसे	यस्याः	२८५
जीहा	जिह्वा	१६५
जुउच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुगुच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुअइ	युध्यते	३८३
जुवा, जुवाणो	युवा	२४१
जो	यः	२४६
जोगो	योग्यः	४०
जोव्वणं	यौवनम्	१६६
जं	यत्	२८७
जंपइ	जल्पति	३४७
जंपावेइ	जल्पयति	४०२
जंपेइ	जल्पयति	४०२
जंभाअइ	जृम्भते	३४६
जंभाअहिइ	जृम्भता	३४६
जंभाअहिए	जृम्भता	३४६
जंभाअए	जृम्भते	३४६
जंभाएइ	जृम्भते	३४६
जंभाएए	जृम्भते	३४६
जंभाएहिए	जृम्भता	३४६
जंभाएहिइ	जृम्भता	३४६
भाअउ	ध्यायतु	३६१
भाअइ	ध्यायति	३६१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
भाअहिइ	ध्याता	३६१	णाराअणा	नारायणात्
भाइ	ध्यायति	३६१	णाराअणावु	नारायणात्
भाइअं	दध्यौ	३६१	णाराअणादो	नारायणात्
भाइअं	अध्यासीत्	३६१	णाराअणाणं	नारायणेभ्यः
भाइअं	अध्यासीत्	३६१	णाराअणाणं	नारायणात्
भाउ	ध्यायतु	३६१	णाराअणासुत्तो	नारायणेभ्यः
भाहीअ	दध्यौ	३६१	णाराअणाहि	नारायणात्
भाहिइ	ध्याता	३६१	णाराअणाहिहो	नारायणेभ्यः
भिज्जइ	क्षयति	३४०	णाराअणे	नारायणात्
भिज्जए	क्षयति	३४०	णाराअणे	नारायणौ
भूरवेइ	क्रुध्यति	४०२	णारायणे	नारायणे
भूरइ	क्रुध्यति	३८५	णाराअणेण	नारायणेन
भूरइ	क्रुध्यति	४०२	णाराअणेसु	नारायणेषु
	ठ		णाराअणेहि	नारायणैः
ठाअइ	तिष्ठति	३६२	णाराअणो	नारायणः
ठाइ	तिष्ठति	३६३	णाहलो	लाहलः
	ड		णांगलो	लाङ्गलः
डहुं	दष्टं	४१३	णिअक्कइ	पश्यति
ड्डहुं	दधं	४१३	णिअक्क [क्की?]अ	दष्ट
डसणो	दशनः	६४	णिडालं	ललाटं
डोला	दोला	१६८	णिदालू	निद्रावान्
डंडो	दण्डः	६४	णिप्फंदो	निस्पन्दः
	ण		णिम्माणइ	निभिमीते
ण्हाओ	स्नातः	११६	णिवत्तो	निवर्त्तः
णइसोत्तो	नदीस्रोतः	१	णिसडो	निषधः
णच्चइ	नृत्यति	३७६	णिस्तासो	निःश्वासः
णच्चावेइ	नर्त्तयति	४०२	णिशा	निशा
णच्चेइ	नर्त्तयति	४०२	णिहिओ	निहितः
णज्जइ	ज्ञायते	४०८	णिहितो	निहितः
णववइ	ज्ञायते	४०८	णिहसो	निकषः
णाराअणम्मि	नारायणे	१४, २३	णीसासो	निःश्वासः
णाराअणस्स	नारायणाय	१६	णे	अस्मान्
णाराअणस्स	नारायणस्य	१४, २१	णेउरं	नूपुरं
णाराअण	नारायणा	१४	णेहा	निद्रा



प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
णेहो	स्नेहः	३८	तारेड	शक्नोति	४०२
णोभलिआ	नवफलिका	१६४	तालवेण्ठअं	तालवृत्तकं	२०७
णोमल्लिआ	नवमल्लिका	१६४	तास	तस्य	२४४
णोल्लइ	नुदति	३८६	तासुत्तो	तेभ्यः	२४४
णोहलो	दोहदः	८३, ६७	ताहि	तस्मात्	२४४
त्य	स्थ	३७१	तिण्हं	तीक्ष्णं	२०४
तइ	त्वया	२४५	तिण्णि	त्रयः	१४६
तइ	त्वयि	२६३	ती	ता	१७४
तइआ	तदा	२४६	तीण्हं	त्रयाणाम्	१५०
तइणा	तेन	२४३	तीरइ	शक्नोति	३८८
तइत्तो	त्वत्	२४६	तीरावेइ	शक्नोति	४०२
तए	त्वया	२४५	तीरेइ	शक्नोती	४०२
तए	त्वयि	२६३	तीसु	त्रिषु	१५०
तओ	तस्मात्	२४४	तीसुत्तो	त्रिभ्यः	१५०
तण्णइ	तनोति	३६३	तीहि	त्रिभिः	१५०
तण्णइ	तृणोति	३६३	तीहितो	त्रिभ्यः	१५०
तणुई	तन्वी	१८१	तुअइ	तुदति	३८८
तत्थ	तस्मिन्	२४६	तुए	त्वया	२४५
तत्तो	त्वत्	२४६	तुए	त्वयि	२६३
तत्तो	तस्मात्	२४४	तुअ	तव	२६१
तदो	तस्मात्	२४४	तुअभाणं	युष्माकम्	२६२
तम्मि	तस्मिन्	२४६	तुअं	युयम्,	२४२
तरइ	शक्नोति	३८८		युष्मान्	२४४
तरावेइ	शक्नोति	४०२	तुअंसे	युष्मासु	२६४
तलवेण्ठअं	तालवृत्तकं	२०७	तुअंसेहि	युष्माभिः	२४८
तवो	तपः	२८२	तुण्हओ	तूष्णीकः	१३२
तस	तस्य	२४५	तुण्हक्को	तूष्णीकः	१३२
तस्सि	तस्मिन्	२४६	तुअ	तव	२६१
तहि	तस्मिन्	२४६	तुअं	युष्माभिः	२४८
तहे	तदा	२४६	तुअह	तव	२६१
ता	तान्	२४३	तुअहाणं	युष्माकम्	२६२
ताइ	तानि	२८७	तुअहासुत्तो	युष्मत्	२६०
ताणं	तेषां	२४६	तुअहाहितो	युष्मत्	२६०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
तुम्हेसु	युष्मासु	२६४	वइव	देवं	१६
तुम्हेहि	युष्माभिः	२५८	वच्छिहिइ	दृष्टा	३६
तुमए	त्वया	२५५	वसमुहो	दशमुखः	१०
तुमए	त्वयि	२६२	वसरहो	दशरथः	१०
तुमम्मि	त्वयि	२६३	वहम्हो	दशमुखः	१०
तुमावु	त्वत्	२५६	वहरहो	दशरथः	१०
तुमावो	त्वत्	२५६	वाइ	वदाति	३७
तुमाहि	त्वत्	२५६	वाडिमं	वाडिमं	१६
तुमो	तव	२६१	वालिमं	वाडिमं	१६
तुमं	त्वाम्	२५३	वाहं	वातास्मि	३७
तुमं	त्वं	२५१	विअरो	देवरः	६
तुरिअं	त्वरितं	४१२	विअसो	दिवसः	१०
तुवरावेइ	त्वरयति	४०२	विअहो	दिवसः	१०
तुवरेइ	त्वरयति	४०२	विअा	द्यौः	२८
तुह	तव	२६१	दिठ्ठी	दृष्टिः	१७
तूरं	तूर्यं	१६६	दिण्णं	दत्तं	४१
तूसइ	तुष्यति	३८४	दिद्धी	दुहिता	२१
ते	ते	२४३	दिवइ	दीव्यति	३७
तेण	तेन	२४३	दिसा	दिक्	२८
तेरहो	त्रयोदशः	१०१	दुअत्तलं	दुकूलं	१८
तेलोवकं	त्रैलोक्यं	१६१	दुऊलं	दुकूलं	१८
तेसु	तेषु	२४६	दुओ	दुतः	१०
तेति	तेषां	२४६	दुविअओ	दुःखितः	१३
तेहि	तैः	२४३	दुअभइ	दुह्यते	४०
त्तं	त्वाम्	२५३	दुवे	द्वौ	१४
तं	तम्	२४३	दुहिअओ	दुःखितः	१३
तं	त्वं	२५१	दूमइ	द्वयते	३८
तंबो	स्तम्बः	१०६	दूमए	द्वयते	३८
तंबं	ताम्रं	२०८	दूमेइ	द्वयते	३८
	थ		दूमेए	द्वयते	३८
थाणू	स्थाणुः (हरवाचके)	१५१	दूसइ	दुष्यति	३८
थिअपइ	तृपति	३६१	देअरो	देवरः	६
	द		देववं	दैवं	१६
तणो	तनः	१०४	दोइ	द्यति	३८
			दोइ	द्यति	३८

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
दोसु	द्वयोः	१४८	पडिभवइ	प्रतिभवति	३३८
दोमुत्तो	द्वाभ्याम्	१४७	पडिसरो	प्रतिसरः	३३
दोहि	द्वाभ्याम्	१४७	पढमो	प्रथमः	६२
दोहितो	द्वाभ्याम्	१४७	पणहा	प्रश्नः	१५६
	ध		पणही	प्रश्नः	१७४
धणमोहरइ	धनमाहरति	३	पणहो	प्रश्नः	१२०
धणालो	धनवान्	३१४	पविषत्ती	प्रतिपत्ति	१७५
धणं	धनम्	२१२	पभवइ	प्रभवति	३३८
धसइ	धृष्णीति	३८८	पभवए	प्रभवति	३३८
धाइ	धावति, धावते	३५०	पभवेइ	प्रभवति	३३८
धाउ	धावतां, धावतु	३५०	पभवेए	प्रभवति	३३७
धाहिइ	धाविता	३५०	पमिल्लइ	प्रमीलति	३४६
धाहोअ	दधावे, दधाव	३५०	पमिल्लए	प्रमीलति	३४६
धीरं	धर्मं	१६६	पमिल्लावइ	प्रमीलयति	४०२
धुणइ	धुनाति	३६७	पमिल्लेइ	प्रमीलति,	३४६
धुणिज्जइ	धूयते	४०७		प्रमीलयति	४०२
धुणीअइ	धूयते	४०७	पमीलइ	प्रमीलति	३४६
धुत्तो	धूर्त्तः	११६	पमीलए	प्रमीलति	३४६
धुरा	धूः	२८४	पमीलेइ	प्रमीलति	३४६
धुव्वइ	धूयते	४०७	पमीलेए	प्रमीलति	३४६
	न		पमील्लेए	प्रमीलति	३४६
नई	नदी	१८१	परइ	पिपति	३७६
नाराअणं	नारायणं	१५	परइ	प्रियते	३६१
	प		परइ	पृणाति	३६७
प्रतिभवइ	प्रतिभवति	३३८	पल्हादो	प्रह्लादः	१०८
पअट्ठो	प्रकोष्ठः	७२	पल्लत्थं	पर्यस्तं	२०३
पई	पति	१५०	पल्लाणं	पर्याणं	२०३
पईअ	जघ्नी	३६२	पवट्ठो	प्रकोष्ठः	७२
पउरो	पौरः	७४	पाअइ	जिघ्रति	३६२
पच्छतो	पाश्चात्यः	१२५	पाइ	जिघ्रति	३६२
पच्छिमा	पश्चिमा	१६६	पाइअं	जघ्नी	३६२
पज्जुणो	प्रद्युम्नः	१२७	पाउत्तो	प्रावृत्	२८०
पट्ठणं	पत्तनं	२०४	पारावेइ	पारयति	४०२
पडइ	पतति	३५७	पारेइ	पारयति	४०२
पडाआ	पताका	१६७	पालइ	पद्यते	३८२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
पाहीअ	जघ्नो	१६२
पिअरौ	पितरः	२५५
पिअ	पिता	१५५
पिअो त्ति हसइ	प्रिय इति हसति	३१२
पिअको	पववः	३५
पिसइ	पिशति	३६१
पीअलं	पीतं	३१५
पीअं	पीतं	२१२, ३१५
पुट्टी	पृष्ठं	१८१
पुट्टं	पुष्टं	२१५
पुष्फं	पुष्पं	२०६
पुरिसो	पुरुषः	६४
पुलअइ	पश्यति	३६८
पुलईअ	ब्रह्म	३६८
पुसो	पुष्यः	१३२
पुहवी	पृथिवी	१७८
पूसइ	पुष्पाति	३६६
पूसो	पुष्यः	१३२
पेरंतं	पर्यन्तं	१६६
पोअखरो	पुष्करः	५५
पोअथओ	पुस्तकः	५७
पोत्तो	पौत्रः	७३
	फ	
फरसं	परषः	६३
फलावेइ	पाटयति	४०२
फलिअं	पटितं	४१२
फलिहा	परिखा	१६८
फलिहो	परिघः	६३
फलिहो	स्फटिकः	७८
फालेइ	पाटयति	४०२
फुट्टइ	स्फोटते	३४४
फुटइ	स्फटः	१२२
फदो	व	
अह्मा	ब्रह्मा	२४१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
बाफो	बाष्पः (ऊष्मा)	१२३
बारहो	द्वादशः	१०१
बाहो	बाष्पः (अश्रुणि)	१२३
बीहइ	बिभेति	३७६
बुजभइ	बुध्यते	३८२
बुडइ	मज्जति	३६०
बोरं	बवरं	१८६
बंधइ	बध्नाति	३६८
	भ	
भअप्पई	बृहस्पतिः	१४५
भइरवो	भैरवः	७१
भखावेइ	भक्षयति	४०२
भत्तारम्मि	भर्त्तरि	१५३
भत्तारस्स	भर्तुः	१५३
भत्तारा	भर्त्तारः	१५३
भत्ताराणं	भर्तृणां	१५३
भत्तारेण	भर्ता	१५३
भत्तारेणु	भर्तृषु	१५३
भत्तारेहिं	भर्तृभिः	१५३
भत्तारो	भर्ता	१५२
भत्तुणा	भर्त्रि	१५३
भत्तुणो	भर्तृन्	१५३
भत्तुस्स	भर्तुः	१५३
भत्तुसु	भर्तृषु	१५३
भत्तूओ	भर्त्तारः	१५३
भत्तो	भक्तः	३६
भरइ	स्मरति	३६४
भरइ	बिभेति	३७६
भरहो	भरतः	८१
भरावेइ	स्मारयति	४०२
भाअरो	भ्रातारः	१५५
भाइ	बिभेति	३७६
भाओ	भ्राता	१५५
भाखेइ	भक्षयति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भारेइ	स्मारयति	४०२	ममावो	मत्	२७३
भिसिणी	बिसिनी	१८०	ममाहि	मत्	२७३
भिंगारो	भृङ्गारो	४८	ममं	माम्	२६८
भिंगो	भृङ्गः	४८	मरइ	अग्रयते	३६१
भिडिवालो	भिन्दिपालः	१२८	मरइ	मृणाति	३६७
भिवइ	भिनक्ति	३६३	मरिसइ	मर्षति	३५४
भे	युष्माकम्	२६२	मलइ	मृद्नाति	३६६
भोग्रव्वं	भोक्तव्यं	४१५	मलिणं	मलिनं	२११
भोउं	भोक्तुं	४१५	मसाणं	इमशानं	२०१
भोऊण	भुक्त्वा	४१५	मह	मम	२७५
	म		महुअं	मधूकं	१८८
म्हि	अस्मि	३७२	महुं	मधु	२१७
म्हु	म्ह	३७२	माआ	माता	१८२
म्हो	स्मः	३७२	माइ	मिमीते	३७७
मइ	मयि	२७७	माणइत्तो	मानवान्	३१४
मइ	मया	२७१	माला	माला	१६३
मइत्तो	मत्	२७३	मालाइल्लो	मालावान्	३१४
मइलं	मलिनं	२११	मांसं	मांसं	६४
मऊरो	मयूरः	४२	मिअंको	मृगाङ्कः	४८
मऊहो	मयूखः	४२	मिच्छा	मिथ्या	१६६
मए	मया	२७१	मुइङ्गो	मृदङ्गः	२६
मए	मयि	२७७	मुच्छा	मूर्च्छा	१६६
मच्छिआ	मक्षिका	१६६	मुञ्जाअणो	मौञ्जायनः	७६
मज्झ	मम	२७५	मुणइ	जानाति	३६८
मज्झणो	मध्याह्न	१०७	मुणिज्जइ	ज्ञायते	४०८
मज्झणो	अस्माकम्	२७६	मुणीअइ	ज्ञायते	४०८
मणइ	मनोति	३६३	मुत्ती	सूतिः	१७६
मणंसिणि	मनस्विनीम्	१७७	मुढो	मृधः	३७
मणंसिणी	मनस्विनी	१७६	मुहलो	मुखरः	६०
मत्तो	मत्	२७३	मे	मया	२७०
मद्ध	मम	२७५	मे	मम	२७५
मम	मम	२७५	मोत्ता	मुक्ता	१६५
ममम्मि	मयि	२७७	मोरो	मयूरः	४२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
मंसू	इमश्रुः	२१७	राश्रासुत्तो	रागेभ्यः	२६
मंसं	मांसं	६	राश्रासुतो	राजभ्यः	२३७
	र		राश्राहि	रागात्	२६
रश्रणं	रत्नम्	२०८	राश्राहि	राज्ञः	२३७
रश्रणम्	रत्नमुट्	२८०	राश्राहितो	रागेभ्यः	२६
रच्छा	रक्षा	१६६	राश्राहितो	राजभ्यः	२३७
रत्तं	रक्तं	४१३	राइणा	राज्ञा	२३७
रण्णा	राज्ञा	२३६	राइणो	राज्ञः	२३७
रण्णाइं	अरण्यानि	१८५	राए	रागान्,	२६
रण्णेण	अरण्येन	१८५		रागाः,	२६
रण्णो	राज्ञः	२३७		रागे	२६
रण्णं	अरण्यं	१८४	राए	राज्ञः,	२३४
रमणिज्जा	रमणीया	१६८		राज्ञि	२३८
रमणिज्जो	रमणीयः	८६	राएण	रागेण	२६
रम्मइ	रम्यते	४०५	राएसु	रागेषु	२६
रमिज्जइ	रम्यते	४०५	राएसु	राजसु	२३८
रमीअइ	रम्यते	४०५	राएहिं	रागैः	२६
राश्रमि	रागे	२६	राएहि	राजभिः	२३७
राश्रम्मि	राज्ञि	२३८	राश्रो	रागः	२६
राश्रस्स	रागाय,		राश्रं	राजानं	२३३
	रागस्य	२६	राश्रं	रागम्	२६
राश्रा	राजा	२३०	रामो	रामः	१
राश्रा	राज्ञः	२३७	राहा	राधा	१६८
राश्रा	रागाः	२६	रिच्छो	ऋक्षः	११८
	रागान्	२६	रिणं	ऋणं	१६०
	रागात्	२६	रिद्धो	ऋद्धः	६५
राश्राणो	राज्ञः	२३४	रुक्खो	वृक्षः	६७
	राजानः	२३२	रुच्छं	रुद्धिष्यामि	३७५
राश्राणं	राज्ञां	२३८	रुद्धं	रुद्धं	४१३
राश्राणं	रागेभ्यः,	२६	रुणं	रुदितं	४१३
	रागाणाम्	२६	रुप्पिणी	रुक्मिणी	१८१
राश्राडु	रागात्	२६	रुम्भावेइ	रुन्धयति	४०२
राश्राडु	राज्ञः	२३७	रुम्भेइ	रुन्धयति	३०२
राश्रादो	रागात्	२६	रुम्भइ	रुणद्धि	३६२
राश्रादो	राज्ञः	२३७	रुवइ	रोदिति	३७५
			रुवावेइ	रोयवति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
रुवेइ	रोषयति	४०२	वच्चेइ	व्रजति	३४१
रुंधइ	रुणद्धि	३६२	वच्छो	वृक्ष,	६७
रुंधावेइ	रुन्धयति	४०२	वत्सः	वत्सः	१२५
रुंधेइ	रुन्धयति	४०२	वज्जइ	व्रजयति	३८०
रुसइ	रुषयति	३८५	वज्जावेइ	व्रासयति	४०२
रुसावेइ	रोषयति	४०२	वज्जेइ	व्रासयति	४०२
रुसेइ	रोषयति	४०२	वड्ढावेइ	वद्धयति	४०२
ल			वड्ढेइ	वद्धयति	४०२
लखावेइ	लक्षयति	४०२	वण्णइ	वर्णयति	३६३
लच्छी	लक्ष्मी	१८०	वत्ता	वार्त्ता	१६६
लट्ठी	यष्टिः	१७६	वत्तिआ	वत्तिका	१६६
लडालं	ललाटं	२१५	वदई	वदन्ती	४१६
लहुई	लघ्वी	१८१	वड्भइ	उह्यते	४०७
लाखेइ	लक्षयति	४०२	वम्महो	मन्मथः	६६
लिच्छा	लिप्सा	१६६	वरइ	वृणीते	३६८
लिब्भइ	लिह्यते	४०७	वरिसइ	वर्षति	३५४
लुद्धओ	लुब्धकः	५७	वरिसावेइ	वर्षयति	४०२
लुण्णइ	लुनाति	३६७	वरिसेइ	वर्षयति	४०२
लुण्णज्जइ	लूयते	४०७	वसही	वसतिः	१७५
लुण्णीअइ	लूयते	४०७	वसिट्ठो	वसिष्ठः	३७
लुव्वइ	लूयते	४०७	वहू	वधू	१८१
लोणइ	नुदति	३८६	वाअइ	स्लायति	३५६
लोद्धओ	लुब्धकः	५७	वाआ	वाक्	२८५
व			वाइ	स्लायति	३५६
वअइ	वक्ति	३७०	वारि	वारि	२१६
वइवेसो	वंदेशः	७१	वारीइ	वारीणि	२१६
वइवेहो	वंदेहः	७१	विअइ	विनक्ति	३६३
वइरं	वरं	१६१	विअड्ढी	वितर्दिः	१७६
वइसाहो	वंशाखः	७१	विअणा	वेदना	१६५
वइसिओ	वंशिकः	७१	विआरुल्लं	विकारवत्	३१४
वइसंपाअणो	वंशम्पायनः	७१	विइच्छा	विवर्त्ता	१६६
वच्चइ	व्रजति	३४१	विविकणइ	विक्रीणाति	३६७
वच्चए	व्रजति	३४१	विवकेइ	विक्रीणाति	३६७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
विज्जुलो	विद्युत्	३१५	वेण्हो	विदनः	१२१
विज्जु	विद्युत्	२८६, ३१५	वल्ली	वल्ली	१७७
विज्जुप्रो	वृश्चिकः	४८	वेवमाना	वेपमाना	१७४
विडवो	विटपः	८८	वेवमाणो	वेपमाना	१७४
वित्तिण्हो	वितृणः	४६	वो	युष्मान्	२५४
विस्सहो	विस्मयः	११६	वो	युष्माकम्	२६२
विलम्भतो	वलपन्	३११	वोच्छं	वक्ष्यामि	३७०
विसइ	प्रसते	३५२	वंकं	वक्रं	५
विस्सवो	विश्वपाः	१३७	वंचिओ	वञ्चितः	४
विसावेइ	प्रासयति	४०२	वंदं	वन्दं	२१३
विस्सामो	विश्रामः	१३२		स	
विसुरइ	खिनत्ति,	३६३	सअइ	सृजति	३६१
	खिदति	३६१	सअढो	शकटं	८६
विसेइ	प्रासयति	४०२	सइरं	स्वरं	१६१
विस्सो	विश्वः	१३६	सक्कइ	शक्नोति	३८७
विहलो	विह्वलः	१२६	सक्केइ	शक्नोति	४०२
विभलो	विह्वलः	१२६	सक्को	शक्रः	१०
वीरिअं	वीर्यं	२०२	सग्गमो	सवृगमः	३७
वीलइ	वीडयति	३८०	सच्चो	सत्था	१६६
वीलावेइ	वीडयति	४०२	सज्जइ	सृज्यते	३८३
वीलेइ	वीडयति	४०२	सठावेइ	शाठयति	४०२
वीसामो	विश्रामः	१३२	सडइ	शीयते	३५७
वुंदावणं	वृन्दावनं	१६०	सढा	सटा	१६८
वेप्रइ	वेद	३७०	सणइ	सनोति	३६३
वेअइ	वेत्ति	३७०	सण्हं	इलक्षणं	२०४
वेअणा	वेदना	१६५	सणेहो	स्नेहः	३८
वेअव्वं	वेत्तव्यम्	४१५	सत्तमी	सप्तमी	१८०
वेउं	वेत्तं	४१५	सत्थि	सक्थि	२१७
वेऊण	विदिस्वा	४१५	सद्दइ	श्रद्धधाति	३७८
वेच्छं	वेत्स्यामि	३७०	सफं	शफं	२०६
वेठइ	वेष्टते	३४२	सभरी	शफरी	१७६
वेठए	वेष्टते	३४२	सभलो	सफलः	६१
वेठेइ	वेष्टते	३४२	सभलं	सफलं	२००
वेठेए	वेष्टते	३४२	समिद्धी	समृद्धिः	१७४
वेण्ह	विष्णुः	१५०	समिद्धीआ,	समृद्ध्या	१४२



प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सरइ	सरति	३६५
सरइ	संसति	३७६
सरइ	शृणाति	३६०
सरावेइ	सारयति	४०२
सरिच्छो	सदृक्षः	११८
सरो	सरः	२८२
सलाहा	इलाघा	१७२
सवहो	शपथः	८५
सववज्जो	सर्वज्ञः	१०५
सववस्स	सर्वस्थ, सर्वस्मै	१३५
सववसि, सवव-		
म्मि, सववत्थ	सर्वस्मिन्	१३६
सववा	सर्वान्, सर्वस्मात्	१३५
सववाणं	सर्वेषाम्, सर्वेभ्यः	१३५
सववादु		
सववादो		
सववाहि	सर्वस्मात्	१३५
सववामुत्तो		
सववाहिंतो	सर्वेभ्यः	१३५
सववे	सर्वे	१३५
सववेण	सर्वेण	१३५
सववेसु	सर्वेषु	१३६
सववेहिं	सर्वैः	१३५
सववो	सर्वः	१३४
सववं	सर्वं	१३५
सहमाणा,		
सहमाणो	सहमाना	१७४
सहा	सभा	१६८
सहिणो	सखीन्	१५०
सहिं	सखायम्	१५०
सही	सखा	१५०
सहीओ,		
सहीणो	सखायः	१५०
साठेइ	शाठयति	४०२
सारेइ	सारयति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
साला	शाला	१७३
सि	असि	३७१
सिआलो	शृगालः	४६
सिड्ढी	सृष्टिः	१७५
सिडिलो	शिथिलः	६२
सिरी	श्रीः	१८१
सिविणो	स्वप्नः	३२
सि	तेषां	२४६
सिगारो	शृंगारः	४८
सिधवं	सन्धवं	१६४
सोभरो	सीकरः	७६
सोहो	सिंहः	५०
सुअइ	सुनोति	३८५
सुइवी	सुकृतिः	१७५
सुज्जो	सूयः	१५१, ११४
सुणइ	शृणोति	३६५
सुणइ	शृणोतु	३६७
सुणावेइ	श्रावयति	४०२
सुणिअं	शुश्राव	३६५
सुणिज्जइ	श्रूयते	४०६
सुणीअ	शुश्राव	३६५
सुणीअइ	श्रूयते	४०६
सुणेइ	श्रावयति	४०२
सुणमु	शृणोमि	३६७
सुणमो	शृणमः	३६७
सुणसु	शृणु	३६
सुणह	शृणुत	३६७
सुणंतु	शृणवन्तु	३६७
सुप्पणहा	सूर्यनखा	१७४
सुप्पणही		
सुमरइ	स्मरति	३६४
सुमरावेइ	स्मारयति	४०२
सुमरेइ		
सुव्वइ	श्रूयते	४०६
सुहं	सुखं	२००

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सुंडो	शौण्डः	७६	सेव्वा	सेवा	१७०
सुवेरं	सौच्यं	१६६	मेवा		
सूइ	सूयते	३८०	सो	सः	२४३
सूरो	सूर्यः	११४	सोअमल्लं	सौकुमार्यं	२०३
सूसइ	शुष्यति	३८४	सोइ	इयति	८१
सूसावेइ	शुष्यति	४०२	सोच्छइ	श्रोता	३६६
सूसेइ			सोच्छए	"	"
से	तस्य	२४५	सोच्छहिइ	"	"
सेजजस	शय्यायाः	१६२	सोच्छहिए	"	"
सेजजा	शय्याः	१५७	सोच्छिइ	"	"
	शय्यायाः	१६१	सोच्छिए	"	"
सेजजाइ	शय्यायाः	१६२	सोच्छिहिइ	"	"
सेजजाइ	शय्याया	१६१	सोच्छिहिए	"	"
सेजजाइ	शय्यायाम्	१६२	सोच्छेइ	"	"
सेजजाए	शय्याया	१६१	सोच्छेए	"	"
	शय्यायाः	१६२	सोच्छेहिइ	"	"
	शय्यायाम्	१६२	सोच्छेहिए	"	"
सेजजाउ	शय्याः	१५७	सोच्छेहिहि	श्रोतारः	३६६
		१५६	सोच्छंति	"	"
	शय्यायाः	१६२	सोच्छिहिहि	"	"
सेजजाओ	शय्याः	१५७	सोच्छिहि	"	"
		१५६	सोच्छेति	"	"
	शय्यायाः	१६२	सोच्छसि	श्रोतासि	३६६
सेजजाणं	शय्यानाम्	१६२	सोच्छसे	"	"
सेजजाडु			सोच्छहिसि	"	"
सेजजादो	शय्यायाः	१६१	सोच्छहिसे	"	"
सेजजाहि			सोच्छिसि	"	"
सेजजासु	शय्यासु	१६२	सोच्छसे	"	"
सेजजासुत्तो	शय्याभ्यः	११६	सोच्छिहिसि	"	"
सेजजाहिता			सोच्छिहिसे	"	"
सेजजाहि	शय्याभिः	१६१	सोच्छेसि	"	"
सेजजं	शय्याम्	१५८	सोच्छेसे	"	"
सेज्या	शय्या	१५६	सोच्छेहिसि	"	"
सेत्तं	शैत्यं	१६१	सोच्छेहिसे	"	"
सेलो	शैलः	६९	सोच्छइत्थ	श्रोत्यथ ३६६, ३६७	(बहवचने)

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सोच्छह	श्रोव्यथ	२६७
सोच्छहिह	"	"
सोच्छिह	"	"
सोच्छिहिह	"	"
सोच्छेह	"	"
सोच्छेहिह	"	"
सोच्छहित्थ	श्रोव्यथ (बहुवचने)	२६७
सोच्छहिह	"	"
सोच्छित्थ	"	"
सोच्छिह	"	"
सोच्छिहित्थ	"	"
सोच्छिहिह	"	"
सोच्छेह	"	"
सोच्छेहित्थ	"	"
सोच्छेहिह	"	"
सोच्छिहिह	श्रोव्यति	२६७
इत्यादि		
सोच्छमि	श्रोतास्मि	३३७
सोच्छस्सामि	"	"
सोच्छस्सं	"	"
सोच्छहामि	"	"
सोच्छहिमि	"	"
सोच्छामि	"	"
सोच्छहामि	"	"
सोच्छिमि	"	"
सोच्छस्सामि	"	"
सोच्छहामि	"	"
सोच्छेमि	"	"
सोच्छस्सामि	"	"
सोच्छस्सं	"	"
सोच्छहामि	"	"
सोच्छेमि	"	"
सोच्छं	"	"
सोच्छमो	श्रोतास्मः	३६७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सोच्छस्सामो	श्रोतास्मः	३६७
सोच्छहामो	"	"
सोच्छहित्था	"	"
सोच्छहिमो	"	"
सोच्छामो	"	"
सोच्छहामो	"	"
सोच्छहित्था	"	"
सोच्छहिमो	"	"
सोच्छहित्सा	"	"
सोच्छिमो	"	"
सोच्छस्सामो	"	"
सोच्छहामो	"	"
सोच्छहित्था	"	"
सोच्छहिमो	"	"
सोच्छहित्था	"	"
सोच्छेमो	"	"
सोच्छस्सामो	"	"
सोच्छहामो	"	"
सोच्छहित्था	"	"
सोच्छहिमो	"	"
सोच्छहित्सा	"	"
सोणहा	स्नुषा	१६६
सोरिअं	शौर्यं	२०२
सोहा	शोभा	१६८
संका	शङ्का	७
संङ्का		
संकंतो	संक्रान्तः	१३०
संजदो	संयतः	६२
संभा	संध्या	१६६
संवत्तो	संवर्त्तः	११६
संविहलइ	संवेष्टते	३४३
संबुदी	संवृत्तिः	१७५
	ह	
हवो	हतः	६३
हम्मइ	हन्ति	३७०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हरिसइ	हर्षति	३५४	हुवमि	भवामि	३६
हलद्रा	हरिद्रा	१६५	हुवम्	बभूव	३३
हलद्दा(द्रा)	हरिद्रा	१७४		भवामः	३६
हलद्दा	हरिद्रा	१६५		भवावः	३२
हलद्दो	हरिद्रा	१७४		भविष्यामि	३३
हलिओ	हालिकः	४५		भवानि	३३
हविधानं	बभूव	३३२	हुवमो	भविष्यामः	३३
हसइ	हस्यते	४०५		भवाम	३३
हसिज्जइ	हस्यते	४०३		भवामः	३६
हसिअइ	हस्यते	४०५		स्वावः	३६
हलिओ	हालिकः	४५		बभूविस	३३
हिअयं	हृदयं	१६०	हुवस्साम	भविष्यामः	३३
हिथं	वस्तं	४१३	हुवस्सामि	भविष्यामि	३३६-३३
हिरी	ह्रीः	१८१	हुवस्सामु	भविष्यामः	३३
हीरइ	ह्रियते	४०६	हुवस्सामो	भविष्यामः	३३
हुअं	भूतं	४१०	हुवसि	भवसि	३६
हुणइ	जुहोति	३७५	हुवसु	बभूविथ	३३
हुणिज्जइ	ह्रयते	४०७		भवितासि	३३
हुणीअइ	ह्रयते	४०७		भव	३३
हुवइ	ह्रयते	४०७	हुवसे	भवसि	३६
हुववंतो	भवन्	४१८	हुवस्सं	भविष्यामि	३३
हुवइ	भवति	३१६	हुवह	बभूव	३३
हुवइत्थ	भविष्यथ	३३७		भवथः	३३
हुवइत्था	भवथ, भवथः	३२४		भावथा	३३
हुवउ	भवतु	३३७		भवत	३३
	बभूव	३३१		भवितास्थ	३३
हुवए	भवति	३१६	हुवहाम	भविष्यामः	३३
हुवज्ज	भवति	३२२	हुवहामि	भविष्यामि	३३
	भवन्ति	३२३			३३
	भवतः	३२३	हुवहामु	भविष्यामः	३३
हुवज्जा	भवति	३२२	हुवहामो	भविष्यामः	३३
हुवज्जा	भवन्ति	३२३	हुवहिइ	भविता	३३
	भवतः	३२३	हुवहिए	भविष्यति	३३
हुवम	भवामः	३२७	हुवहित्था	भविष्यामः	३३
		३३१	भवहिथ	भविष्यामः	३३

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवहिम	भविष्यामः	३३७	हुवाहिमि	भविष्यामि	३३६
हुवहिमि	भविष्यामि	३३६			३३७
		३३७	हुवाहिमु	भविष्याम	३३७
हुवहिमु	भविष्यामः	३३७	हुवाहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवहिमो	भविष्यामः	३३७	हुवाहिस्ता	भवितास्मः	३३७
हुवहिय	भविष्यति	३३७		भविष्यामः	३३७
हुवहिस्ता	भवितास्मः	३३७	हुविश्रं	श्रभूत्	३३७
	भविष्यामः			बभूव	३२६
हुवहिसि	भविष्यसि	३३७	हुविज्जद्	भूयते	४०३
	भवितासि	३३४	हुविस्था	भविष्यथ	३३७
हुवहिसे	भविष्यसि	३३७	हुविस्था	भवथाः, भवथ	३२४
	भवितासि	३३४	हुविम	भवामः, भवावः	३२७
हुवहिंति	भवितारः	३३४	हुविमु		
	भविष्यन्ति	३३७	हुविमो	भविष्यामः भवाम ३३७	
हुवहिह	भविष्यथ	३३७		भवामः, भवावः ३२७	
	भविताथ	३३४	हुविस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवाम	भवामः	३२७	हुविस्सामु	भविष्यामः	३३७
	भवावः		हुविस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुवामि	भवामि	३२६	हुविहाम	भविष्यामः	३३७
हुवामु	भविष्यामि	३३६	हुविहामु	भविष्यामः	३३७
	भवानि	३३७	हुविहामो	भविष्यामः	३३७
	भवामः			भविष्याम	३३७
	भवावः	३२७	हुविहित्था	भविष्यामः	३३७
हुवामो	भवामः	३२६		भविष्याम	३३७
	भवावः	३२७	हुविहित्ति	भवितारः	३३४
	भवाम	३२७	हुविहिम	भविष्यामः	३३७
	भविष्यामः	३३७	हुविहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवावेइ	भावयति	४०२	हुविहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवाहाम	भविष्यामः	३३७		भविष्याम	३३७
हुवाहामि	भविष्यामि	३३७	हुविहिस्ता	भवितास्मः	३३७
		३३६		भविष्यामः	३३७
हुवाहामु	भविष्यामः	३३७	हुवीश्र	बभूव	३२६
हुवाहामो	भविष्यामः	३३७		श्रभूत्	३३७
हुवाहिस्ता	भवितास्मः	३३७			

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भावयति	४०२		भवितास्थ	३३४
हुवेउ	भवतु	३३७	हुवेहाम	भविष्यामः	३३७
	बभूव	३३१	हुवेहामि	भविष्यामि	३३६
हुवेए	भवति	३१६			३३७
हुवेज्ज	भवति	३२२	हुवेहामु	भविष्यामः	३३७
हुवेज्जा	भवन्ति	३२३	हुवेहामो	भविष्यामः	३३७
	भवतः	३२३	हुवेहिइ	भविता	३३३
	भवति	३२२		भविष्यति	३३७
हुवेमः	भवामः	३२७	हुवेहिए	भविष्यति	३३७
	भवावः	३२७	हुवेहिस्था	भविष्याम	३३७
हुवेमि	भवामि	३२६	हुवेहिम	भविष्यामः	३३७
हुवेमु	बभूव	३३२	हुवेहिमि	भविष्यामि	३३६
	भवामः	३२७			३३७
	भवावः	३२७	हुवेहिमु	भविष्यामः	३३७
	भवानि	३३७	हुवेहिमो	भविष्यामः	३३७
	भविष्यामि	३३६	हुवेहिस्सा	भवितास्मः	३३७
हुवेमो	भविष्यामः	३३७		भविष्यामः	३३७
	भवाम	३३७	हुवेहिसि	भविष्यसि	३३७
	भवामः, भवावः	३२७		भवितासि	३३४
	बभूविस	३३२	हुवेहिसे	भवितासि	३३४
हुवेस्साम	भविष्यामः	३३७		भविष्यसि	३३७
हुवेस्सामि	भविष्यामि	३३६	हुवेहिह	भविष्यथ	३३७
		३३७		भवितास्थ	३३४
हुवेस्सामु	भविष्यामः	३३७	हुवेहिहि	भविष्यन्ति	३३७
हुवेःसामो	भविष्यामः	३३७		भवितारः	३३४
हुवेसि	भवति	३२४	हुवेति	भवन्ति, भवतः	३२३
हुवेसु	भवितासि	३३४	हुवेतु	भवन्तु	३३७
	बभूविथ	३३२		बभूवुः	३३२
	भव	३३७		भवितारः	३३४
हुवेसे	भवसि	३२४	हुवन्ति	भवतः, भवन्ति	३२३
हुवेस्सं	भविष्यामि	३३७	हुवन्तु	भवितारः	३२४
		३३६		भवन्तु	३३७
हुवेह	बभूव	३३२		बभूवुः	३३२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भत्तारः	हे भर्तः	१५३	होस्साम	भविष्यामः	३३७
मणसिणि	हे मनस्विनि	१७७	होस्सामि	भविष्यामि	३३६
रण	हे अरण्य	१८५			३३७
राअं	हे राजन् !	२३३	होस्सामु	भविष्यामः	३३७
राअ			होस्सामो	भविष्यामः	३३७
सेज्जे	हे शय्ये	१६२	होसि	भवसि	३२४
ओआवेइ	भावयति	४०२	होसु	बभूविथ	३३२
इ	भवति	३१६		भवितासि	३३४
	बभूव	३३२		भव	३३७
ओइज्जइ	भूयते	४०३	होस्सं	भविष्यामि	३३७
ओइत्था	भवथः, भवथ	३२४			३३६
ओइअइ	भूयते	४०३	होह	भवथ, भवथः	३३४
उ	बभूव	३३१		भवितास्थः	३३४
	भवतु	३३७		भवत	३३७
ओएइ	भावयति	४०२	होहाम	भविष्यामः	३३७
ओज्ज	भवन्ति, भवतः	३२३	होहामि	भविष्यामि	३३६
ओज्जइ	भवति	३२१			३३७
ओज्जा	भवन्ति, भवतः	३२३	होहामु	भविष्यामः	३३७
ओज्जाइ	भवति	३२१	होहामो	भविष्यामः	३३७
ओज्जति	भवन्ति, भवतः	३२३	होहिइ	भविता	३३३
ओज्जाति				भविष्यति	३३७
ओज्जेइ	भवति	३२१	होहित्थ	भविष्यत	३३७
ओज्जेति	भवन्ति, भवतः	३२३	होहित्था	भविष्यामः	३३७
ओम	भवावः, भवामः	३२६	होहिम	भविष्यामः	३३७
मि	भवामि	३२६	होहिमि	भविष्यामि	३३६
ओमु	भविष्यामि	३३६			३३७
	भवानि	३३७	होहिमु	भविष्यामः	३३७
	भवावः	३२७	होहिमो	भविष्यामः	३३७
	भवामः	३२७	होहिस्सा	भविष्यामः	३३७
	बभूव	३३२		भवितास्मः	३३७
ओमो	भवावः	३२७	होहिसि	भवितासि	३३४
	भवामः	३२७		भविष्यसि	३३७
	बभूविम	३३२	होहिह	भविष्यत	३३७
	भवाम	३३७	होहिहा	भवितास्थ	३३४
	भविष्यामः	३३७	होहिति	भवितारः	३३४
				भविष्यन्ति	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
होहीअ	बभूव	३३०		भावितारः
	अभूत्	३३७		भावस्तु
होति	भवन्ति	३२३	हं	अहम्
होतु	बभूवुः	३३२		

सान्भवं प्राकृतानन्दे शब्दानामनुसूचिका । मुनीनां प्रीतये सेयं जितविजयसु  
 वृगिन्दुनभान्नेत्राब्दे मासे भाद्रपदे शुभे । कृष्णवदस्यां गुरौ वारे कृता गोप







राजस्थान सरकार

## राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

( Rajasthan Oriental Research Institute )

जोधपुर



## सूची-पत्र



प्रधान सम्पादक — पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

अक्टूबर १९६३ ई०

## राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

\*\*\*\*\*

### प्रकाशित ग्रन्थ

#### १. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक — मोमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य-६
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक-स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर । मूल्य-१
३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदनओष्ठा-प्रणीत, भाग १, सम्पादक-म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य-१०
४. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओष्ठा प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक श्रीप्रद्युम्न ओष्ठा । मूल्य-१०
५. तर्कसंग्रह, अलंभट्टकृत, सम्पादक-डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य-१०
६. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१०
७. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक-स्व.पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-१०
८. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१०
९. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१०
१०. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१०
११. शृङ्गारहारवली, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट् । मूल्य-१०
१२. राजविनोदमहाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-१०
१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक-पं० श्रीकेशवराम काश शास्त्री । मूल्य-१०
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक-प्रो. रसिकलाल लाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१०
१५. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, तत्त्वाचार्य, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-१०
१६. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेद साहित्याचार्य । मूल्य-१०
१७. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्हीं कविवर की अपर संस्कृत कृति श्री लीलामृत सहित, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य-१०
१८. ईश्वरविलासमहाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्रीगोपालनाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । स्व. पी. के. गोई द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तावना सहित । मूल्य-१०
१९. रसदीधिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, । मूल्य-१०
२०. पद्मसुतावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्टश्रीमथर

२२. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग २ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०-श्रीरसिकलाल खो० पारीख, मूल्य-८.२५
२३. वस्तुस्थानकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०-डॉ० प्रियबाला साह। मूल्य-४.००
२४. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य-४.००
२५. श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित। सम्पा०-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य-३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-संग्रह, ठक्कुर फेरु विरचित, संशोधक-पद्मश्री मुनि जिन-विजयजी, पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य-६.२५
२७. स्वयंभूछन्द, महाकवि स्वयंभूकृत, सम्पा० प्रो० एच. डी. वेलणकर। विस्तृत भूमिका (अंग्रेजी में) एवं परिशिष्टादि सहित मूल्य-७.७५
२८. वृत्तजातिसमुच्चय कवि विरहाङ्कुरचित; ,, ,, ,, मूल्य-५.२५
२९. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य-६.००
३०. कर्णामृतप्रपा, भट्टसोमेश्वरकृत सम्पा०-पद्मश्री मुनि जिनविजयजी। मूल्य-२.२५
३१. त्रिपुराभारती लघुस्तव, लघुपण्डितविरचित, सम्पा० ,, मूल्य-३.२५
३२. पदार्थरत्नसञ्ज्ञा, पं० कृष्णमिश्रविरचिता, सम्पा० ,, मूल्य-३.७५
३३. वृत्तमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; सं० पं० भट्टश्रीमथुरानाथ शास्त्री। मूल्य-३.७५
३४. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०-डॉ० दशरथ शर्मा। मूल्य-२.२५
३५. प्राकृतानन्द, रघुनाथकवि-रचित, सम्पा०-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी। मूल्य-४.२५

## २. राजस्थानी और हिन्दी

३६. कान्हुडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०-प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य-१२.२५
३७. क्यामला-रोसा, कविवर जान-रचित, सम्पा०-डॉ० दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहुटा। मूल्य-४.७५
३८. लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०-श्रीमहतावचन्द खारैड़। मूल्य-३.७५
३९. बांकीदासरी ख्यात, कविराजा बांकीदासरचित, सम्पा०-श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए., विद्यामहोदधि। मूल्य-५.५०
४०. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पा०-श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य-२.२५
४१. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पा०-श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न। मूल्य-२.७५
४२. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०-श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूडावत। मूल्य-२.००
४३. जगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य-१.७५
४४. भगतमाळ, ब्रह्मादासजी चारण कृत, सम्पा०-श्री उदैराजजी उज्जवल। मूल्य-१.७५
४५. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १। मूल्य-७.५०
४६. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २। मूल्य-१२.००
४७. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसीकृत, सम्पा०-श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य-८.५०
४८. ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, ,, मूल्य-६.५०
४९. रघुवरजसप्रकाश, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०-श्री सीताराम लाळस। मूल्य-८.२५
५०. राजस्थानी राजसिंह राज मन्त्रालय भाग १ सं० राजस्थानी मन्त्रि श्रीजिनविजय। मूल्य-४.५०

मूल्य-६.२५

मूल्य-८.००

मूल्य-६.७५

मूल्य-४.००

सूच्य-१९००

मूल्य-५ ५८

सूचि-६.२२  
समाप्त

मूल्य-३.००

मूल्य—३.००

“

संस्कृत

२. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०—पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय ।

४. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०-श्री बी. डी. दोशी ।

६. एकाक्षर नाममाला—सम्पा०—मुनि श्रीरमणिकविजय ।

८. हमीरसहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय ।

१०. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०-डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।

राजस्थानी और हिन्दी

१२. मुंहता नैणसोरी ख्यात, भाग ३, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०—श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया ।

१४. राठौडांरी वंशावली, सम्पा०-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय ।

१६. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संक

१७. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक-श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।

१६. मन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य, डॉ० व्रजलाल वर्मा ।

२१. बुद्धिविलास, वखतराम शाहकृत, सम्पा०-श्रीपद्मधर पाठक, एम. ए.

**अंग्रेजी**

23. **Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts Part I, R.O.RI.**  
(Jodhpur Collection), ed., by Padamashree Jinvijaya Muni.  
Puratattvacharya.

विशेष—पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।